श्रीबुद्धिसागरसूरिग्रंथमाला ग्रन्थाङ्क न ६२ मणको

शास्त्रविशारदयोगनिष्ठ श्रीमद् जैनाचार्यबुद्धिसागरसूरि
विरचित.

भजनपदसंग्रह भाग १० मो.

वेरावल निवासी सुश्रावक. कालीदासगाह अमरशीभाइ
हा. श्रावीका नदकोर वहेननी सहायथी.

छपावी प्रसिद्ध करनार,
श्री अध्यात्मज्ञानप्रसारकमंडल.
हा. वकील मोहनलाल हिमचदभाइ.
मु पादरा.

अमदावाद—शाहपुर नवी पोळमा आवेला श्री मज्ञादि
सार्थ मुद्रालयमा पटेल डाह्याभाइ दलपतरामे छाप्यु

प्रथमा आवृत्ति प्रत १०००
वीर स २४४९ सन १९२३
विक्रम स ११७९

किंमत. रु. १—०—०

ग्रंथ मळवानुं ठेकाणुं.

वकील. मोहनलाल हिमचंदभाइ.

मु. पादरा (गुजरात)

गांधी. आत्माराम खेमचंद.

साणंद.

निवेदन.

अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडळ तरफथी श्रीमद् बुद्धिसागर ग्रंथ मालाना बासठमा मणका तरीके भजनपद संग्रह भा. १० के जेना रचयिता शास्त्रविशारद जैनाचार्यश्रीमद् बुद्धिसागरजी सूरीश्वरजी छे. ते स. १९७९ नीं सालमा बहार पाडवामा आवे छे तेनी पडतर किंमत रु. १-०-० राखवामा आवेल छे. आचार्यश्रीना भजनो जैन जैनेतर समाजमा प्रेमथी गवाय छे. तेओश्रीना भजनो सर्व लोकोने आनंदथी रसपूर्वक गावानु मन थाय तेवा खास विचारणीय छे. तेमना रचेला भजनो अध्यात्मज्ञानरसथी भरपूर छे. मंडळे अत्यार-सुधी भजनपदसंग्रहना भाग ९ बहार पाडेल छे ते आ ग्रंथ वेरावळ निवासी सुश्रावक कालीदासभाइ अमरशीभाइ हा श्राविका बहन नंदकोरबेने मेहमाणामा गुरुराजश्री बिराजता हता त्यारे रु. १२००) मदत आपवानी पोतानी उत्कंठा जणाववाथी आ ग्रंथ तेमनी मदतनी सहायथी छपाववामा आवेल छे, अने आपेली सहायमाथी जे फंड वधशे ते अन्य पुस्तक छपाववामा लेवामा आवशे. मंडळ पासे उत्तम फंड नथी पण ते धनवंतोनी सहायथी पुस्तको प्रसिद्ध करे छे मंडळ तरफथी सस्ती किंमते पुस्तको वेचाय छे, ते जनसमाज सारी रीते जाणे छे. आ ग्रंथ छपाववा माटे पोताना धननो सदुपयोग-करनार बाइने (वर्तमानमा मात्र बाईजीने) मंडल तरफथी अंत:करण पूर्वक धन्यवाद आपवामा आवे छे अने भविष्यमा जेओ अन्य पुस्तको छपा-ववामा सहाय करशे, तेओनो उपकार मानवामा आवशे जेओए पुस्तक छपाववामा मदद करी छे, तेओए आपेला पैसानो सारो मदिन

तेओना नामोने अक्षरदेहथी अमर करवामां आवे छे. आ ग्रंथमां गुरुश्रीए जे जे वखते जेवी जेवी भावनाओ प्रकटी तेवी भावनाओथी तेमणे पदो रच्यां छे.

संवत १९७९ श्रावण पूर्णिमा. | सद्‌गुरु चरणोपासक लि. आत्माराम खेमचंद मु. साणंद श्री अध्यात्म ज्ञानप्रसारक मंडळ तरफथी



भजनसंग्रह भाग १० मो.

अशुद्धिशुद्धि पत्रकम्.

पत्र.	लीटी	अशुद्धि.	शुद्धि.
७	६	पाया-	पाया.
१२	१६	बुंदनो.	बुदना
१५	१	सतो.	संतो
१५	४	भखी.	भूखी
१६	१	आतम करे.	आतम क्या कर
२०	२०	भारड	भारद.
२१	१८	लयताना.	लयतानी.
२९	२४	आवत्रा-	आववा.
४७	४	इच्छे.	इच्छों.
४८	३	निरजन	निरजन.
५२	७	नहीं	व.
५६	१	कमनी-	कर्मनी.
५६	५	नारनी	पारनी.
५८	१७	जिमना	जिमना
६२	२२	पाने	मापो
६५	२१	दुर्गुण व्यसनोमें-	दुर्गुण दुर्व्यसनोमें।
६७	१६	आतम दुनियाकु.	आतम सब दुनियाकु
६९	११	भाक्त-	भक्ति
७२	३	नि–चरशो-	निचरशो.
७७	१६	मन्देशो.	सन्देशो कहेशो
८०	१९	दगुण	दुर्गुण
९६	५	पाया	पापा

पत्र.	लीटी.	अशुद्धि.	शुद्धि.
९६	१०	नामरूपस	नामरूपसें
१००	४	मख्याता	प्रख्याता
१०७	२०	आपकुं आना	आप जगाना
११४	२१	एधर्म	धर्म ए
११६	१३	हकुं	हमकुं
१२२	४	जीवंतां	जीवतां
१२७	५	कमवशे	कर्मवशे
१४९	१२	भक्तज जेह	भक्तज तेह
१५०	८	संध	संघ
१५०	१५	धर्म	धर्म
१५३	१३	वेश	वेश
१५४	१०	मुंज	मुज
१५६	७	जिते	जीते



विषयानुक्रमणिका.

विषयांक.	विषय.	पत्र.



ॐ अर्हं महावीरायनमः

भजनसंग्रहदशमोभाग.

वक्तव्य ॥

प्रभुसर्वज्ञ महावीरदेवनी कृपाथी सं. १९७८ ना जेठ सुदि त्रयोदशे मेसाणाना संघना आग्रहे मेसाणामां प्रवेश थयो. संघना आग्रहथी त्यां चातुर्मास रहेवानुं थयुं, त्यां घणी निवृत्ति मळी. त्यां जेठ मासथी आरंभी आसो मास सुधीमां जे जे वखते जेवो जेवी भावनाओ प्रगटी ते ते वखते तेवां भजन पद्यवगेरेनी रचना थइ छे. मुख्यभागे आध्यात्मिक पद्यो छे अने गौणताए नीति सदुपदेश आदिनां भजनो छे. सातनयोनी अपेक्षाए सम्यग्दृष्टि मनुष्यो भजनो वगेरेनो सवळो अर्थ ग्रहण करे छे. सम्यग्दृष्टिमनुष्योने मिथ्या व शास्त्रोपण सवळां परिणमे छे अने मिथ्यादृष्टिवाळाओने सम्यक्त्वकारक शास्त्रोपण अवळां परिणमे छे एम नंदि सूत्रमां दर्शाव्युं छे ते प्रमाणे जे सम्यग्ज्ञानीओ हशे तथा सम्यग्ज्ञानीओना बोधप्रमाणे वर्तनारा हशे तेओने भजनसंग्रहदशमो भाग पण अनेकनयोनी सापेक्षदृष्टिबळे सवळाअर्थरूपे परिणमीने आत्मानी शुद्धि करनार थशे अने प्रतिपक्षी दुर्जन मिथ्यादृष्टिजीवोने तो सवळो अर्थ पण अवळारूपे परिणमीने मिथ्यामोहनी वृद्धि करनार थशे. दुर्जनो तो पयमांथी पण पूरा काढनारा होय छे तेओ तो भजन पदोना अर्थोने पोतानी मतिथी खेंचीने अवळाअर्थतरीके पोते माने छे अने लोकोने पण तेवी रीते समजावी भ्रांतिमां नाखे छे. बाळजीवोने विद्वानो जेम दोरवे तेम दोरवाय छे तेथी तेओने सम्यग् ज्ञानीओनो समागम थाय छे तो ते तरफ वळे छे अने विद्वानो के जे मिथ्या दृष्टिवाळा तथा प्रतिपक्षी दुर्जनोनो समागम थाय छे तो ते तरफ वळे छे अने तेथी तेओ परतंत्र बने छे. सर्व प्रकारना ज्ञान-

मां अध्यात्मज्ञान श्रेष्ठ छे. अध्यात्म ज्ञानथी आत्मानी पूर्ण शुद्धि थाय छे. श्रीमद् आनंदघनजी (आतमज्ञानी श्रमणकहावे, बीजतो द्रव्यलिंगीरे) एम कथी आत्मज्ञानीने श्रमण कथे छे अने अन्योने द्रव्यलिंगी साधुओ तरीके जणावे छे एकांत ज्ञानवादी तथा एकांतक्रियावादी न बनवु जोइए अध्यात्मज्ञानना भजनोमा-पदोमा निश्चयनयनी दृष्टि मुख्य होय छे ते ध्यानमा राखीने वाचकोए व्यवहार नयकथितधर्मथी पराङ्मुख न थवु जोइए. ज्ञानमा शुष्कतानो दोप प्रगटवानो भय रहे छे अने एकांतक्रियामा जडतादोषनो संभव रहे छे ते बेथी मुक्त थवाय तेवी रीते भजन पदोना ज्ञानथी आत्म हितार्थ प्रवृत्ति करवी जोइए. पद भजनोमा मोटाभागे ज्ञानीओना हृदयज्ञानरसनो उभरो नीकळे छे एम अनुभव आवे छे, अध्यात्म ज्ञानानुभवीओने अध्यात्मज्ञानना भजनो-पदो रुचे छे. योगानुभवीओने योगना भजनो पदो रुचे छे. भक्तोने प्रभुभक्तिना पदो रुचे छे वैरागीओने वैराग्यना भजनो पदो रुचे छे. जेवा जेओ अधिकारी होय छे तेओने तेवुं रुचे छे तेमा दलील दवानी कइ जरुर पडती नथी. जे मनुष्योमा जेवुं होय छे तेवु वाणीद्वारा बहार प्रकाशे छे.

साबु अने जलथी जेम वस्त्रनी शुद्धि तुर्त थाय छे तेम अध्यात्म ज्ञान ध्यान योगमा रमणता करवाथी आत्मानी शुद्धि थाय छे अने आत्मानु स्वाभाविकज्ञान स्फुरायमान थाय छे. आत्मज्ञानध्यान समाधिमा लयलीन रहेवाथी मस्तदशा प्रगटे छे अने तेथी सर्व प्रकारना बाह्यांतर बंधनोथी आत्मा स्वतंत्र बालकवत् निर्दोषी शुद्ध मग्न बने छे, पश्चात् तेने दुनियानी परवाह रहती नथी जेणे अध्यात्म ज्ञानथी एकवार आत्मानी आनंदमस्तदशा अनुभवी छे तेने अध्यात्मज्ञानरसनी खुमारीनो अनुभव आवे छे अने ते मोक्षमार्ग प्रति गमन करे छे. अध्यात्मज्ञान तेज आत्मानी शुद्ध क्रिया छे अने ते सर्व

आगम वेदशिरोमणि पराविद्या वेदान्तज्ञान कहेवाय छे. सुफीओनी ते प्रेममस्तीनी शराब छे (अर्थात् मीठी आनंददायक वस्तु छे) दुनियामां सर्व दर्शनोमां छेल्लामां छेल्ली अध्यात्मज्ञानविद्या छे, तेनो पार पामे छे ते तरी जाय छे. दुधनुं सार जेम घृत छे तेम ज्ञाननुं सार अध्यात्मज्ञान छे तेने जे पचवे छे, तेमां जे लयलीन थाय छे, तेना हृदयमांथी अध्यात्मज्ञाननां भजनोनो प्रवाह नीकळे छे. अध्यात्मज्ञानी गीतार्थोना समागममां दररोज घणाकाल पर्यंत आववाथी आत्मज्ञाननो अनुभव आवे छे. अध्यात्मज्ञानीगीतार्थगुरुने माथेकरी गुरुनी सेवा भक्तिमां जेओ समर्पाइ जाय छे अने पोताना नाम रूपने भूली जे गुरुमां लयलीन बने छे अने गुरुनी आज्ञाओने अमलमा मूके छे तेने वारवर्षे आपोआप हृदयमां अध्यात्मज्ञाननो प्रकाश थया विना रहेतो नथी. अध्यात्मज्ञानना पुस्तको वांचवा मात्रथी तो फक्त अध्यात्मज्ञाननी रुचि प्रकटे छे अने गुरुने शीर्षपर धारण करीने आत्मज्ञान मेळववा पुरुषार्थ करतां आत्मानो साक्षात्कार अनुभव थाय छे. शुद्ध निश्चयनय कथित आत्मानुं शुद्धस्वरूप अनुभववा माटे आत्मज्ञानी गुरुनुं शरण स्वीकारी तेमनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवानी खास जरुर छे, ते विना आत्मानो साक्षात्कार करवा बीजो उपाय नथी. गीतार्थ गुरुनी सेवा भक्तिमां जीवंतां जेओ मरजीवा बने छे ते जीवतां प्रभु परमात्मारूपे आत्मानो साक्षात्कार करे छे. मनुष्य जन्मनुं सत्यध्येय परमात्मपद प्राप्ति करवी तेज छे अने ते माटे आत्मज्ञान तेज मुख्य उपाय छे अने आत्मज्ञानमाटे गीतार्थ गुरुना शरण पूर्वक तेमनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्या विना अन्य कोइ उपाय नथी. सगुराने अध्यात्मज्ञाननो परिपाक थाय छे अने ते बाह्यमां निर्लेप अनासक्त रहीने नीतिमय जीवन गाळतो छतो स्वाधिकारे बाह्य कर्तव्य कार्योने पण कर्या करे छे. ते लोकमां लोकाचार रीतिए वर्ते छे अने आत्मामां आत्माकार परिणतिए वर्ते छे. तमो-

गुण अने रजोगुण साथे अध्यात्मज्ञान वर्ते छे अने सात्विकगुण साथे अध्यात्मज्ञान वर्ते छे. तमोगुण अने रजोगुण रहित सात्विक गुण सहित जे अध्यात्मज्ञान प्रगटे छे ते स्वपरनी विशेष उन्नतिकारक होय छे. तमोगुण रजोगुण अने सत्वगुणथी पण आत्मा न्यारो छे त्रिगुणीमाया ते नर्तकी समान छे अने ते प्रकृति छे, तेज कर्म छे, तेनाथी पुरुष अर्थात् आत्मा न्यारो छे एम जे आत्माने अनुभवे छे ते आत्मानी शुद्धि करे छे सातनयोनी सापेक्षाए आत्मानु ज्ञान करवु ते सम्यग्ज्ञान अर्थात् आत्मज्ञान छे एवा आत्मज्ञानना पदोनु सातनयोनी अपेक्षाए स्वरूप समजवामाटे वाचकोने विज्ञप्ति करवामा आवे छे. आगमसार, नयचक्र, अध्यात्मसार, ज्ञानसार, आनदघनचोवीशी वगेरे ग्रन्थो वाचवाथी अध्यात्मज्ञाननी प्राप्ति थाय छे चतुर्थगुण स्थानकथी आरंभी अध्यात्मज्ञाननु प्राकट्य थाय छे. मुख्यतया अध्यात्म ज्ञानीओ त्यागी मुनियो होय छे कारण के तेओ परमात्मपदप्राप्तिमाटे अर्पाइ गएला होय छे मुनिना व्रतोमा अने मुनिना हृदयमा अध्यात्मज्ञाननी झाखी होय छे गृहस्थो, अध्यात्मज्ञानमा सर्षप समान छे अने अध्यात्मज्ञानमा ज्ञानी मुनियो मेरु समान छे ज्ञानीमुनियो सर्व प्रकारना संगथी रहित होय छे. चतुर्थ गुणस्थानक करता पाचमा देशविरति गुण स्थानकमा अध्यात्मज्ञान अनतगणु खीले छे पचमा देशविरति गुण स्थानक करता छठासर्वविरतिप्रमत्तगुणस्थानकमा अनतगणु विशेष अध्यात्मज्ञान खीले छे, छट्ठा सर्वविरति गुणस्थानक करता सातमा अप्रमत्तगुणस्थानकमा अनंतगणु विशेष अध्यात्मज्ञान खीले छे, एम उत्तरोत्तरगुणस्थानकोमा बारमा गुणस्थानक सुधी अध्यात्मज्ञान खीले छे अने त्रयोदशमासयोगीकेवलीगुणस्थानकमा केवलज्ञान प्रगट थाय छे अने त्या सा यनी सिद्धि थाय छे. अनरात्मदशामा अध्यात्मज्ञानदशा तथा संयम यान समाधि छे.

समकितीने अध्यात्मज्ञान प्रगटे छे. अध्यात्मज्ञान प्रगटया बाद अध्यात्मज्ञानवडे आत्मस्वभावे आत्मामां परिणमवुं, एवुं जे निश्चय चारित्र छे ते छठ्ठागुण स्थानकमां अने विशेषतः सातमागुणस्थानकथी विशेष प्रकटे छे. ज्यारे व्यवहार चारित्रमां पूर्ण स्थिरता थाय छे अने गीतार्थ गुरुनी आज्ञा प्रमाणे वर्तन थाय छे तथा व्यवहार अने निश्चयनो पूर्ण अनुभव आवे छे तथा गीतार्थ मुनि गुरुनी पूर्ण कृपा मेळवीने अध्यात्मज्ञाननी प्रवृत्ति थाय छे त्यारे क्रियामां अने ज्ञानमां स्थिरता वधे छे अने सर्वदिशानो अनुभव आवे छे अने तेथी एकदेशीनी एकांत आग्रहदशा रहेती नथी. ज्ञानी गीतार्थ मुनिवरनी सलाह लेइ अध्यात्मज्ञान प्रतिवळवुं, अन्यथा व्यवहारधर्मसाधनना अधिकारथी पण भ्रष्ट थवानुं थाय छे. एकांत शुष्क आत्मज्ञानीओथी चेतता रहेवुं, कारण के तेओ बालजीवोने तेमना धार्मिक क्रियारुचिना अधिकारथी भ्रष्ट करे छे अने बालजीवोने अध्यात्मज्ञानदशानी दशापण तेवी क्रियारुचि दशा प्राप्त थयाविना प्रगटती नथी तेथी तेओ उभयथी भ्रष्ट थाय छे माटे बालजीवोएतो गीतार्थ आचार्यनी सलाह लेइ अध्यात्मज्ञाननां भजनोमां प्रवृत्ति वा निवृत्ति करवी. अमने गुरुनी कृपाथी व्यवहारमां तथा निश्चयमां श्रद्धा स्थिरता थइ छे तेथी एकांत वळण थयुं नथी अने अन्योने जैन शास्त्रोना ज्ञानपूर्वक अनेकांत वलण रहे ते माटे खास सूचना करवामां आवे छे के जेथी अध्यात्मज्ञाननी लगनी लागे तोपण श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्यायजी तथा श्रीमद्देवचंदजीनीपेठे चारित्रादि धर्म व्यवहारमां स्थिरता वधे अने अध्यात्मज्ञाननो उपयोग पण ताजो रहे. एकांतक्रिया जडवादीओने अध्यात्मज्ञान तरफ अरुचि होय तो तेओने अध्यात्मज्ञाननां शास्त्रोनुं रहस्य समजवा माटे गीतार्थ सूरिआदिनी सेवाभक्तिमां लयलीन थवा विज्ञप्ति करवामां आवे छे.

मुनिनो सर्व धर्म प्रवृत्तिमा अध्यात्म ज्ञान भर्युं होय छे फक्त ते समजवानी जरुर छे. अमने पच्चीशसत्तावीश वर्षथी अध्यात्म ज्ञान तरफ लक्ष्यवृत्ति वळी छे अने अमोए अध्यात्म ज्ञानना तथा द्रव्यानुयोगना तथा योगना जैनधर्म संबंधी तथा जैनेतर धर्मो संबंधी हजारो पुस्तको वांच्या छे अने गुरुनी सेवा भक्ति करीने तथा गुरुनो आशीर्वाद लईने गुरु कुलमा रहीने अध्यात्म ज्ञानने कडक आत्मस्वरूपे पचाववा प्रयत्न कर्यो छे तेथी आत्माना उपयोगमा चढता अध्यात्म ज्ञाननी भावनाना उछाळाओ प्रगटतां अध्यात्म ज्ञानना जे जे भजनो पदो प्रगट्या होय ते तेवा अधिकारीओमाटे दिशि दर्शक छे पण तेवी दशा जेओनी न थइ होय तेओए तो ते तरफ रुचि राखवी अने पोताना अधिकार प्रमाणे धर्मक्रियामा प्रवृत्ति करवी अने एवी दशा प्राप्त करवा माटे तीव्रेच्छा राखवी पण ते दशा आव्याविना मारा जेवानु अनुकरण करवु ते एकांत हितावह नथी तेमज गीतार्थ गुरुनी सलाह लीधाविना कदि पण तेमा प्रवृत्ति वा निवृत्ति न करवी, एवी स्वानुभवथी सूचना आपुं छु. केटलाक शुष्क ज्ञानीओ पोतानी दशा अध्यात्मज्ञान परिणति थयाविना धर्मनी क्रियायोनो त्याग करे छे अने अन्योने पण तेओ धर्मनी क्रिया–कार्योथी भ्रष्ट करे छे ते योग्य नथी आत्मज्ञानीओ कर्मयोगीओ बने छे अने अंतरमा आत्मोपयोगे वर्ते छे ते बाबतनु विशेषस्पष्टीकरण श्रीआनंदघन पद भावार्थसंग्रहमा अने कर्मयोगग्रन्थमा करवामा आव्यु छे तथा योगदीपकग्रन्थमा तथा गच्छमग्रह तेमज पत्रसदुपदेश प्रथमभागमा तथा पत्रसदुपदेश बीजा भागमा करवामा आव्यु छे, तेथी विशेष जिज्ञासुओए ते ग्रन्थो वांचीने विशेष खुलासो मेळववो

गीतार्थगुरुनी आज्ञा प्रमाणे वर्तीने अध्यात्मज्ञान मेळववाथी आत्मानु स्वरूप अनुभवाय छे धर्म परीक्षामा श्रीमद् उपाध्याये ते माटे नीचे प्रमाणे कह्यु छे.

तथा.

गुरुआणाइ ठियस्सय वज्झाणुट्ठाणसुद्धचित्तस्स ।
अज्झप्पज्झाणम्मिवि एगग्गत्तं समुल्लसइ ॥ ९९ ॥
तंमिय आयसरूवं विसयकसायाइदोसमलरहिअं ।
विन्नाणाणंदघणं परिसुद्धं होइ पच्चक्खं ॥ १०० ॥
जलहिम्मि असंखोभे पवणाभावे जहाजलतरंगा ।
परपरिणामाभावे णेव विअप्पा तया हुंति ॥ १०१ ॥
अण्णेपुग्गलभावा, अण्णो एगोय नाणमित्तोहं ।
सुद्धोएस वियप्पो, अविअप्पसमाहिसंजणओ ॥१०३॥
एयं परमं नाणं, परमो धम्मो इमोच्चिय पसिद्धो ।
एयं परमरहस्सं णिच्छयसुद्धं जिणा बिंति ॥१०४॥

बाह्यधर्म क्रियानुष्ठानवडे जेनुं शुद्ध चित्त थएलुं छे तथा गुर्वाज्ञामां स्थित छे तेने अध्यात्म ध्यानमां एकाग्रपणुं विलसे छे, अध्यात्मज्ञान ध्यान समाधिमां विषयकषायदोषमलरहित विज्ञानानंदघन एवुं आत्मस्वरूप प्रत्यक्ष थाय छे. क्षोभविनाना समुद्रमां पवनना अभावे जेम जल तरंगो प्रगटता नथी तेम परपरिणामना अभावे आत्मामां संकल्पविकल्पो प्रगटता नथी, हुं आत्मा ज्ञानानंद स्वरूप छुं बाकी अन्य सर्व जडपुद्गल भावो छे, एवो शुद्धविकल्प अर्थात् विचार तेज निर्विकल्प समाधिजनक छे एवुं अध्यात्मज्ञान छे तेज परम ज्ञान छे अने तेज परम धर्म छे एवो आत्मा ज्ञानवडे सर्वत्र प्रसिद्ध छे अने एज परमरहस्य छे एम जिनेश्वरो निश्चय शुद्ध आत्मस्वरूप प्रकाशे छे. सर्व धर्म क्रिया व्यवहार प्रवृत्तियो पण आत्माना स्वरूपना प्रकाश माटे थाय तोज ते उपयोगी छे. उपयोगे धर्म छे, क्रिया

ए कर्म छे अने परिणामे बंध छे, माटे आत्मज्ञानना उपयोगी बनी आत्मानो प्रत्यक्ष अनुभव करवो मनुष्य जन्मनु ध्येय ए छे के आत्माने परमात्मारूपे प्रकटाववो, अनुभववो अने सर्वकर्म दुःखथी मुक्त थवु. अज्ञानीओ क्रियार्थी बंधाय छे अने आत्मज्ञानीओ क्रिया करीने कर्मथी मुक्त थाय छे ज्ञानीना वचनथी हलाहल विष पीवु अने आत्माना अज्ञानीना वचनथी अमृत पण न पीवुं आत्मज्ञानीनी सर्व धर्म व्यवहार करणी मोक्षार्थे थाय छे आत्मज्ञानी सर्वमा प्रवृत्ति करतो छतो पण सर्वथी निःसग छे अने अज्ञानी सर्वथी बाह्यदृष्टिए निःसग अक्रिय छता आसक्त–कर्मबंध सहित छे, माटे अध्यात्मज्ञाननी दशाप्राप्त करवा एक क्षण पण प्रमाद न करवो. आध्यात्मिक भजनो पछी पत्र १३६ थी शोकनिवारक ग्रन्थ छे अने पत्र १४६ मा चेतक चोवीशी ग्रन्थ छे. पत्र १४८ मा सघ कर्तव्य ग्रन्थ छे तथा पत्र १५७ मा प्रजा समाज कर्तव्य ग्रन्थ छे ते ग्रन्थो अध्यात्मिक दृष्टिनी कल्पनाए आध्यात्मिक पात्रोनी रचना करीने स्वबुद्धि कल्पना अनुसारे रच्या छे तेथी तेमा जैन शास्त्रोनी शैलीथी कइ विरुद्ध लखायु होयतो श्री चतुर्विध सघ आगळ मिथ्या दुष्कृत दउछु अने गीतार्थोने ते सुधारवानी विज्ञप्ति करुछु अने जे कइ विपरीत होय ते भागने बहिष्कृत करवा विज्ञप्ति करु छु जे सज्जनोने ग्रन्थ वाचता जे कइ शका पडे वा तेआन जैनशैली विरुद्ध लागे तेनो खुलासो लेवानी इच्छा होय तो तेआए रुबरुमा मळी खुलासो करवो वा पत्रद्वारा खुलासो करवो. ज्या सुधी शरीरमा आत्मा छे त्या सुधी लेखक सर्व बाबतना खुलासा करवाने वाचकोने विज्ञप्ति करे छे मुनियोनो अधिकार छे क तेओए सघ अने प्रजाना कर्तव्य प्रगतिना ग्रन्थो रचवा अने ते सबधी मे गजा उपरात कइक किंचित् प्रयत्न कर्यो छे तेमाथी सज्जनो योग्य लागे ते ग्रहशे एवी आशा छे.

चतुर्विध संघनी महत्ता जेटली वर्णवीए तेटली न्यून छे. श्री तीर्थंकरो पण **नमोतित्थस्स** बोली चतुर्विध संघने नमस्कार करे छे, एवा श्री संघनां कर्तव्यो शुं? छे ते संघ कर्तव्य ग्रन्थमां जणाव्यां छे. संघनी आगळ मारा सरखा एक अणु सरखा छे. संघनी सेवा भक्तिथी स्वर्गनी अने सिद्धिनी प्राप्ति थाय छे. चतुर्विध संघमांथी तीर्थंकर सूरिवाचक साधु वगेरेनी उत्पत्ति थाय छे. संघनां कर्तव्योने संघ जाणीने ते प्रमाणे प्रवर्ते तो संघनी प्रगति थयाविना रहे नहि. संघनी आगल कोइ महान नथी. गृहस्थ श्रावक श्राविकासंघमां ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य अने शूद्र ए चार वर्ण जो गुणकर्मथी हयाती नथी भोगवती तो संघनी हानि पडती थाय छे. गृहस्थ संघने प्रजा-समाजनी साथे विश्वमां बाह्यआजीविकादि संबंधथी जीववामाटे संबंध राखीने जन्मभूमि, समाज, धर्म, राज्य लक्ष्मी कुटुंबादिना रक्षण माटे सर्व प्रकारे तैयार रहेवुं पडे छे अन्यथा तेनुं दुनियामां नामनिशान पण रहेतुं नथी. गृहस्थ श्रावकादि संघना अस्तित्वमां त्यागी संघनुं अस्तित्व छे अने त्यागी साधुसाध्वीरूप संघना अस्तित्वमां गृहस्थ श्रावक संघनुं अस्तित्व छे, बन्ने भेगा मळीने दुनियामां जैनधर्मनी चढती करी शके छे. चतुर्विध संघ वर्तमानकालमां जे कंइ करे तेमां तीर्थंकरनी आज्ञा छे. अप्रमत्त विष्णुकुमार मुनि अने कालिकाचार्ये श्री संघनी रक्षामां तथा रक्षारूप सेवा भक्तिमां पोतानी शक्तियोने फोरवी हती. योगी त्यागी समाधिवंत महामुनियो पण श्री भद्रबाहुनी पेठे संघनी आज्ञाने उठावीने ते प्रमाणे वर्ते छे. संघना अस्तित्वमांज स्थावरतीर्थ जैनशासन आदि सर्वनुं अस्तित्व छे. संघनी सेवा भक्तिमां सर्व तीर्थंकरो वगेरेनी सेवाभक्ति समाइ जाय छे. माटे संघ कर्तव्य ग्रन्थ रचीने संघनी सेवाभक्ति करी संघनी उन्नति जणावी छे. तेमां कंइ वीतराग महावीर प्रभुनी आज्ञा विरुद्ध लख्युं होयतो संघनी आगळ माफी मागुं छुं. प्रजासमाज

कर्तव्य ग्रन्थ रचीने प्रजासमाजना कर्तव्य दर्शाव्या छे ते प्रजार्नी सत्य उन्नति थाय तथा प्रजासमाज पोते मार्गानुसारी गुणवाळो वर्नी धर्मनी योग्यता पूर्वक धर्मने भाविमा प्राप्त करे तेज मुख्य उद्देशर्ने ध्यानमा राख्यो छे प्रजासमाजने सात्विकधर्मना मार्गे चढाव्यार्था सघनी वृद्धि प्रगति थाय छे छेवटे प्रभु महावीर देवनु समाप्ति मंगल करीने ग्रन्थ समाप्त करवामा आव्यो छे भजनसग्रह दशमा भागमां अध्यात्म ज्ञानपदो, भक्ति, योग, नीति, सेवाभक्ति वैराग्यादि पदोनो समावेश थाय छे, तेमाना केटलाक आतरिक स्वगत औद्गारिकरूप छे अने केटलाक उपदेशरूप छे ते गुरुगम्य लेई वाचशे तेओने तुर्त अववोधाशे भजनसग्रहदशमो भाग अने तेनी प्रस्तावना वाचना-राओए ते पहेलाना नव भाग अने तेनी प्रस्तावना वाचवी के जेथी तेओने परितः ज्ञान थाय अने आत्मानी परमात्मता प्रगटाववामा विशेष उत्साह प्रवृत्ति थाय. भजनो पदो वगेरे फक्त दिशा देखाडे छे पण गीतार्थ गुरुने शीर्षपर स्थापन करीने आत्मानी शुद्धि कर-वानो पुरुषार्थ कर्याविना मुक्तिनी प्राप्ति थती नथी. गीतार्थ गुरुनी सगति करवामा एक क्षण मात्र पण प्रमाद न करवो. अध्यात्म-ज्ञानना अनुभवथी सर्वप्रकारना कदाग्रह टळी जाय छे अने धर्म्य कर्म करवाथी व्यवहारधर्मनी आराधना पूर्वक सर्व कर्मथी मुक्त शुद्धात्मा थाय छे. भजन ग्रन्थादिकथी सघनी सेवा भक्ति करता म्हारा आत्मानी पूर्णता प्रगटे अने सर्व जीवो आत्मानी पूर्णता प्रगटावो एज इच्छुं छु. इत्येव ॐ अर्ह महावीर शान्तिः ३

वि सवत् १९७९. श्रावण शुक्र पचमी.

मु. विजापुर विद्याशाला.

श्री अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडळ तरफथी

श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजी ग्रन्थमाळामां प्रगट थयेला ग्रन्थो.

ग्रंथांक		पृष्ठ	किंमत.
१	क. भजन संग्रह भाग १ लो.	२००	०-८-०
* १	अध्यात्म व्याख्यानमाळा.	२०६	०-४-०
* २	भजनसंग्रह भाग २ जो.	३३६	०-८-०
* ३	भजनसंग्रह भाग ३ जो.	२१५	०-८-०
* ४	समाधि शतकम्.	६१२	०-८-०
* ५	अनुभव पच्चिशी.	२४८	०-८-०
६	आत्मप्रदीप.	३१५	०-८-०
* ७	भजनसंग्रह भाग ४ थो.	३०४	०-८-०
८	परमात्मदर्शन.	नरक	०-१२-०
* ९	परमात्मज्योति.	५००	०-१२-०
* १०	तत्त्वबिंदु.	२३०	०-४-०
* ११	गुणानुराग. [आवृत्ति बीजी]	२४	०-१-०
* १२-१३	भजनसंग्रह भाग ५ मो तथा ज्ञानदीपिका.	१९०	०-६-०
* १४	तीर्थयात्रानुं विमान [आ. बीजी]	६४	०-२-०
* १५	अध्यात्म भजनसंग्रह.	१९०	०-६-०
* १६	गुरुबोध.	१७४	०-४-०
* १७	तत्त्वज्ञानदीपिका.	१२४	०-६-०
१८	गहुंलीसंग्रह भा. १	११२	०-३-०
* १९-२०	श्रावकधर्मस्वरूप भाग १-२ [आवृत्ति त्रीजी]	४०४	०-१-०

* २१ भजन पद संग्रह भाग ६ ठो.	२०८	०-१२-०
२४ वचनामृत.	८३०	०-१४-०
२३ योगदीपक.	३०८	०-१४-०
२४ जैन ऐतिहासिक रासमाळा.	४०८	१-०-०
* २५ आनन्दघन पदसंग्रह भावार्थ सहित,	८०८	२-०-०
* २६ अध्यात्म शान्ति [आवृत्ति बीजी]	१३२	०-३-०
* २७ काव्यसंग्रह भाग ७ मो.	१५६	०-८-०
* २८ जैनधर्मनी प्राचीन अने अर्वाचीन स्थिति	९६	०-२-०
२९ कुमारपाल चरित्र (हिंदी)	२८७	०-६-०
३० थी ३४ सुखसागर गुरुगीता	३००	०-४-०
३५ षड्द्रव्य विचार	२४०	०-४-०
* ३६ विजापुर वृत्तांत	२०	०-४-०
३७ साबरमती काव्य.	१९६	०-६-०
३८ प्रतिज्ञा पालन. २०४	११०	०-५-०
३९-४०-४१ जैनगच्छमत प्रबन्ध		१-०-०
मध्यगति जैनगीता.		१-०-०
४२ जैन धातुप्रतिमा लेख संग्रह		०-८-०
४३ मित्रमैत्री.		०-२-०
४४ शिष्योपनिषद्.	४८	०-२-०
४५ जैनोपनिषद्		
४६-४७ धार्मिक गद्यसंग्रह तथा	९७६	३-०-०
सदुपदेश भाग १ लो.	९७६	३-०-०
४८ भजन संग्रह भा. ८	१०२८	२-०-०
४९ श्रीमद् देवचंद भा १	१०१२	३-०-०
५० कर्मयोग		

५१ आत्मतत्त्व दर्शन.	११२	०-१०-०
५२ भारत सहकार शिक्षण काव्य	१६८	०-१०-०
५३ श्रीमद् देवचंद्र भाग. २	१२००	३-८-०
५४ गहुली संग्रह भा. २	१३०	०-४-०
५५ कर्मप्रकृतिटीकाभाषांतर	८००	३-०-२
५६ गुरुगीत गुहलीसंग्रह	१९०	०-१२-०
५७-५८ आगमसार अने अध्यात्म गीता	४७०	०-६-०
५९ देववंदन स्तुति स्तवन संग्रह.	१७५	०-०-०
६० पूजासंग्रह.	४१६	१-०-०
६१ भजन पदसंग्राह भा. ९	४५०	१-८-०
६२ भजनपद संग्रह भा. १०	२००	१-०-०
६३ पत्रसदुपदेशभाग बीजो.		
६४ ईशावास्योपनिषद्. जैनदृष्टिए विवेचन जैनधातुप्रतिमा		
६५ लेख संग्रह भाग बीजो.		

※ आ नीशानीवाळा ग्रंथो सीलकमां नथी.

उपरनां पुस्तको मळवानुं ठेकाणुं.

वकील मोहनलाल हीमचंद.

(गुजरात) पादरा.

ज्ञानी गुरुना घटमा प्रभुजी, विश्वासी शिर उपरेरे;
अनुभवी ते आप प्रभु छे, समजावो दिल सुधरे. प्रभु. मारा. ५
प्रभु न जाति लिंग ने भाति, प्रभु न मनना विचारोरे;
प्रभु जाणे ते आप प्रभुजी, समजावीने सुधारो. प्रभु. मारा. ६
प्रभु परखावे ते सद्गुरुजी, शरणागतने तारोरे;
प्रभु विना म्हने कशु न गमतु, गुरु प्रभु दिल प्यारो. प्रभु. मारा. ७
हु तु मोहनो भेद भूलावो, आनन्दनो घो ल्हावोरे;
स्वार्पण करी तुज शरणु कीधुं, मनमा महेरने लावो. प्रभु. मारा. ८
लाल विना नहीं लाभ कश्यानो, मोति विना नहीं ज्योतिरे;
प्रभु मळता नहीं पनोती, रहे न सूरत रोती. प्रभु. मारा. ९
नामरुपना मोहथी मरवुं, शीखवी प्रेमी मिलावोरे;
हु तुं ते एक आतम सत्ता,-रुपे ते सत् परखावो. प्रभु. मारा. १०
मननो मोह शमावो गुरुजी, आतम ज्ञानने आपोरे;
ज्ञानानंद प्रकट ते प्रभुता, रस दे रसमय छापो. प्रभु. मारा. ११
गुरुविना नहीं मुक्ति कदापि, मुजपर करुणा धारोरे,
बुद्धिसागर सद्गुरु प्रेमी, प्राणजीवन आधारो. प्रभु मारा. १२

गुरुगीत स्तुति.

मारे दिवाळीरे थ आज. ए राग.

मारा मन मान्या गुरुराज, ज्ञानने आपो रे.
मारा ज्ञानी गुरु गुणवत, दिलमा व्यापो रे—
चार कषायो केडे पडिया, क्षण क्षण संग न चूके रे;
कारमा कामनी गति छे वसमी, मन विश्राम न मूके. ज्ञान. मा. १
विषय वासना दारुण जिरवी, मन तन फोग्टं ग्वाधु रे
मोह मायानो पार न पाम्युं, शु ? प्रभुने आराधु. ज्ञा. मा. २

आतम आनंद रसने चखाडो,
इन्द्रियरसवृत्ति टाळोरे. गुरुजी.
वादवाद तर्कवादना झघडा,
ए सहु मन मोह रगडारे. गुरुजी. ४
ज्यां त्यां पुच्छुं तो सहु जूदा जणावे,
देख्या विना न रस आवेरे. गुरुजी.
माटे गुरुजी प्रभु दिल परखावो.
मन पेलीपार जणावोरे. गुरुजी. ५
ज्ञान आनंद प्रभु रूप छे साचुं,
बाकी बीजुं छे काचुंरे. गुरुजी.
बुद्धिसागर प्रभु हजराहजूरे,
ज्ञानानंद रस पूरेरे. गुरुजी. ६

गुरुगीत.

मारे दिवाळीरे थै आज प्रभु मुख जोवाने. ए राग.

मारा ज्ञानी गुरु गुणवंत, प्रभु परखावोरे.
म्हारा आतमना आधार, शिवसुख आपोरे. म्हारा.
जे जे हुकम करो ते ते पाळुं, कहोतो देहने गाळुंरे;
तन मन धन तुजउपर वारुं, लाग्युं प्रभुपद प्यारुं. प्रभु. मारा. १
बाह्य विषयमां सुख नहीं लागे, इन्द्रियरस नहीं जागेरे;
एवी अवस्था प्रगटावो मुज, रह्यो तमारा रागे. प्रभु. मारा. २
मत पंथ दर्शन शास्त्रनां जंगल, झाडी बाहिर काढोरे;
प्रभु महावीर धर्म जणावी, मोहनी झाडी वाढो. प्रभु. मारा. ३
मोहे मार्यो हिंमत हार्यो, आतमने उद्धारोरे;
मन संकल्प विकल्प हठावो, आप तर्या म्हने तारो. प्रभु. मारा. ४

ज्ञानी गुरुना घटमा प्रभुजी, विश्वासी शिर उपरेरे;
अनुभवी ते आप प्रभु छे, समजावो दिल सुधरे. प्रभु. मारा. ५
प्रभु न जाति लिंग ने भाति, प्रभु न मनना विचारोरे;
प्रभु जाणे ते आप प्रभुजी, समजावीने सुधारो. प्रभु. मारा. ६
प्रभु परखावे ते सद्गुरुजी, शरणागतने तारोरे;
प्रभु विना म्हने कशु न गमतु, गुरु प्रभु दिल प्यारो. प्रभु. मारा. ७
हु तुं मोहनो भेद भूलावो, आनन्दनो घो ल्हावोरे;
स्वार्पण करी तुज शरणुं कीधु, मनमा महेरने लावो. प्रभु. मारा. ८
लाल विना नहीं लाभ कश्यानो, मोति विना नहीं ज्योतिरे.
प्रभु मळता नहीं पनोती, रहे न सूरत रोती. प्रभु. मारा. ९
नामरूपना मोहथी मरवु, शीखवी प्रेमी मिलावोरे;
हु तुं ते एक आतम सत्ता,-रूपे ते सत् परखावो. प्रभु. मारा. १०
मननो मोह शमावो गुरुजी, आतम ज्ञानने आपोरे,
ज्ञानानन्द प्रकट ते प्रभुता, रस दे रसमय छापो. प्रभु. मारा. ११
गुरुविना नहीं मुक्ति कदापि, मुजपर करुणा धारोरे.
बुद्धिसागर सद्गुरु प्रेमी, प्राणजीवन आधारो. प्रभु मारा. १२

गुरुगीत स्तुति.

मारे दिवाळीरे थै आज, ए राग.

मारा मन मान्या गुरुराज, ज्ञानने आपो रे.
मारा ज्ञानी गुरु गुणवत, दिल्मा व्यापो रे-
चार कषायो केडे पडिया, क्षण क्षण सग न चूके रे;
कारमा कामनी गति छे वसमी, मन विश्राम न मूके. ज्ञान. मा. १
विषय वासना दारुण विस्री, मन तन फोली खाधु रे
मोह मायानो पार न पामुं, शु ? प्रभुने आराधु. ज्ञा. मा. २

५१ आत्मतत्त्व दर्शन.	११२	०-१०-०
५२ भारत सहकार शिक्षण काव्य	१६८	०-१०-०
५३ श्रीमद् देवचंद्र भाग. २	१२००	३-८-०
५४ गहुली संग्रह भा. २	१३०	०-४-०

जैनाचार्य बुद्धिसागरसूरिविरचित.

भजनपद संग्रह भाग १० मो.

परमोपकारी गुरुनी गुंहली तथा स्तुति.

सुविधि जिनेश्वर साहिब साचो. ए राग

गुरुवा गुणवंत गुरुजी प्राणथी प्यारा
आतमना आधारारे, गुरुजी प्रभुने मिलावो,
अलख प्रभु ओळखावोरे गुरुजी
कथनीथी क्रोड गाउ प्रभुजी छे दूरे,
पासे प्रभुजी प्रेम पूरेरे. गुरुजी.
गायाथी लाख गाउ दूर जणाये,
समजणथी पासमा सुहायेरे. गुरुजी. १
पासे प्रभुजी नथी आतरुं क्यारे,
आपो आप विचारेरे. गुरुजी.
साकार प्रभु सत परगट पेख्या,
तनु संग आतम देख्यारे. गुरुजी.
ज्ञान आनंदगुणी परगट पोते,
झळहळे निर्मल ज्योतेरे. गुरुजी. २
शुद्ध आतम अनुभवने करावो,
इन्द्रियरसने हठावोरे. गुरुजी
आतमरूपमा रंग रमाडो,
आतममा मन वाळोरे गुरुजी. ३

मननी मारामारी जीताजीत, हारंहारा थाती रे;
मन वश आतम लेश न शांति, वात कही नहि जाती. ज्ञा. मा. ३
मत पंथ दर्शन वार अनंती, एकेक विषये भटक्यो रे:
ज्यां जाउं त्यां मनना वशमां, मोहे ज्यां त्यां पटक्यो. ज्ञा. मा. ४
मननी मान्यता मनना धर्मो, आतमधर्म न जाण्यो रे;
सात्विक प्रकृति धर्मने जाण्यो, आतमने न प्रमाण्यो. ज्ञा. मा. ५
नामरूपना मोहे मरियो, हर्ष शोकथी भरियो रे;
हुं हुं करुं पण हुंने न जाणुं, मोह ते दुःखनो दरियो. ज्ञा. मा. ६
मनडुं मर्कट वशमां न आवे, रहे शुभाशुभ भावे रे;
जडरसने मनडुं बहु च्हावे, आतम रसना अभावे. ज्ञा. मा. ७
आपमतिलो स्वच्छंदी थै, देव गुरुने न गणतो रे;
आतम रस प्रगटावे एवां, शास्त्रोने नहि भणतो. ज्ञा. मा. ८
आतमज्ञान विनानुं जीवन, जातुं गुरुजी जाणो रे;
हवे दया कंइ दिलमां आणो, आपो आतम प्राणो. ज्ञा. मा. ९
श्रद्धा प्रीतिथी तन मन धन, सर्वे तुजपर वार्युं रे;
परमानंद पमाडो परगट, शिवपद एवुं धार्युं. ज्ञा. मा. १०
मुज तुज भेद विनानी भक्ति, आपो आतमशक्ति रे:
बुद्धिसागर प्रभुपद व्यक्ति, तुज सेवा आसक्ति. ज्ञा. मा. ११

तपियाने बोध.

राग होरी.

तपिया तन न तपावो, तन तापे प्रभु ताप रे. तपिया,
बार तापकी धूणी तापे, देह ताप संतापो:
जबतक दिलमें मोहको तापो, तब तक टले न बळापो रे. तपिया. १
कामवासना आशा तापे, मनमां न प्रभुको मिलावो;

शुद्धप्रेमसें प्रभु है पासे, ज्ञानसे प्रभुकु जगावो रे. तपिया. २
समतासें तन मनकी शांति, जपने पडता न जापो;
मोहतापकु दूर करो झट, क्रोधकु मन नहि छापो रे. तपिया. ३
शुद्धप्रेमकी धूनी धखावो, शील लंगोट लगावो,
ज्ञानाग्नि दिलमा प्रकटावो, ऐसा योग कमावो रे. तपिया ४
नामरूपकी विषय वासना, उनकु दूर हठावो,
प्रभुसें एकरूप हो जावो, ज्योति ज्योत मिलावो रे. तपिया ५
दुनियाकु क्या तप देखाना, प्रभुसें तान लगाओ,
आनंदरसका प्याला पीकर, मस्ताना हो जावो रे तपिया. ६
प्रभुविरहतपसें तन मनका, ताप, धूणी कहा? तापो;
शुद्धप्रेमसें दिलमा परगट, चिदानंद प्रभु व्याप्यो रे तपिया. ७
कष्टकी कोडी किंमत कोडि, ऐसा तपकु न च्हावो,
बुद्धिसागर आतमप्रभु है, आपकु आप मिलावो रे. तपिया. ८



आत्मधर्म.

राग सोरठ

आतम धर्म हे न्यारा—साधु भाइ आतम धर्म हे न्यारा
मनवाणीकायासें न्यारा, निरंजन निराकारा,
तप जप व्रतसें भिन्न अपारा, ज्यां नहि मोह प्रचारा. साधु. १
सत्त्व रजस्तम गुण कर्मोसें, न्यारा है निर्धारा;
मनसंकल्प विकल्पसें न्यारा, पुद्गल धर्मसें न्यारा. साधु. २
दयासत्यास्तेयादिक सब, साधनधर्मसें न्यारा;
पूर्णानन्द रु पूर्ण ज्ञानमय, आतमरूप अपारा. साधु. ३
नय अरु भंग निक्षेप विचारसे, न्यारा हे अविकारा,
बुद्धिसागर आतम धर्मकु, जाना भयकु निवारा साधु. ४



श्री रविसागर गुरु जयंती स्तुति.

राग होरी.

रविसागर मुनि राया, जग जय डंक वजाया, प्रेमे प्रणमो पाया. रवि.
गुर्जर आदि देश सुधार्या, प्रभुमां चित्त लगाया;
जैनोने जैनधर्मे जगाया, संतमां श्रेष्ठ सुहाया,
निरंजन आप कहाया. रवि. १
कायानी पण रही नहीं माया, गुरु गुण विश्व छवाया;
सुरनरवर नित्य प्रणमे पाया, प्रेमे तुज गुण गाया,
जगत्मां श्रेष्ठ सुहाया. रवि. २
रवि शशि सागर पृथ्वी वायु, आकाश उपमा पाया;
लब्धि सिद्धि भंडार गुरुजी, तुज चरणे चित्त लाया,
दयाना दरिया डाह्या. रवि. ३
तुज समरे सहु मंगलमाळा, ध्यानविषे में धार्या;
बहुला भक्त जनोने उद्धार्या, दुर्गुण दोष निवार्या,
हजारो भक्तने तार्या. रवि. ४
सहाय करो सुर थै अणधार्या, व्हारे आवो संभार्या;
प्रेमी भक्त जनोने तार्या, निश्चय गुण निर्धार्या,
अवधूत जोग जगाया. रवि. ५
गुरु कृपाथी ज्ञान ने मुक्ति, गुरु भक्ति चित्त ठाया;
गुरुविनानां नगुरां नास्तिक, ठाम ठेकाणे न आया,
गुरुशिर सुखिया थाया. रवि. ६
रविसागर गुरु गुण गण गाया, गुरुवर दिलमांहि ध्याया;
बुद्धिसागर सद्गुरु श्रद्धा, प्रीति कृपा रस पाया,
आनन्द दिल उभराया. रवि. ७

७

योगी.

अवधूत वैराग्य बेटा जाया. ए राग. सोरठ–आशावरी.

जोगी ऐसा जोग जमाया, त्याग भभूत लगाया. जोगी
शुद्धप्रेमकी मस्ती पाया, योग जटाकु धराया;
शील लंगोटा सत्सग मुद्रा, क्रिया कुंडल लगाया जोगी. १
सत्य ग्रहण इच्छाकी झोळी, व्रतरूपचीपिया च्हाया;
प्रभु तन्मयता तपकु तपोया, स्थिरता आसन पाया जोगी. २
स्थिर उपयोगकी पवन पावडी, ब्रह्माकाश विचराया;
मतिश्रुत ज्ञानका शंख बजाया, प्रेमका प्राण जगाया. जोगी. ३
मन पवन माया कर वशमें, जीत निशान चढाया;
देह देवलमें प्रकट प्रभु शिव, स्वयं सदा परखाया. जोगी. ४
कर्म काष्ठ ओर भक्तिकी धूनी, ज्ञानाग्नि प्रजलाया,
तत्त्वमसि सोऽहं उपासना, अजपाजाप जपाया. जोगी. ५
धारणा कुंडी ध्यानका गाजा, दिल शिलामें घुटाया,
गुरुगम पानी सेवासाफी, संयम चलम फुकाया जोगी ६
उपयोगका दमजोरे फुकाया, ब्रह्मसमाधि चढाया,
आतम आनन्द रसकुं पाया, परमब्रह्मरूप पाया. जोगी. ७
अलख अलख मुखसें उच्चराया, पाया सो न कथाया,
नेति कथी निजमाही समाया, ऐसी कमाणी कमाया. जोगी. ८
त्याग नहीं ओर ग्रहण कछु नहीं, आपो आप सुहाया,
बुद्धिसागर पूर्णानन्दी, अलख अमर हो जाया. जोगी ९

तपियानें बोध.

राग होरी.

तपिया तन कां तपावे, अंतरमां बहु तापरे. तपिया.
कामनी अग्नि मनडुं तपावे, तन इन्द्रि बळी जावे;
मनमांहि तुं जोने तपासी, धूणी तापे शुं ? थावेरे. तपिया. १
जटा वधारी जोगी बनीने, दिलने क्रोध धरावे;
काम जिहां तिहां राम न प्रगटे, शुं ? लंगोट लगावेरे. तपिया. २
माया मरी नहि मन नहि मरियुं, शुं तनु भस्म लगावे;
चिपीयो राखे नहि चित्त वशमां, दंभ शुं ? कंथा धरावेरे. त. ३
सूरजतापे वृक्षो तपे छे, वडला जटाओ वधारे;
खाखमांहीं आलोटे गद्धां, मुक्ति छे मोह मारेरे. तपिया. ४
समता वण शंख फुंके वळे शुं ?, भेख धरे नहीं फावे;
आतमज्ञान विना नहीं मुक्ति, मूढने शुं ? भरमावेरे. तपिया. ५
जलना स्नाने मुक्ति मळे तो, मीनादिक शिव पावे;
आश तज्या वण आसन वाळी, श्यानो ? जोग जगावेरे. तपिया. ६
देहतापथी मनना तापो, क्यारे शांत न थावे;
आतमज्ञानथी मनना तापो, शांतपणाने पावेरे. तपिया. ७
मोह काम आशाने त्यागे, त्यागी सहुको थावे;
बाह्य त्यागी पण अंतररागी, त्यागी बने नहि फावेरे. तपिया. ८
मन वश नहि तो वनमां गए शुं ?, लाख चोराशी न जावे;
वासना ज्यां त्यां वन घर सरखां, शुं ? जगने समजावेरे. तपिया. ९
मन नहिं दंड्युं दंड धरे शुं ?, क्यां मनु जन्म गुमावे;
ज्ञानी गुरुगम ज्ञान ग्रही ले, मनडुं वशमां आवेरे. तपिया. १०
मुक्ति न वर्णे मुक्ति न मरणे, मुक्ति छे मोह हठावे;
बुद्धिसागर गुरुना संगे, परमानंद सुख थावेरे. तपिया. ११

सत्य राज्य.

राग आशावरी

राज्य खरा एह तेरा, आतम !!! राज्य खरा ए तेरा;
ज्या नहि तेरा मेरा. ... आतम०
बाह्यराज्यकी खटपट नहि जिहा, मोहका नहि अंधेरा;
जडमें त्यागग्रहणकी न वृत्ति, ज्या नहि मनका फेरा. आतम. १
असंख्यप्रदेशमें आप समाये, प्रगटे आनंद ल्हेरा;
आपोआप स्वरूपे खेले, को पर राग न वैरा. आतम. २
सर्ववासनातीत निरजन, अनंत नूरका चहेरा;
बुद्धिसागर परमब्रह्ममय,-राज्य मिला वहा ठेरा. आतम. ३

आत्मविचार.

सोरठ वा आशावरी.

आतम आपो आप विचारा, जडसें आतम न्यारा. आतम;
मन मार्या विनु मुक्ति नहीं है, मन तक है अवतारा;
मनकी माया भव पडछाया, मारना मनरूप मारा. आतम. १
शुभ अशुभ मनका है प्रचारा, मन जीते निस्तारा;
आतमज्ञानसें मन मरत है, आनद अपरंपारा. आतम २
ज्ञान रु आनंद आत्मधर्म है, अन्य है मोहविकारा;
बुद्धिसागर पूर्णानंदी, प्रगट्या दिल उजियारा. आतम. ३

माया.

राग आशावरी.

माया नहीं छे त्हारी, आतम ! ! माया नहीं छे त्हारी,
माने शुं ? म्हारी म्हारी. आतम

माया स्वप्न क्षणिक पडछाया, साची न मायायारी,
माया पाछळ दुनिया मरी पण, माया न गइ कोइ ल्हारी. आतम. १
जेम जेम माया पाछळ दोडे, तेम तेम दुःख खुवारी;
मायाथी कदि सुख न साचुं, दुःखी नर ने नारी. आतम. २
सर्वविश्व छे माया वशमां, नानारूप विचारी;
मायाने म्हारी कहेवामां, संकट दुःख अपारी. आतम. ३
अज्ञान मोहनी मायामांही, मुंझ्या सहु संसारी;
हुं तुं वृत्ति मायारूपी, माया गति छे न्यारी. आतम. ४
नामरूपनी विषयवासना, लोक वासना भारी;
शास्त्र ने मतपंथ वासना टळतां, आनंद प्रगटे अपारी. आतम. ५
चिदानंद तुज रूप खरू छे, तुजमां न दुःख लगारी;
बुद्धिसागर निजमां आनंद, प्रभुता छे जयकारी. आतम. ६

स्वदेश प्राप्ति.

राग सोरठ.

साधुभाइ देश हमेरा पाया, आपमें आप समाया. साधु.
आदि अंत न पुद्गलसें भिन्न, निरंजन निर्माया;
पंचभूत नहि चंद सूरज नहि, नहि मनवाणी काया. साधु. १
नात जात नहि लिंग भात नहि, अज अविनाशी सुहाया;
राजा सेवक भेद जिहां नहि, नित्य सदा परखाया. साधु. २
मत पंथ दर्शन स्पर्श नहि जिहां, पूर्णानंद जमाया;
बुद्धिसागर पावे सो जाने, भरमे जगत भरमाया. साधु. ३

आत्मा अमर छे.

राग सोरठ.

आतम जन्म मरण नहि तेरा, मोहका ए है फेरा. आतम.
प्राणादिक पुद्गल नहि तुं है, मरे नहि कोउ वेळा,
नभमां वादल आत जात है, त्युं पुद्गलका चेरा. आतम. १
उपजत नहि कछु विणसत नहि तुम, छडो मिथ्या अधेरा;
पुद्गल मायाका पडछाया, मानो न ए तुम मेरा. आतम २
आकाश पेठे निःसग निर्मल, चिदानंदघन लहेरा,
बुद्धिसागर अमर भये हम, रहा न काळका घेरा. आतम. ३

आत्मा कोइनो शिष्य नथी अने गुरु नथी.

राग सोरठ वा आशावरी.

आतम किसका गुरु नहि चेला, सबमें न सबके भेळा. आतम.
आपोआप स्वरूपमें खेले, आपो आप अकेला,
जगका गुरु ओर जगका चेला, नभवत् जगका मेला. आतम. १
जगसें हिलमिल रहेवे भेला, नटनागरवत् खेला,
हमकुं हम जानत है ज्ञाने, रहा नहि अधेरा. आतम. २
आपो आपकुं गावत ध्यावत, मोहका टलता फेरा,
बुद्धिसागर आप प्रभु है, दिया सुगतिमें डेरा. आतम. ३

आतम आपो आप प्रकाशी.

राग सोरठ.

आतम ! ! आपो आप प्रकाशी, अजरामर अविनाशी. आतम.
परमप्रेमसें दिलमां प्रकाशी, लेश रहत न उदासी,
शुद्धप्रेम प्रगटया विनु तपसें, पगले दगले फासी. आतम. १

अंतर भूली बाहिर शोधत, जगमें होवत हांसी;
मका काशी पहाड क्या ढुंढे, जलमें मीन ज्युं प्यासी. आतम. २
सब तीर्थ है आतममांही, दिलदार है दिलवासी;
बुद्धिसागर परम ब्रह्ममय, ज्ञानानन्द विलासी. आतम. ३

प्रभुने.

सोरठ वा आशावरी.

प्रभु तुज अकळ कला न कळाती, समज्यां नहि समजाती. प्रभु.
जेवी कूपनी छाया कूपमां, प्रगट थइने समाती;
तेवी रीते माह्मरी बुद्धि, त्हारो पार न पाती. प्रभु. ॥ १ ॥
उदधिनी उंडाइ मापवा, लुणनी पूतळी जाती;
सागररूप बनी ते जाती, माप कदापि न पाती. प्रभु. ॥ २ ॥
वेदागम मत दर्शन शास्त्रो, वांच्यां बहु भली भाति;
धारणा ध्यान समाधियोगे, झांखी कंइक जणाती. प्रभु.॥३॥
अलख अगोचर अगम अरूपी, अनंत ब्रह्म इयाती;
ढांक्यो सूरज रहे न छानो, तुज महिमा एम भाति. प्रभु. ॥४॥
अनंत जलधिमां बुंदनो सरखी, षड्दर्शन मति थाती;
असंख्य लक्षणे लक्षित करतां, थाकी बुद्धि मुंझाती. प्रभु.॥५॥
एम छतां पण माह्मरी छाती, तुज प्रेमे उभराती;
बुद्धिसागर आतम ख्याति, चिदानंद सुहाती. प्रभु. ॥ ६ ॥

घर.

सोरठ.

संतो ज्ञाने निज घर जाना, कहां न जाना आना. संतो.
पंचदेह परपंच नहि जिहां, राग न द्वेष ठिकाना;

आठो कर्म न जन्म मरण नहि, असंख्यप्रदेशी माना. संतो. १
वर्ण गंध रस स्पर्श न ज्याहि, ध्याता ध्येय न ध्याना;
पृथ्वी चंद सूरज नाहि सागर, वर्ते केवलज्ञाना. संतो २
क्षण क्षण पूर्णानन्द प्रगट है, पूर्णानन्द पिछाना;
आदि अंत न अलख अरूपी, देखता मस्ताना. संतो. ३
मस्त भए हम निज घर पाकर, जानत है को श्याना;
बुद्धिसागर आतम पाया, ज्ञानानंद निशाना. संतो. ४

करना ज्ञानी गुरुका शरणा.

राग. आशावरी.

करना ज्ञानी गुरुका शरणा, गुरुसें होत उगरना. करना.
गुरुविन ज्ञान मिले न कदापि, गुरु विन होत न तरना;
गीतार्थगुरुका शरणेसें होत न, जन्म मरणका फिरना. करना. १
आतम ज्ञानी गुरु करनेसें, नासे मिथ्या भ्रमणा;
गुरुरूप होकर गुरुसेवनसें, होता नहीं भव मरना. करना. २
ज्ञानी गुरुविन क्षण नहि रहना, गुरु उपदेश दिल धरना,
बुद्धिसागर परमेश्वर पद--, अनुभवी गुरुकुं करना. करना. ३

मनने.

मन तने शी रीते समजावुं ? कोटि कोटि उपाय करुं पण,
वश करवामा न फावुं मन.
सर्वविषयनो भोग करे पण, लेश न तृप्ति पावे;
क्षण क्षण विषयो नव नवा चाहे, लेश न संतोष लावे.
मन तुं पलकमा लाज लुटावे, किणविध वशमा न आवे. मन. १
वायु विजली करता अतिवेगी, कथ्युं न काने धारे,

शिखामणने नहि गणकारे, जगमां कोथी न हारे. मन ! तने. २
त्हारी माया भव पडछाया, तुजथी प्रगटे काया;
सर्व जीवोने नाच नचाया, अजब छे त्हारी माया. मन. ३
श्वाननी पूंछडी पेठे वांकुं, सिद्धुं न क्यारे थावे;
कोटि वर्ष सुधी वशमां रहे पण, क्षणमां छूटी जावे. मन. ४
तुजने वशमां करवामाटे, ज्ञानोत्साह जगावुं;
तुज साथे लडी महावीर पदवी, लेवामां लय लावुं,
मन त्हने ज्ञानवडे वश लावुं, निश्चय एह न डगावुं. मन तने ज्ञाने.५
शुद्धातम उपयोगे आतम, आपो आप रमावुं;
बुद्धिसागर शिव सुख पावुं, जग जश डंको वजावुं,
मन त्हने आतममांही समावुं, परमब्रह्म थइ जावुं;
मन त्हने आतम० ६



अवळीवाणी.

सोरठ.

संतो अचरिज वात न लागे, समज्या ते अंतरमां जागे;
रहे सदा वैराग्ये..संतो.
राजा घर घर भीखने मागे, सिंह शशाथी भागे;
हंसलो मोति चारो त्यागे, उदधि बळंतो आगे. संतो. १
कीडी मेरुने गळी जावे, बोबडो गायन गावे;
मर्कट जगने नाच नचावे, सिंहने बकरी खावे. संतो. २
काचासूतरे हाथी बांध्यो, डगलुं एक न चाले;
पांगळो सब दुनिया फरी म्हाले, देवने सेवक पाळे. संतो ३
यानपात्रपर दरियो चाले, अंधो जगने भाळे;
ब्राह्मण भंगीनेज वटाळे, टाढ घणी उन्हाळे. संतो. ४

सतो पडिया वेश्या प्यारे, राजा वकरा चारे;
शूरा जन नपुसकथी हारे, सत्य ते वावन व्हारे. संतो. ५
भूप प्रजानी आणा माने, माछला व्याधने ताणे,
दुनिया भखी भरिया भाणे, मुक्ति लडाइ ठाणे. संतो. ६
उदधि उपर पत्थर तरता, पहाड चले आकाशे;
बुद्धिसागर आतम समजे, साचु सहु समजाशे संतो. ७

संतसेवा.

सोरठ.

सेवो सत सदा सुखकारी, प्रभु साकार सदा छे सतो,
आपे शिवसुख भारी. सेवो.
पोतानो रंग देइ दे पलमा, पलकमा पाप निवारी,
पारसमणियी पण जे अधिका, सगति शिव दातारी सेवो. १
काशी मक्का तीरथ भटको, पण नहि आवे पारी,
सतनी संगत क्षण पण करता, भ्राति हरे दु.खकारी. सेवो. २
जीवता शास्त्रो छे सतो, साची संतनी यारी;
संत विना वैकुंठ शा खपनुं, ? जो जो शास्त्र विचारी सेवो. ३
आतमज्ञानी निरभिमानी, समभावी उपकारी,
सतहृदयमा प्रभु परगट छे, समजो नर ने नारी. सेवो. ४
श्रद्धा प्रीतिने वहु माने, सत्य सत दिलधारी;
बुद्धिसागर सतनी सेवा, करता शाति अपारी. सेवो. ५

आतम !!! क्यां करे म्हारुं त्हारुं.

राग सोरठ.

आतम करे मारुं तारुं, स्वप्न सरिखी दुनिया बाजी,
प्यारुं छे तुजथी न्यारुं. आतम.
कंचन कामिनी सारुं नठारुं, अंते सर्व अकारु.
भूल करीं केम भूले भोळा, वागे मृत्यु नगारु. आतम. १
असंख्यप्रदेशी अलख निरंजन, चिदानंदरूप त्हारुं;
आतमनो उपयोगी था तुं, गण निज रूपने प्यारुं. आतम. २
जे देखे ते पुद्गलमाया, अज्ञाने अंधारुं;
ज्ञानथकी घटमां उजियारुं, गण निजरूपने सारुं. आतम. ३
चेती ले हवे निश्चय चेतन, दुनिया देवता दारु;
बुद्धिसागर जागी ले झट, चूक न अवसर चारु. आतम. ४

अहिंसा.

आशावरी.

संतो ! ! ! हिंसा अहिंसा विचारो, समजी अहिंसा धारो. संतो.
सम्यग्दृष्टि अहिंसा साधे, आतमना उपयोगे;
मिथ्यादृष्टि एज छे हिंसा, बहिरातम गुण भोगे. संतो. १
मिथ्यादृष्टि प्रमादे हिंसा, स्वपर जीवोनी थाती;
दुर्गुण व्यसनने मोहपरिणति, हिंसारूप जणाती. संतो. २
शुभवृत्ति प्रवृत्तियोरे, गुणो अहिंसा जाणो;
उपयोगे कर्तव्यनारे, वर्तने धर्म प्रमाणो. संतो. ३
प्रमत्तयोगथी स्वान्यनोरे, प्राण नाश जे थावे;
व्यवहारे हिंसा कहीरे, हिंसा आशयभावे. संतो. ४
हिंसानी बुद्धि वण कर्मो, करतां अहिंसा धारो;
बुद्धिसागर निज उपयोगे, अहिंसा आचारो. संतो. ५

सम्यक्त्व ज्ञानदृष्टि.

राग सोरठ वा आशावरी.

सतो आतमज्ञान लहीजे, समकित दृष्टि विना नहि मुक्ति,
कोटि उपायो कीजे संतो.
तप जप संयम यात्रा पूजा, करता स्वर्ग ज थावे,
मोह टळे नहि मूळगो ज्यारे, भवभ्रमणा नहि जावे. सतो. १
विश्वजीवोनी द्रव्य दया करे, तोपण बाल कहावे,
भाव दया नहीं समकित वण कदि, समजु मनमां आवे सतो. २
आतमज्ञानी अहिंसा पाळे, सत्यधर्मने धारे;
अज्ञानी हिंसा नहीं टाळे, मोहना बीज न बाळे संतो. ३
अज्ञानी पशु सरखो बालक, चक्रवर्ती पण जाणो,
बुद्धिसागर आतम आनंद, पामे मुक्ति पिछाणो. संतो. ४

धर्मी.

राग आशावरी.

संतो धर्मी तेह कहीजे, धर्मीनी संगत कीजे. संतो.
दान दया दम सत्यने धारे, चोरी चुगली निवारे,
ब्रह्मचर्यने भावथी धारे, क्रोध कपट संहारे. संतो १
न्यायपथथी निज जीवनने गाळे, मोहनी वृत्ति बाळे,
देव गुरुनी सेवा धारे, दुर्व्यसनो सहु टाळे. संतो. २
पर उपकारमां प्राण समर्पे, विषया न लागे प्यारी,
आतम सरखुं विश्वने माने, सात्त्विक प्रेमाचारी. संतो. ३
मुदिता मैत्री माध्यस्थ्य करुणा, दुर्गुण दोषने वारे,
जूठने त्यागे सत्यने धारे, मानवभव अजवाळे. संतो ४

जूठनो पक्ष धरे नहीं क्यारे, जीवे संतना प्यारे,
बुद्धिसागर सद्गुरु सेवे, चढतो धर्मी व्हारे. संतो. ५

महावीर प्रेम.

निशानी कहा बतावुं रे. गोडी राग.

प्रभु महावीर तुं प्यारोरे, जगजीवन जगदेव. प्रभु.
हरिहर ब्रह्मानो प्रभुरे, तुं हि राम रहिमान;
अल्ला अर्ह जिन खुदारे, बुद्ध विभु भगवान. प्रभु. १
नाम अनंतां ताहरांरे, मुखथी कथ्यां नहि जाय;
नाम भिन्न शुद्धातमारे, परमब्रह्म सदाय. प्रभु. २
अनंत लक्षणे लक्षतांरे, अलख अवाच्य सुहाय;
आतम सत्ता व्यक्तिएरे, महावीर दिल प्रगटाय. प्रभु. ३
परमब्रह्म परमातमारे, परमेश्वर आधार;
बुद्धिसागर भेटियारे, आनंद अपरंपार. प्रभु. ४

निद्रा.

निशानी कहा बतावुं रे. ए राग.

अमने ए निद्रा प्यारी रे, आनंद जेमां अपार. अमने.
निंदा विकथा न कामना रे, जन्म जरा नहीं होय;
मोहभावे नहीं जागवुं रे, नडे न अमने कोय. अमने. १
राग द्वेषना द्वैतनुं रे, जेमां जरा नहीं भान;
मननी गति पण ज्यां नहीं रे, आत्मरसे मस्तान. अमने. २
नामरूपना मोहनुं रे, स्वप्न नहीं प्रगटाय;
बुद्धिसागर आतमा रे, ज्योति ज्योते सुहाय. अमने. ३

मनुष्यो ! सद्‌गुणथी प्रभु मळता.

राग. आशावरी.

सद्‌गुणथी प्रभु मळता, मनुष्यो !!! सद्गुणथी प्रभु मळता.
दुर्गुण दुष्ट व्यसन छे यावत्, तावत् प्रभु नहीं मळता,
पत्रनने रोथे प्रभु नहीं मळता, मोहे वधे चचलता. मनुष्यो !!! १
पूर्ण अहिंसा सत्य पाळंता, सत्य प्रभु झळहळता,
परधन पत्थर स्त्री सहु माता, गणता ते प्रभु वरता. मनुष्यो. २
प्रभुना नामो जपो सहु त्होये, प्रगटे नहीं ज्ञान समता,
भक्ति ज्ञान ने समता प्रगटे, दिल्मा प्रगट प्रभु रमता. मनुष्यो ३
वेष क्रियाकाड मात्रथी गुणवण, क्यारे न होय सफळता,
काम क्रोध लोभ माया टळे तत्र, प्रगट प्रभु झळहळता. मनुष्यो. ४
अमुक पन्थ मत धर्मने माने, गुण वण नहीं निर्मलता,
विनय विवेक सदाचार शुद्धि, शमदमथी प्रभु मळता मनुष्यो. ५
मैत्री प्रमोद मध्यस्थ करुणा, ज्ञाने दुर्गुण टळता,
नाम ने रुपनो मोह टळ्या वण, प्रभुना तार्या को न तरता. मनुष्यो ६
मन इन्द्रियने वश करी जेओ, शुद्धचारित्रमा वळता,
शुद्धातम प्रभुपद ते पामे, मोहना मार्या न मरता. मनुष्यो ७
मनवाणी काया पवित्रता, तप सयम आचरता,
बुद्धिसागर समता पामे, सर्व जीवो शिव वरता. मनुष्यो. ८

मृत्युजीत.

अब हम अमर भए न मरेंगे. ए राग.

अब हम उतर गए भव पारा, मृत्यु भयकु निवारा. अब.
प्राण तनुका जन्म है मृत्यु, हम है उससे न्यारा
आतमका नहि जन्म मरण है, निश्चय ए निर्धारा. अब. १

अज अविनाशी अमर अलख हम, सब भयकुं हि निवारा:
कालके काल महाकाल हम, पुद्गल मोह उतारा. अव. २
ब्रह्मरूप हम ब्रह्म समाए, ज्यां नहीं द्वैत पसारा:
देह रहा संसारकेमांही, हम नहीं है संसारा. अव. ३
सबसें न्यारा शुद्धब्रह्म हम, बावन अक्षर न्हारा;
हम है प्यारी हम है प्यारा, गुण पर्यायाधारा. अव. ४
पंचभूतसें न्यारा हम है, सर्व विश्व आधारा;
बुद्धिसागर आतम पाया, आनंद अपरंपारा. अव. ५

अवळीवाणी.

सोरठ.

हमने ए सब ज्ञाने दीठा, अज्ञानीकुं एह अनीठा.-
ज्ञानी मनमें मीठा.................................हमने.

एक बुंदमां अब्धि समायो, सब संसार समाया;
एक अनेक न तेज न तम नहि, तिहां जाकर ए गाया. हमने. १
चन्द्रसें अग्नि ज्वलत है भारी, रवि शीतलता प्रकाशे;
मूषक खावे सब सर्पोकुं, पंगु गगने विलासे. हमने. २
एक नपुंसक विश्वकुं जीते, नारी विश्व नचावे;
अन्धक साचुं नाणुं परखे, संतकुं वेश्या भावे. हमने. ३
दासकी इन्द्र करत है सेवा, खद्योत रविकुं हरावे;
पल्वलमें सब दुनिया डूब-गइ, भारड-महीं स्थिर थावे. हमने. ४
पृथ्वी उपर नाव चलत है, गौ सब जगकुं खावे;
बुद्धिसागर गुरुगम जाने, वह शिवसुखकुं पावे. हमने. ५

ज्ञानी गुरु करो.

सोरठ.

सद्गुरु करशो ज्ञानी, लोको !!! सद्गुरु करशो ज्ञानीः
अज्ञानी गुरु तरे नहीं तारे, जड मोही अभिमानी. लोको.
लोभी लालचु हठवादी बहु, जूठी जेनी वाणी;
कचन कामिनीना रागी, व्यसनी दुर्गुण खाणी. लोको. १
क्रोध करे ने शापो आपे, हिंसा जूठ निशानी;
चोरी चाडी द्रोही पापी, सग करो नहीं जाणी. लोको. २
भक्ति उपासना कर्म न जाणे, कुगुरुनी ए ऐंधाणी;
आतमज्ञाननो अनुभव नहि कइ, करतो धर्मनी हानि. लोको. ३
धर्म न जाणे कर्म न जाणे, करतो बहु नादानीः
धर्म शास्त्रनो मर्म न जाणे, वाद करे मति ताणी. लोको. ४
आतमज्ञानथी प्रभु परखावे, सद्गुरुनी ए निशानी;
प्रभु महावीर तत्त्व प्रबोधे, नय सापेक्षे प्रमाणी. लोको. ५
ध्यान समाधिथी जे पूरा, सम्यग्दृष्टि दानी;
आतमरसे रसिया मस्तानी, आपे रसनी लहाणी. लोको. ६
जीवता मुक्ति सुख माणे, अमृत वर्षे वाणी;
बुद्धिसागर सद्गुरु देवा, मळिया प्रभु लयतानी. लोको. ७

दुर्व्यसनोनो त्याग.

छडो दुर्व्यसनो नरनार, नहिं तो दुःखी थशो निर्धार छडो
वेश्या संगे दुःख विपत्ति, धन बल नष्ट ज थाय;
परनारीना प्रेमे पडता, सहु शक्ति जिणसाय. छडो. १
दारुनु पान ते नरकद्वार छे, दारुथी दुःख अपार,
धर्म न प्रगटे मासने खातां, हिंसा नरकनु द्वार. छंडो. २

गांजो पीवे ते गांडो ने वांडो, भांग चडस दुःखकार;
होको चलम बीडी अफीण छंडो, दुःखनां ते दातार. छंडो. ३
अकरांतिया थै खूब न खावुं, खावो सात्त्विक आहार;
सट्टा जुगारथी सुख नहीं शांति, चोरीथी क्लेश अपार. छंडो. ४
दुर्व्यसनीनो संग करो नहीं, दुष्ट धरो ना आचार;
दुष्टजनोनी पासे रहेतां, प्रगटे दुष्टाचार. छंडो. ५
हिंसा जूठुं चोरी जारी, कषाय पाप अपार;
पाप करंतां मनने वारो, धर्म करो सुखकार. छंडो. ६
दुर्व्यसनोने दुर्गुण त्यागो, धर्मी बनो नरनार;
बुद्धिसागर सद्गुरु संगत, करतां सुख अपार. छंडो. ७

आत्मशुद्धिथी मुक्ति.

राम जपो रहिमान जपो पण, दिलशुद्धि वण नहि मुक्ति.
ताप तपो वनवास रहो पण, समता वण नहि कदि मुक्ति. १
जटा वधारे मुक्ति मळे तो, वडनी पण थावे मुक्ति;
केशने लुंचे मस्तक मुंडे, मुक्ति नहीं समजो सूक्ति. २
तीरथ जल स्नाने नहीं मुक्ति, अज्ञानीने चतुर्गति;
आतम ज्ञानथी क्षणमां मुक्ति, जो होवे मनमां नीति. ३
करे क्रिया पण न्याय न नीति, ज्ञानविना किरिया जूठी;
भावविना भक्ति नहि फळती, ज्ञानविना पूजा बूठी. ४
शुष्कज्ञानथी मळे न मुक्ति, वाद विवादो बहु प्रगटे;
मोह मर्यावण कोनी न मुक्ति, मन मरतां माया विघटे. ५
आतमज्ञानी निरभिमानी, समभावी पामे मुक्ति;
बुद्धिसागर अनंत आनंद, पामे जीवंत मुक्ति थती. ६

मनुष्यो !!! मानवभव नहीं हारो.

राग आशावरी.

मनुष्यो !!! मानव भव नहीं हारो, निज आतमने सुधारो. मनुष्यो.
क्षण क्षण दिलमां प्रभुने सभारो, ममता अहंता वारो;
धन सत्ता अभिमान निवारो, दिलमा दया सत्य धारो. मनुष्यो. १
राग रोष अरि प्रगट्या सहारो, त्यागो दुष्ट विचारो;
आत्म सरीखा सहु जीव भाळो, मन प्रगट्यो मोह मारो. मनुष्यो. २
शत्रु उपर शमभीत धारो, प्रभुमा मनडु वाळो;
गुणीपणानी अहंता टाळो, टाळो दुष्टाचारो. मनुष्यो. ३
तन धन यौवन गर्वने गाळो, कामनी वृत्ति विदारो;
दान दया दम तप जप पूजा, धर्मना साधन सारो. मनुष्यो. ४
सद्गुण धारो जन्म सुधारो, प्रभु मळशे निर्धारो,
बुद्धिसागर आतम तारो, समजीने नहीं हारो मनुष्यो. ५

आतम !!! आप स्वरूप संभारो.

राग सोरठ.

आतम आप स्वरूप संभारो,
चिदानद तुज धर्म खरो छे, निज उपयोगे धारो. आतम०
जड क्रियाने जड तो करे छे, आतम उपयोग किरिया,
आत्म स्वभावे आतमधर्म छे, समजी ज्ञानी तरिया. आतम. १
हरिहर ब्रम्हा देव देवी सहु, आतमना छे दासा,
प्रकृतिरूप्यी नहि प्रभुता, धर एवा विश्वासा. आतम. २
आनंदनो दरियो तु सदा छे, तु प्यारो तु प्यारो,
हुं तु ते त्या भेद नहीं त्या, प्रगटे छे निर्धारो. आतम. ३

नभथी पण तुं सूक्ष्म अरूपी, गुण पर्यायाधारो;
बुद्धिसागर अलख निरंजन, आपो आप सुधारो. आतम. ४

खरा जन परमेश्वरने पामे.

राग आशावरी.

परमेश्वरने पामे, खरा जन परमेश्वरने पामे;
ठरता शिवपद ठामे.........................खरा.
दुर्गुण दुर्व्यसनो दूरे टाळे, अहिंसा सत्य पाळे;
चोरी जारी अनीति निवारे, लघुताथी जग चाले. खरा. १
क्रोध मान मायावीज बाळे, लोभ प्रगटतो खाळे;
क्षण क्षण परमेश्वर संभारे, दुर्जन संगति वारे. खरा. २
राग ने रोष हण्याथी मुक्ति, सर्व कोइ जग पामे;
वेषक्रियाकांडपक्षे न मुक्ति, समभावे शिव जामे. खरा. ३
आतमज्ञानथी भक्ति भावे, आतम शुद्धि थावे;
साक्षी भावे आत्मोपयोगे, आप प्रभु परखावे. खरा. ४
जैन मुसलमान हिंदु ख्रीस्ति, बौद्धादिक प्रभु पावे;
बुद्धिसागर समपरिणामे, दिलमां प्रभु प्रगटावे. खरा. ५

मृत्यु पाछळ अमरता.

राग देशाख.

अज अविनाशी हुं आतमा, म्हने कोइ न रोशो;
ओळखशो म्हने ज्ञानथी, आपो आपने जोशो.
आतम रूपने ओळखो, कोना मार्या न मरशो. १
देह प्राण शाश्वत नहीं, रह्या नहि कदि रहेशे;
नाम ने देह भिन्न आतमा, जाणे ते शिव लेशे. आतम. २

जगमां कोई न कोइनु, योग तेनो वियोग;
प्यारो प्यारी न जडविषे, न्यारा देहने भोग. आतम. ३
आसु न पाडशो पाछळे, समजो सहु लोको,
आतमा हु छु मरुं नहीं, पाडो नहि अरे पोको. आतम. ४
नामने रूपनो अंत छे, यादी तेनी शु ? राखो,
भोळा क्या भूला भमो, आतमरस चाखो आतम. ५
निज उपयोगमा आतमा, रही देहने छंडे,
साक्षी वनी दुःख भोगवे, मोह त्या नहीं खंडे. आतम. ६
अतर्मा आनद छे, कोइ इच्छा न भीति,
आतमनी न्यारी गति, न्यारी पुद्गलरीति आतम. ७
भक्त शिष्य सहु लोकने, जीवता खमावुं,
आतम उपयोगे रही, निज देशमा जावु. आतम. ८
करो अने करशो कदी, मुज नामनी यादी;
मुज पाछळ प्रभुदेशमां, आवशो शिख सादी. आतम. ९
आतमरूपे जीवता, वन्या नहीं मरवानु.
आतम प्रभुने पामियो, हवे नहीं खरवानु. आतम. १०
जीवंता मरी जीववुं, ब्रह्म जीवन लहियुं,
निश्चय शुद्धोपयोगमा, वाकी जड नहि रहियु. आतम. ११
जडजगमा देह प्राणने, कर्मनी वहु माया,
आतमज्ञाने जागता, जाण्या पडछाया. आतम. १२
अग्नि बाळे छे देहने, नहीं आतम बाळे,
आतमना उपयोगमा, जोर कोनु न चाले. आतम. १३
मन बुद्धि पहोंचे नहीं, एवु आतम ठाम,
आतम अमने न अन्यनुं, तिहा किंचिद् काम. आतम १४
मरवु शीख्यो मर्या पूर्वे, शोक चिंता न करशो,
मन मार्यावण मानशो !!!, कदि ठाम न ठरशो. आतम. १५

मन बाजीगरनी रची, सर्व जगनी माया;
मानी शुभाशुभ तेहमां, भोळाजन भरमाया. आतम. १६
मन बाजीगरना वशे, जन्म मरणो थातां;
आतम ओळखी पामतां, मरणो टळी जातां. आतम. १७
सर्वशुभाशुभ कल्पना, मनमां प्रगटाती;
समभावे उपयोगथी, टळी अंते जाती. आतम. १८
सर्वशुभाशुभ कल्पना, कदी ज्यां नहीं प्रगटे;
शुद्धातम मुज रूप छे, जाणे माया विघटे. आतम. १९
ज्ञानीने काळ न खाय छे, मोहीने काल खातो;
आतमना उपयोगमां, काल आतो न जातो. आतम. २०
परमब्रह्म परमातमा, निज आतम पोते;
देह प्राणने छंडतां, भळे ज्योनिमां ज्योते. आतम. २१
शोधी लीधो निज देशने, निज देशमां जाशुं;
पूर्णानन्दमां लदबदी, अदृश्य सुहाशुं. आतम. २२
जन्म मरण छे कर्मथी, व्यवहारथी धारो;
शुद्धातम उपयोगमां, नहीं कर्मनो चारो. आतम. २३
आत्मतत्त्व उपजे नहीं, नहीं विणसे क्यारे;
जन्म मरण उपचारथी, जाणे ते निज तारे. आतम. २४
पुद्गलनी माया सकल, पुद्गलमां समाती;
आतम अनुभव आवतां, निर्भय थै छाती. आतम. २५
पुद्गल संगे आतमा, निजभानने भूल्यो;
आतमज्ञानने पामतां, भेद सघळो खूल्यो. आतम. २६
आतम निज रूपमां भळ्यो, थयो आत्म प्रकाशी;
आकाश पेठे अनुभव्यो, अरूपी अविनाशी. आतम. २७
उपयोग धारा प्रवाहथी, थयुं घट अजवाळुं;
पूर्णानन्द रस अनुभवुं, अनंत जीवन भाळुं. आतम. २८

नमुरे नमु मन वाणीने, नमु देहने भावे,
तमसगे आतम थयो, आपोआप स्वभावे. आतम. २९
नमुरे नमु गुरु देवने, कर्यु घट अजवाळुं,
पूर्णकृपा करी बोधथी, उघाड्यु मोहताळु. आतम. ३०
नमुरे नमुं सर्वविश्वने, उपग्रहने दीधा,
आत्मोन्नतिक्रम हेतुमा, उपकार प्रसिद्धा. आतम. ३१
नमुरे नमु कर्मप्रकृति, निज साथे रही जे,
समभाव तेपर आवता, जेह रीजे न खीजे. आतम ३२
मृत्युनो पडदो वटावीने, जता आगल शांति;
तनु प्राणनाज वियोगथी, भावी पूर्णोत्क्रान्ति आतम. ३३
सर्वथा पूरण मुक्तिमा, नहीं जन्मने मरणु,
मुक्ति मळशे ए भाविमा, कर्यु महावीर शरणु, आतम. ३४
वस्त्रसमुं तनु वदलवु, एमा शोक न भीति,
आकाशसम निज आतमा, ध्यावु उपयोग ज्योति. आतम.३५
मुजपर प्रीति थाय तो, शुद्ध आतम ध्याशो,
आतम आनद पामशो, पछी दूरे न थाशो. आतम. ३६
एकेक दृष्टियी दर्शनो, सहु प्रगट्या पेखो,
असख्यदृष्टि छे आत्ममा, अनुभव लहीं देखो. आतम. ३७
सर्व दृष्टि सापेक्षथी, निजमा समजाइ;
मतपंथ कल्पना सहु टळी, रह्यो निजमा समाइ. आतम. ३८
एकात दृष्टियो सहु शमी, अनेकातप्रकाशे,
हठ कदाग्रह नहि रह्यो, आपोआप विलासे. आतम. ३९
लख्यु कथ्यु जे कने नहीं, त्या ज समता धारो,
मन आतमनी भिन्नता, ओळखी निज तारो. आतम. ४०
देह रहे वा नहीं रहे, तेनो शोक न भीति,
पुद्गल पुद्गल रीतिमा, वर्ते तेह नीति. आतम. ४१

समये समये मृत्यु छे, मनमोह विचारे;
समये समये जीवन छे, शुद्ध उपयोग धारे. आतम. ४२
देह टळ्या छतां आतमा, अमे जीवता जाणो;
एवा जीवता ओळखे, तेह जाग्यो ज मानो. आतम. ४३
आतमरूपे जे थया, अमने जीव्या ते जाणे;
देहथी जीवता जाणता, रह्या ते अज्ञाने. आतम. ४४
प्राण देहरूप नहि अमे, रडो देहने शाने ?
नित्य आतमा तेहने, रडवुं छे अस्थाने. आतम. ४५
जड देहनी शी प्रीतडी ? आतमप्रेम ते साचो;
आतमरुचिने धारशो, आतममांहि राचो. आतम. ४६
आतममां सहु धर्म छे, जाणी आतम रमशो;
आतमरसने पामतां, सहेजे जडरस वमशो. आतम. ४७
प्रगटे नहिं मन स्वप्नमां, पंचइन्द्रियभोग;
आतमरस प्रगटे तदा, शुद्ध गुणसंयोग. आतम. ४८
आतमरसने चाखतां, स्हेजे जडरस टळतो;
आतम आपोआपने, आपरूपे मळतो. आतम. ४९
एवी दशा उपयोगमां, नहीं मरणनी भ्रान्ति;
आपोआप स्वभावमां, वर्ते अध्यात्मशांति. आतम. ५०
जड तो जडमांहि मळे, आतम आतममांहि;
आतमना उपयोगमां, नहीं मरणनी छांहि. आतम. ५१
जड जडरूपे नहीं मरे, एम निश्चय जाणो;
आतम आतमरूपमां, नहीं मरण ज मानो. आतम. ५२

चोपाइ.

असंख्यप्रदेशी छे दरबार, आतमप्रभुनो ज्यां निर्धार;
उपयोगे त्यां करवो वास, ज्यां नहि परपुद्गलनी आश. ५३

अनंत ज्योति झळके ज्याय, आपस्वभावे जावुं त्यांय;
मन बुद्धिनो नहीं प्रवेश, अलख निरंजन निर्भयदेश. ५४
गया अने ज्या जाशे सत, गया पछी नहीं आवे अत;
आतम एवो शुद्धप्रदेश, पामंता नहि रहेतो क्लेश. ५५
निश्चयनयथी शुद्ध स्वरूप, अनेकानथी रूपारूप;
राग द्वेषनो द्वैताभाव, पहोचे नहि जड जगना दाव. ५६
एवा शुद्धातमनुं तान, उपयोगे तेनु छे भान;
पछी भले तन रहे न प्राण, सरखा घर वन ने शमसान. ५७
रोइ रोइने रुवो एम, आतमभान प्रगटे गुणक्षेम,
शोक करीने शोचो एह, अनुभवो आतम वैदेह. ५८
आतम देशमा जवा विहार, कीधो तनु छंडी निर्धार,
खम्या खमाव्या सर्वे जीव, देह त्यजता रही न रीव. ५९
स्थूलदेहनो नाश ज थाय, मोह टळ्या वण दुःख न जाय;
कार्मण देहनो नाश ज थाय, पूर्ण मोक्ष त्यारे प्रगटाय. ६०
राग द्वेषनो क्षय जो थाय, केवलज्ञान तदा प्रगटाय,
देह छता ज्ञानी वैदेह, जीवन्मुक्त दशा छे एह. ६१
अनंत जीवन पामे जेह, आवी पाछो फरे न तेह,
पाम्यो ते निजमाही समाय, वैखरीथी शु वर्णव्युं जाय. ६२
तिरोभावी शक्तियो जेह, आविर्भावे थावे तेह;
परमातमपद ते छे सत्य, पामता नहि बाकी कृत्य. ६३
आतम आनंद पाम्यो जेह, इन्द्रिय सुखथी विरम्यो तेह,
आतम आनंद रसना ल्हाण, अनुभव्या ॐ पामी ज्ञान. ६४

सोहिणी.

पाछळ अमारी आवजो, आतम अनुभव पामशो,
मननी गति ज्या नहि रहे, त्या ठाम ठरीने जामशो. ६५

सात्त्विक भक्ति बुद्धिने, सेवाथकी आगळ वहो;
परब्रह्मनो अनुभव थशे, आनंदरूपे थइ रहो. ६६
जडमां अने मनमां रही जे, ग्रहण त्यागनी कल्पना;
ए ग्रहण त्यागनी वृत्ति वण, रहेशे नहीं किंचित् मणा. ६७
जडमां शुभाशुभ वृत्तिनी, जब कल्पना उठे नहीं;
तब ज्ञान आनंद प्रकटता, अनुभव खरो भासे सही. ६८
शुद्धात्मना उपयोगथी, साक्षी बनी सहु देखवुं;
प्रारब्धकर्मो भोगवा, थातुं प्रवर्तन पेखवुं. ६९
मन इन्द्रिय प्राणने, देहनुं, जीवन कर्म छे सही;
उपयोगथी साक्षी बनी, सहेजे वहो शांति लही. ७०
शुद्धात्मना उपयोगमां, रहीने स्वभावे म्हालशो;
मोहे विचारो जे उठे ते, बंध करीने चालशो. ७१
सर्वे शुभाशुभ परिणति ते, आत्मथी न्यारी गणो;
तेमां न मुंझाशो कदि, कर्तव्यना पाठो भणो. ७२
आसक्तिवण कर्तव्यने, करवां ज ए व्यवहार छे;
व्यवहारनय ए धर्मनो, पोषक महा आधार छे. ७३
जडना शुभाशुभभावमां, मुंझो नहीं मुंझो नहीं;
ए जीवतां मुक्तिदशा, परब्रह्मरस पामो सही. ७४
मनमां शुभाशुभ वृत्तियो, उठे नहीं ते मुक्ति छे;
ए मुक्ति वानगी पामियो, त्यां मृत्यु नहीं उत्पत्ति छे. ७५
जडना ज पर्यायो सकल, जडथी उठे जडमां भळे;
जड द्रव्यथी न्यारा नहीं, जाणे ज ते आतम मळे. ७६
जड् द्रव्यना भेगो रहे, जडद्रव्यरूपे नहीं बने;
एवोज आतम हुं सदा, नामी अनामी अज भणे. ७७
जड जगत्मां रहेवुं अने, जड जगत्थी न्यारो रह्यो;
नामो अनंतां मुज थयां, पण नामवण निश्चय लह्यो. ७८

देहो अनंता धारियां पण, देहरूपे हुं नहीं;
आनंदघन हु आतमा, अविनाशी ईश्वर सत् सही. ७९
भूतो ज भूतोमा भळे, आतम न अग्निथी जळे;
छेदाय नहीं शस्त्रोथकी, सूकाय नहीं गाळ्यो गळे. ८०
एवोज हुं छुं आतमा, मन देहथी न्यारो नहीं;
आतम प्रकाशे आत्मने, त्या मरणनी भ्रमणा नहीं. ८१
एवा ज आपोआपनो, उपयोग अतरमा रह्यो,
प्राणो तनु रहो ना रहो, आनंदमाही गहगह्यो. ८२
मारुं मरण ने हुं मरुं, ए मोहनी भ्राति टळी,
तन मनविषे हु हुं थतु, ते मोहनी वृत्ति गळी. ८३

हरिगीत.

जे जे निमित्ते देहनु पडवुं थवानुं थाय छे,
त्या साक्षीभावे देखता आतम नहीं भरमाय छे;
मन तन संबधे प्रगटतु प्रारब्ध भोगववु सही,
उपयोग साक्षी भावथी सुरता ज अतरमा रही. ८४
मन इन्द्रियोने देहथी भोगाय सुख दुःख भोगने,
शाता अहा बहु जातनी भोगवाय संकट रोगने,
साक्षी बनीने आतमा समभावथी सहु भोगवे,
जीवन क्षणे क्षण नव नवु आनंद उत्सव उद्भवे. ८५
शुद्धात्म आनंद उत्सवे रहेता ज देह टळे यदा,
तोपण अहो आनद छे जो नहीं टळे न्होंये तदा,
प्यारी गणेली वासना टळता न आतम हु टळु,
शुद्धात्म निज पर्यायमा आविर्भावे हु मळु. ८६
जे आत्मज्ञानी आतमा ते ओळखे मुजने खरो,
अज्ञानी तनुने ओळखे मुजाय थातो गळगळो,

जे देहना ते देहीयो ने आतमना ते ज्ञानियो,
जे आतमना छे ज्ञानियो ते पामता सुख वानियो. ८७
ओळखाण नामने देहथी ओळखाण साचुं नहीं कदी,
जे नामरूपे ओळखो ते हुं नहीं माया वधी;
आवो अमारी पाछळे आतम म्हने दिल पारखी,
सात्विक पराभक्तिवळे थाशे दशा निज सारिखी. ८८
आतम अमर निज जाणवो तन मन क्षणिक छे जाणवुं,
सहुमां अने सहु भिन्न एवुं ब्रह्म दिलमां आणवुं;
आ विश्वनो छे बाग तेनो स्वामी आतम जाणवो,
जो मोहथी मुंझाय ना तो शुद्धब्रह्म पिछाणवो. ८९
निर्मोहथी जो इन्द्रियो पांचे प्रवर्ते निजगुणे,
जो मोहवण मन चिंतवे तो निर्बंध आतम सद्गुणे;
विषयो न बांधे आत्मने उपयोगथी आतम जगे,
परब्रह्ममां प्रीति परा आनंद व्यापे रगरगे. ९०
जे मन अने विषयोविना आनंद रस प्रगटे खरो,
ते ब्रह्मरस घट जाणवो पाम्यो ज भवजलधि तर्यो;
आतमरसे रसिया थया बंधाय नहि विषयोविषे,
सर्वे करे न्यारा रहे आसक्तिवण निर्मल दिसे. ९१

चोपाइ.

शरीर पुद्गलमां आकाश, रह्युं छतां नहि लेपज खास;
ज्ञानीने पुद्गलनो योग, तेम ज तेमां होय अयोग. ९२
शरीर देवल आतम भूप, अनंत ज्योते झलके रूप;
प्रधान उपयोग ज तस जाण, तप जप संयम सैन्य वखाण. ९३
देह देवले आतमराज, आतमज्ञाने करतो राज्य;
पूर्णानन्दनी क्षण क्षण ल्हेर, समभावे नहि रागने झेर. ९४

शरीर प्रगटी विणशी जाय, आतम आपस्वरूपे सुहाय;
आतमना उपयोगी थया, मरण भ्रांतिथी दूरे गया. ९५
आतम एवो जाणे जेह, देहवियोगे रडे न तेह,
प्राणादिकनो थाय वियोग, तव तेने नहि भीति शोक. ९६
उपजे विणसे तेनो अंत, आतम पूर्ण अनादि अनंत,
आतम तु बीजो नहीं कोइ, जोइ जोइने जोशो जोइ. ९७
प्रगटे ज्यारे आत्मप्रकाश. त्यारे प्रगटे हर्ष विलास,
पूर्वकर्मनिर्जरणा करे, नवा न बांधे मुक्ति वरे. ९८
आपोआप प्रभुने मळ्यो, आतमरूप न जावे कळ्यो,
अनेकदृष्टियोगे दृश्य, अनुभव्यो आतम अदृश्य. ९९
अनंत आनंद अपरपार, आतममा सत् छे निर्धार,
ज्ञानानन्द ते आतम जाण, प्रगटे प्रभु प्रगट्या ज प्रमाण. १००
ज्ञानानन्दनो आविर्भाव, सत्य मोक्ष ते निश्चय लाव,
ज्ञानानन्द ते आतमधर्म, बाकी बीजुं जाण ज भर्म. १०१
ज्ञानानन्द प्रकटता हेत, सर्वयोग साधन संकेत,
ज्ञानानन्द ज प्रगट्यो ज्याय, आतम प्रगटयो जाणो त्याय. १०२
ज्ञानने आनंद शक्ति ज्याय, प्रगटी मोहनु द्वैत न त्याय,
एवारूपे जीव्या जेह, मरे न देह छता वैदेह १०३
एवा संत प्रभु साकार, सग करो तेनो नरनार,
जैनधर्म समजावे मर्म, भूलावे मन माया भर्म १०४
ज्ञानानंद प्रकटता जेह, रोमड धर्मने जाणे तेह,
मृत्यु पहेलां मरी सुखपाय, आपोआप प्रभु थे जाय. १०५
साध्यधर्म आतममा एह, ज्ञानानन्द प्रकटता जेह,
आत्मधर्मनी साखी लह्यो, स्वय स्वयं जोइ सुख लह्यो १०६
निज धर्मे वर्ते सहु द्रव्य, कोइ कोइमा पेसे न भव्य,
आतमधर्म ते आतममाय, अन्यद्रव्यमा मळे न क्याय. १०७

आत्मद्रव्यने काल न खाय, द्रव्य न कोइ विणशी जाय;
निज उपयोगे गुण पर्याय, प्रगटे आतम मुक्त सुहाय. १०८
आतम अमर अजर वर्ताय, निश्चयदृष्टि जाण्यो जाय;
देहवियोग समय जब आय, आतम उपयोगे वर्ताय. १०९
आतम ते परब्रह्म छे, जाण्यो आपोआप;
ज्ञानानंदे अनुभव्यो, टळ्या सर्व संताप. ११०
मृत्युविनाशक ग्रन्थ ए, भणे सुणे नरनार;
मृत्युघातनो जयकरी, पामे शांति अपार. १११
अठयोत्तर माथावडे, रच्यो ग्रन्थ सुखकार;
आत्मिकशांति तुष्टिने, मंगल सुखदातार. ११२
ओगणिश अठयोत्तरतणी, माहवद पंचमी वेश;
बुद्धिसागर आत्ममां, आनंद हर्ष हमेश. ११३

अर्हं ॐ महावीर शांतिः ३

आत्मानी शुद्ध परिणतिरूपस्त्री.

राग. सोरठ.

आतम परखो अपनी नारी, देहकुं नारी मानत भूले;
दुःखी सब संसारी.................................आतम०
रूपरंगधारक जो नारी, देह चामडी धारी;
उपजे विणसे दुःखकी क्यारी, जूठी है तस यारी. आतम० १
मनकी शुभाशुभ परिणति नारी, चतुर्गति दुःखकारी;
शुद्धपरिणति नारी प्यारी, जान लें निजसें न न्यारी. आतम० २
ज्ञानानन्दस्वरूपी परिणति, मिळतां प्रभुता भारी;
वर्ण गंधरस स्पर्श न जिसकुं, खेले खेल अपारी. आतम० ३

अज अविनाशी न मरे कबहु, एकस्वरूप जयकारी,
बुद्धिसागरशुद्ध परिणति, परब्रह्मपति नारी आतम० ४

आत्मकुटुंब.

राग. सोरठ.

आतम!! आत्म कुटुंबने देखो, मन माया जग कुटुंब छे जूठु;
तेने दूर उवेखो आतम०
भक्तिमाता बोधपिता छे, कर्मयोग छे भाइ;
उपासना छे बहेनी नीति, जीवननी छे कमाइ आतम० १
शुद्धपरिणति साची स्त्री छे, शुद्धस्वरूप सुहाइ,
निजथी भिन्न कदापि न थावे, पूर्णानन्द प्रदायी. आतम० २
सात्त्विक परिणति सासु साची, ध्यान ते ससरो पेखो,
केवलज्ञान ते पुत्र पवित्र ज, प्रगटे निश्चय एको आतम० ३
असख्यप्रदेशी साचुं घर छे, टळे खरे नहीं क्यारे;
अंतरदृष्टि प्रगटे ज्यारे, कुटुंब प्रगटतुं त्यारे. आतम० ४
आत्मकुटुंबनी साथे रमवुं, शिक्षा छे सुखकारी,
बुद्धिसागर आनद मगल, आत्मकुटुंब बलिहारी आतम० ५

पंथवाडा.

निशदिन जोउं व्हारी वाटडी. ए राग. मारु.

मतपथ दर्शनवाडामा, पशु थै न बधाशो,
रागद्वेषनी वृत्तिने, पोषी दुःखी थाशो. मत० १
मतपंथ दर्शन भेदथी, धर्म युद्धो प्रगटे,
धर्मशास्त्र मतभेदथी, शुद्धबुद्धि विघटे मत० २

तर्कबुद्धिना वादथी, शुष्कता क्लेश थावे;
मारुं ते सारुं सहु गणे, मन मोहप्रभावे. मत० ३
देव गुरुने धर्मना, जुजुआ ग्रन्थ पंथो;
मननी मान्यता जुजुवी, नही मुंझाशो संतो. मत० ४
असंख्यमतपंथ थै गया, थाय छे वळी थाशे;
आत्मसमा गणी जीवने, वर्ते शिव पाशे. मत० ५
ज्ञान अने समभावथी, सत्य जाणो ने पाळो;
रागद्वेषनी वृत्तियो, प्रगटंती खाळो. मत० ६
प्राचीन अर्वाचीन जे, धर्मशास्त्रना झघडा;
करीने रागद्वेषथी, महापंडित वगड्या. मत० ७
सिंहसमा संत ज्ञानीओ, वाडामांही न रहेता;
प्रभु महावीर देवना, बोधने दिल वहेता. मत० ८
सत्य दया दान दम धरो, तजो दुर्गुणवृत्ति;
पशु पंखी नरनारीनी, करो सेवा भक्ति. मत० ९
वीतराग महावीरनो, वीतरागी जे धर्म;
प्रकट करो निज आत्ममां, टाळो आठे कर्म. मत० १०
सद्गुण नीति धारशो, सर्वव्यसनो छंडो;
बुद्धिसागर आत्ममां, साची रढ मंडो. मत० ११

आत्मसमविश्वने देख.

सोरठ.

आतम ! आतमसम जग देखो, वर्णादिकनी ममता त्यागी;
सर्वमां आतम पेखो......................आतम०
वर्ण धर्मने देशना भेदे, प्रगट्यो मोह उवेखो;
सर्वजीवोथी हळीमळी चालो, सत्ताए आतम एको. आतम० १

उच्च नीच भेद, मनमां न धारो, शुद्ध स्वरूप संभारो;
रागद्वेषे मुझो न मनमा, लेजो मार्ग तमारो आतम० २
प्रभुसम रहेता प्रभु मळे छे, आपोआप विचारो;
बुद्धिसागर आत्म प्रभुनें, पलक पलक संभारो आतम० ३

आतम ! जगमें न है कोउ तेरा.

सोरठ वा आशावरी.

आतम ! ! ! जगमें न है को तेरा, स्वारथके संबंधी है सब,
मोहका है अंधेरा आतम०
रागसें जानत है जो मेरा, वह सब नहि हे तेरा,
संयोगका वियोग है निश्चय, क्या करे राग रु वैरा. आतम० १
स्वप्न सरीखा सब है सत्वर, पंखीका ज्यु मेला,
आखर खाली होगा डेरा, तनु मट्टीका ढेरा. आतम० २
आतमकु उपयोगे समरले, नहीं रहे भवका फेरा,
बुद्धिसागर अनंत ज्योति, परखी ले ब्रह्मचेरा. आतम० ३

आत्मबाग

आतम ! ! ! आतम बागमा फरशो, दुनिया मोह हवा झेरीली,
त्या न कदा संचरशो .. आतम !
आतम बागमा समशीतलता, ज्ञाननो भानु प्रकाशे,
आनंद अमृत वायु वातो, जन्मजरादुःख नासे आतम० १
दर्शन चंद्रमा नित्य प्रकाशे, शक्ति अनंत उल्लासे,
अनंत गुण वेलडीयो विलासे, पर्याय पुष्प विकासे आतम० २
असंख्यप्रदेशीआतम बागमा, भूख तृषा नहीं लागे,
माया मोहनु छतीपणु नहीं, रागद्वेष न जागे. आतम० ३

अज अविनाशी अमर अरूपी, आतम वागने जाणो;
बुद्धिसागर ब्रह्मस्वरूपी, परमानंद प्रमाणो. आतम० ४

रामराम हरि.

सोरठ.

सबजन रामराम हरि गावे, पण नहीं प्रभुने पावे. सब०
एक राम दशरथ नंदन छे, बीजो घट घट बोले;
सत्ताराम छे जगमां व्यापक, समजी आतम तोले. सब० १
त्रण्य गुणातीत विश्वथी न्यारो, शुद्ध राम कोइ ध्यावे;
हरि पण एवी रीजे समजी, ध्याने ते दिल पावे. सब० २
फोनोग्राफ ज राम हरि कहे, पण ते मुक्ति न जावे;
नीति सदाचार समतायोगे, नामविना शिव थावे. सब० ३
आतम तेहिज राम हरि ब्रह्म, अरिहंत जाण्यो जावे;
अल्ला बुद्ध अनंता नामे, समजे गुण घट आवे. सब० ४
नाम पोकारे शांति न थावे, मनडुं न वशमां आवे;
शुद्धातमरूप जाणी गावे, आतमराम सुहावे. सब० ५
गावे बजावे न दिलडुं बुजे, अंध अंध दोरीं जावे;
चिदानंद आतम महावीर ज, कोइक घट प्रगटावे. सब० ६
शुद्धातम महावीर छे राम ज, मूरख झघडा मचावे;
नाम असंख्य ने अर्थ छे एकज, ज्ञानीने सत्य भावे. सब० ७
भिन्न भिन्न वपु आतमराम छे, प्रगटावो गुणदावे;
बुद्धिसागर राम अरिहंत, आपोआप स्वभावे. सब० ८

मननी मान्यता.

सोरठ वा आशावरी.

ज्या त्या मान्यता छे जग मननी,
अनुभववण जग जन सहु भूल्या, ममता मत दर्शननी ज्या
मतिभेदे धर्मो छे जूदा, भिन्नता छे घरघरनी;
रागद्वेषे स्वारथभेदे, भिन्नदशा छे तननी ज्या० १
एक थइ नहीं थाशे न क्यारे, मननी मान्यता धरणी,
आतम आप स्वरूपे थयाचण, टळे न मननी करणी ज्या० २
शुद्धातम अनुभवरस पामे, रहे न मननी रुतरणी.
मननी मान्यता भेद टळे सहु, परमानंदनी नरणी. ज्या० ३
अज्ञानी अथा उंघेला, ग्रहे न मुक्ति निःसरणी;
बुद्धिसागरप्रभु घट प्रगटे, चर्चा घरनी न वननी ज्या० ४

आतम !! मननुं कह्युं नहि करवुं.

आशावरी.

आतम ! मननु कह्यु नहि करवु, दुनियामा छे मननु राज्य ज,
त्या नहीं जन्म ने मरवु आतम०
मनना मोहे जन्म ने मरवु, लाख चोराशी फरवुं,
मन ते स्वर्ग नरक छे जाणी, आपस्वरूपने स्मरवु आतम० १
मननी माया जग पडछाया, मनथी मरवुं तरवु,
आतम उपयोगे नहि मरवुं, तरवु नहि अवतरवुं आतम० २
शुद्धातम उपयोगे रहेवु, आनंदरूपने वरवु;
बुद्धिसागर ब्रह्मस्वरूपी, चिदानंदपद धरवु आतम० ३

संतो महावीरवाटे चालो.

राग आशावरी.

संतो महावीर वाटे चालो, आडुं अवळुं न भाळो. संतो०
अज्ञान रागने रोषने टाळो, अंतरमां मन वाळो;
मत पंथ दर्शन मोहने मारो, समजी सिद्धा चालो संतो० १
सुख दुःख मानापमानमां समता, धारी प्रभुने संभारो;
सर्वशुभाशुभमां बनी साक्षी, संयम धर्म संभाळो. संतो० २
गच्छक्रिया मतमोह निवारो, निजपरिणतिने सुधारो;
देवगुरुनी श्रद्धा धारो, दोष प्रगटता वारो. संतो० ३
निःसंग साक्षी उपयोगी थै, शुद्धातममां म्हालो;
मारग शूरानो न कंटाळो, वीर बनी वीर भाळो. संतो० ४
क्षण क्षण महावीर दिल संभारो, आवे झट भव आरो;
बुद्धिसागर महावीर वाटे, आनंदे सहु चालो. संतो० ५

सबजग मतकी मारामारी.

सब जग मतकी मारामारी, खोपरी खोपरी न्यारी मत है,
भूले नर अरु नारी......... ....सब.
अपने मतमें सब है रागी, अन्यके मतमें न यारी;
दुनियामें जहां तहां है ऐसा, मतकी बात हे प्यारी. सब० १
अपनी अपनी गावे सबजन, पक्षराग मन धारी;
रागद्वेषसें सत्य न सूझत, भूले पंडित भारी. सब० २
अपनी अपनी ताणे सब जन, मत त्यां युक्तिकुं धारी;
मनका मतपंथ प्रगटत विघटत, जानत क्या संसारी. सब० ३
रागद्वेष रहित महावीर है, उसका बोध विचारी;
बुद्धिसागर आतम पामत, उतरगए भवपारी. सब० ४

शुद्ध स्वदेशी व्रत.

सोरठ.

हमारे शुद्ध स्वदेशी थावु, शुद्ध स्वदेशी कमावु अमारे०
असंख्यप्रदेशी आतमदेश ज, कर्मरहित थै जावुं,
मोह अशुद्धता दूर हटावी, आतमशुद्धि पावुं अमारे० १
रागनेद्वेषथकी ज अशुद्धि, समभावे शुद्ध थावु,
वर्ण देशना मोहे अशुद्धि, तेने दूर हठावु. अमारे० २
आतम सरखा जग सहु जीवो, शुद्धप्रेमे भावुं,
भेद खेदने द्वेष त्यजीने, निजदेशे लय लावुं अमारे० ३
बाह्यदेशमा मारु न तारुं, आतमदेशने च्हावुं,
अनत ज्ञानानन्दने ध्यावु, शुद्धस्वदेशे समावुं अमारे० ४
परब्रह्म शुद्धातम निर्मल, आपोआप सुहावु.
बुद्धिसागर ब्रह्म स्वदेशो, आपोआपने गावु अमारे० ५

स्वराज्य प्राप्ति.

राग आशावरी वा सारग

अमारे राज्य अमारु लेवु, परन्तु राज्य ते जडमायानु,
जडनुं जडने दवु अमारे०
असंख्यप्रदेशी आत्मराज्य छे, मोह त्यजी त्या रहेवु;
कर्मराज देवा चूकवया, समताए दुःख स्हेवु अमारे० १
सत्य स्वतत्रने पूर्णानन्दी, आदि अत न एनु,
परदेशीमोहराज न पेसे, मननु होय न क्हेवुं अमारे० २
अलख निरञ्जन नित्य जे शोभे, ज्योते जोया जेवुं,
बुद्धिसागर ब्रह्मराज्यमा, मस्त बनीने रहेवु अमारे० ३

अमारुं आतमराज्य मझानुं.

राग आशावरी वा सारंग.

अमारुं आतमराज्य मझानुं, आतमदृष्टि थतां नहि छानुं;
ज्यां कोइ मोटुं न न्हानुं.....................अमारुं०
काम क्रोध मान माया न मत्सर, लोभ न रोगनुं ठाणुं;
कावादावा युद्ध न झघडा, स्वारथनुं नहीं टाणुं. अमारुं० १
राजा प्रजा नहीं कायदा भीति, मूकवुं नहीं नजराणुं;
मोहादिकनुं ज्यां न धींगाणुं, ज्ञानानन्द ठिकानुं. अमारुं० २
आधि व्याधि जन्म मरण नहीं, अनंतगुणनुं खानुं;
बुद्धिसागर आतमराज्यमां, सर्वे सरखा पिछानुं. अमारुं. ३

मुक्ति.

सोरठ.

साधुभाइ सब कोइ मुक्तिकुं पावे, मनका मोह टलत
तब क्षणमें, नरनारी शिव जावे....................साधु०
हिंदु मुसल्मीन बौद्ध ख्रीस्त हो, गृही त्यागी हो जावे;
प्रभु महावीर जिन उपदेशे, मुक्ति है समभावे. साधु० १
राम राम अल्ला जपतां क्या ?, मोह न यदि दूर थावे;
शयतान है जिहां तिहां न मुक्ति, मुक्ति है कर्म हठावे. साधु० २
जड चेतन सब जगकी उपर, समताभाव जो आवे:
क्षणमां मुक्ति होती निश्चय, आतम उपयोग दावे. साधु० ३
आपोआप प्रभुकुं समजी, प्रभुजीवन लय लावे:
बुद्धिसागर आनंद अमृत, पीके अमर हो जावे. साधु० ४

आत्माका मन शिष्य.

सोरठ.

करना आतमका मन चेला, जबतक मनका आतम चेला;
तबतक ठेलठेला. करना०
आतमका मन चेला करना, वात हि है मुश्केला;
गुरुगमबोधे आतमज्ञाने, मन होत चेला सहेला करना० १
मनकी मारामारी जिताजित, मन है समजु घहेला,
मन जीत्या तब जगकु जीत्या, मन साधे शिव वहेला करना० २
आतमके वश जब मन आवत, तब है आतम अकेला;
बुद्धिसागर आतम गुरुवीर, सब वीरोंमें पहेला करना० ३

आतम निज उपयोगसें तरना.

आशावरी

आतम!! निज उपयोगसें तरना, मनका मोहसें मरना. आतम०
चिदानंद निजरूप समरना, परमानद रस झरना,
साक्षी होकर कर्मोदयमें, समताभावकु वरना आतम० १
मनकी कल्पना सर्व शुभाशुभ, उसकु झट परिहरना.
आतमका उपयोगसें धर्म है, क्रियासें है भव फिरना आतम० २
ज्ञानी कर्म करत हैं नोभी, निर्लेप है दिल धरना,
मन परिणाम क्रियासें न्यारा, आतमज्ञानी समजना आतम० ३
सर्व संगमें निःसंगी है, आतम ज्ञानसें धरना,
बुद्धिसागर अलख निरंजन, ज्योति ज्योतसें मिलना आतम० ४

સંત.

ક્યાંથી આ સંભળાય મધુરસ્વર એ રાગ.

સંત છે એવા સત્ય જગત્માં, સંત છે એવા સત્ય;
કરે જે શુભ કૃત્ય.......................જગત્માં૦
આતમપ્રભુમાં મન ધરેરે, રાગ ન ધરતા રીસ;
સુખ દુઃખમાં સમભાવથીરે, વર્તે વિશ્વાવીશ. જગત્માં૦ ૧
જેની આંખ દયામયીરે, દિલડું વર્તે પવિત્ર;
સમભાવે જે દેખતારે, શત્રુ મિત્ર કલત્ર. જગત્માં૦ ૨
મારું ન તારું જગ રહ્યુંરે, પ્રભુ ઉપર શુદ્ધપ્રેમ;
આતમસમ સહુ જીવનેરે, માને અંતર ક્ષેમ. જગત્માં૦ ૩
હિંસા જૂઠ ચોરી નહીંરે, નિંદા નહીં વ્યભિચાર;
લોભ કોપ માયા નહીંરે, લેશ નહીં અહંકાર. જગત્માં૦ ૪
વિષસમું પરધન ગણેરે, માત સમી પરનાર;
ગુણ દેખે ત્યાં મરીમથેરે, દાની જ્ઞાની ઉદાર જગત્માં૦ ૫
ગંગાપેઠે પવિત્ર છેરે, જેની મનવચ કાય;
ગંભીર સાગરની પરેરે, મેરુ સમ સ્થિરતા ય જગત્માં૦ ૬
શાંત દાંત ત્યાગી યમીરે, નહીં દુર્વ્યસનો દોષ;
દુષ્ટાચાર ન ધારતારે, કરતા ચારિત્રપોષ. જગત્માં૦ ૭
નવીનકર્મ ન બાંધતારે, હણતા સત્તાકર્મ;
કર્મોદય સુખ દુઃખવિષેરે, આતમ ઉપયોગ ધર્મ. જગત્માં૦ ૮
પરમાર્થે જીવન ધરેરે, કરતા જગ ઉપકાર;
મત પંથ દર્શન હઠ નહીંરે, સત્યાચાર વિચાર. જગત્માં૦ ૯
સાત્વિકસેવાભક્તિથીરે, કરતા દિલની શુદ્ધિ;
વિષયાદિક નહીં વાસનારે, સાત્વિક ધારે બુદ્ધિ. જગત્માં૦ ૧૦

समता सरवर झीलतारे, हंस सरीखा संत;
बुद्धिसागर प्रभु समारे, करे आतम भगवंत. जगत्मां० ११

श्रावक.

राग प्रभात.

श्रावक एवा जाणो साचा, दयावंत उपकारीरे.
देवगुरुने धर्मनी श्रद्धा, विवेक किरिया धारीरे. श्रावक० १
समकित श्रावक व्रतने धारे, करे न दुर्जन यारीरे;
स्वाधिकारे कर्म करे सहु, दुष्टासक्ति निवारीरे. श्रावक० २
केफी चीजो व्यसनो छंडे, थाय नहीं व्यभिचारीरे,
दुर्गुण प्रगट्या दूर निवारे, साधु संगति प्यारीरे श्रावक० ३
दान शीयल तप भावना धारे, दुष्टवासना वारीरे,
आतमशुद्धि करवा रसियो, गुरुगम धर्म विचारीरे. श्रावक. ४
प्राण पडे पण सत्य न छंडे, उत्तमनीति धारीरे,
स्वाधिकारे सर्व गुणोने, धरतो ने व्यवहारीरे. श्रावक० ५
समता सामायिकने धारे, राग रोष संहारीरे,
षट् आवश्यक करतो भावे, गुरुपर प्रीति भारीरे. श्रावक० ६
बनी प्रमाणिक धंधो करतो, चार भावना धारीरे,
सर्वजीवोना हितमा जीवे, सर्वकला ग्रही सारीरे. श्रावक० ७
सद्वर्तनमा प्राण समर्पे, जाय न धर्मने हारीरे,
सोगन जूठा खाय न क्यारे, जिनवर आणा धारीरे. श्रावक० ८
गुरुमुखथी शास्त्रो साभळतो, सेवा भक्ति वधारीरे,
विनयी गंभीर दाता साचो, वर्ते भूल सुधारीरे. श्रावक० ९
देशकाल अनुसारे वर्ते, आवक खर्च विचारीरे,
बाललग्न आदि कुरीवाजो, छंडे शक्ति प्रमाणीरे श्रावक० १०

अल्पदोषने महालाभनां, कार्य करे गुणधारीरे;
संघादिकसेवामां स्वार्पण, करतो मोहने मारीरे. श्रावक० ११
कर्म करे पण अंतर न्यारो, दिलमां प्रभु अवधारीरे;
सर्वविषे पण सर्वथी न्यारो, शुद्धातममां विहारीरे. श्रावक० १२
आतमना उपयोगे रहेतो, धन्य मनु अवतारीरे;
बुद्धिसागर सद्गुरुसंगी, श्रावकनी बलिहारीरे. श्रावक० १३

प्रभुरस पामेला मस्त संतो.

राग प्रभात.

प्रभुरस पामेला संतोनी, आंखमां आनंद झळकेरे;
प्रभुरसथी भींझेला हृदयमां, परम प्रेमरस पलकेरे. प्रभु० १
शुद्धातम प्रभुरस छे आनंद, पाम्यां न होय उदासीरे;
लघु बालकवत् निर्दोषी दिल, होय न आशी निराशीरे. प्रभु० २
प्रभुरस पामी जडरसमांहि, संत न रसिया थातारे;
ब्रह्मरसे रसिया जगमांहि, हर्ष शोक नहि पातारे. प्रभु० ३
प्रभुरस पाम्या प्रभुरूप थईया, आपोआप विलासीरे;
बुद्धिसागर संत जीवंता, घटमां वैकुंठकासीरे. प्रभु० ४

खरी ए प्रभु मळवानी निशानी.

नाथ कैसे गजको बंध छुडायो. ए राग.

प्रभु मळवानी निशानी, खरी ए प्रभु मळवानी निशानी;
साची संतोए मानी.................... ...खरी०
भूख्याने भोजन तरश्याने पाणी, वोलो मीठी वाणी;
उच्चने नीचनो भेद गण्याविण, करो उपकार कमाणी. खरी० १

आगमशास्त्र मत पंथ कदाग्रह, करो न ताणाताणी;
दिलशुद्धिए प्रभु दिल प्रगटे, समभावे मुक्ति जाणी. खरी० २
सर्वजीवोनी हिंसा टाळो, हिंसा पापनी खाणी,
हणो हणावो नहि जीवोने. जीववुं इच्छे प्राणी. खरी० ३
आत्मसमा जगजीवो मानी, सत्य दया दिल आणी;
चोरी जारी कपटने त्यागो, प्रगटो शांति पिछानी. खरी० ४
आतमज्ञानने शुद्धप्रेमे, करो न कोइने हानि,
दुःख विपत्ति संकट सहेवा, भक्तिनी करी ल्हाणी. खरी० ५
सात्विकभक्ति ज्ञान उपासना, पामी नीति प्रज्ञानी;
बुद्धिसागर आपोआप ज, प्रगट प्रभु ऐंधानी. खरी० ६



महावीर भजन.

नाथ कैसे गजको बंध छुडायो ए राग.

वीरभजन सुखकारी, जगत्मां वीरभजन सुखकारी,
समजी भजो दिलधारी जगत्मां० १
वीर वीर महावीर जपता, मननी शुद्धि थनारी,
रवि उगे तम टळतु यथा तेम, मननी माया जनारी जगत्मां० २
वीर महावीर भजता भावे, मोह टळे दुःखकारी,
परमब्रह्म महावीर पोते, प्रकट प्रभुता भारी. जगत्मां० ३
खाता पीता हरता फरता, वीर भजो नरनारी,
उठता बेठता काज करता, वीर छे मंगलकारी. जगत्मां० ४
शुद्धातम परब्रह्म महावीर, भजन छे आनंदकारी,
बुद्धिसागर वीर भजता, प्रगटे प्रभुता प्यारी. जगत्मां० ५



आत्मा.

सोरठ.

आपोआपहि गाया, निरंजन आपोआपहि ध्याया;
देहे न देही छुपाया.......................निरंजन०
आतमकुं कहो मातपिता अरु, आतमकुं कहो भ्राता;
आतम पुत्र कलत्र रु दादा, आतम दासने त्राता. निरंजन० १
आतम मातपिता नहि नारी, पुत्र न मित्र न भ्राता;
सवरूप है और सवरूप नाहि, दास नहीं ओर त्राता. निरंजन० २
आपहि कर्ता आप अकर्ता, आप न ध्याता अध्याता;
आप हि कर्म अकर्म अगोचर, आप हि दाता अदाता. निरंजन० ३
आपहि अस्ति आपहि नास्ति, सदसद्रूप कहाया;
आपहि साधन साध्य रु सिद्धि, साधनें भिन्न सुहाया. निरंजन० ४
ज्ञानज्ञेय और आपहि ज्ञानी, गुणी निर्गुणी लखाया;
बुद्धिसागर अलख अरूपी, आपोआपकुं पाया. निरंजन० ५

अवधूत !!! नाम न रूप हमारा.

सोरठ.

अवधूत नाम न रूप हमारा, चिदानंद घन प्रभु परब्रह्म;
सबमें है सब न्यारा.............. ....अवधूत०
नहि हम हिंदु जैन मुसल्मीन, ख्रीस्ति न वर्ण अढारा;
जात भात नहि लिंग न वेषी, नहि आचार विचारा. अवधूत० १
नहि हम धर्मी नाहि अधर्मी, कर्म न करणी क्यारा;
कुछ नहि लेना कुछ नहि देना, दान नहि दातारा. अवधूत० २
वर्ण गंध रस स्पर्श नहि हम, जडका नहि आकारा;
पृथ्वी जळ आकाश न अग्नि, चंद सूरज नहि तारा. अवधूत० ३

नहि हम मरते नहि हम जीते, प्राण न वायु पसारा;
नहि हम भोगी नहि हम जोगी, नहि मन नहि अवतारा. अ० ४
निश्चयनयसें आतम ऐसा, कोउ न पामत पारा.
बुद्धिसागर अलख अरूपी, आतमरूप अपारा. अवधूत० ५

दुनिया हमकुं न कबहि पिछाने.

सोरठ वा आशावरी.

दुनिया हमकु न कबहि पिछाने, अलख निरंजन आतम हम हैं;
ज्ञान विना क्या जाने दुनिया०
मन इन्द्री कायामें भूली, मायाकु ब्रह्म माने;
देहवेषमें हमकुं जाने, मुंझे मिथ्याताने. दुनिया० १
पचविषयमें दुनिया ठूली, भूखी भरिया भाणे,
आप आपका मतमें मशगुल, क्या पागल क्या श्याने. दुनिया० २
आतमज्ञानी होय सो हमकु, आतमरूपे जाने,
बुद्धिसागर दिलमें परगट, परमेश्वरकु प्रमाने. दुनिया० ३

आतम ! स्वर्ग नरक मन माना.

राग आशावरी.

आतम ! ! ! स्वर्ग नरक मन जाना, सब दुःखका मन ठाना. आ०
कबहु मन होवत है श्याना, कबहु होता दिवाना,
शुभाशुभ मन कल्पना पाना, मनका न ठाम ठिकाना. आतम ! ! ! १
मनवृत्तिका नाशसें मुक्ति, परमानंद पद पाना,
बुद्धिसागर प्रभु मस्ताना, ठग्ता ठाम ठिकाना. आतम ! ! २

हमेरा पार न कोउ पाता.

आशावरी.

हमेरा पार न कोउ पाता, भिन्न भिन्न मतके सब लोको;
मतमतभेदसें ध्याता......................हमेरा०
एक एक दृष्टिसें देखत, आपमतें उजमाता;
पर दर्शन मत खंडन करतें, मोहे इनी मतमाता. हमेरा. १
सब दृष्टि भेगीकर देखे, अंशसें हमहि जनाता;
दर्पनमें नहि विश्व प्रकाशत, दर्पनमें जग माता. हमेरा० २
आतमस्वरूपमें जो कोउ आते, हमरूप होइ समाता;
मन बुद्धि ममता मायामें, मूढजनो भरमाता. हमेरा० ३
गति हमेरी हमहि जाने, मोही खत्ता खाता;
बुद्धिसागर अलख निरंजन, निजनिजकुं परखाता. हमेरा० ४

अब हम उतरगए भव पारा.

आशावरी.

अब हम उत्तर गए भव पारा, भव मुक्ति दोउ सम भासी,
आनंद अपरंपारा...............................अब.
शुद्धातमका अनुभव पाया, साधने साध्य समारा;
अपकीर्ति कीर्ति सम लागत, माया भ्रान्ति निवारा. अब० १
त्याग राग समभावी होतें, त्रिगुणातीत पसारा:
अवधूत मस्त भया हम आतम, मोह कालकुं मारा. अब० २
शुभ अशुभ परिणाम न जगमें, रहा न सारा नठारा;
रागद्वेषकी भ्रांति निवारी, जग नाहि द्वेषी प्यारा. अब० ३
मनमें सुख दुःख करत न विषयो, शुद्धस्वरूप हमारा;
बुद्धिसागर मस्ताना दिल, जगमें है जग न्यारा. अब० ४

भये हम आतम मस्त दिवाना.

आशावरी.

भये हम आतम मस्त दिवाना, दुनियाकी हमकु नहि परवाह;
सब जग नाटक माना भये०
दुनियाका अभिप्रायमें हमने, हर्ष शोक नहि माना;
प्रभुमस्तीमें हम मस्ताने, हम नहि पागल श्याना. भये० १
प्रभुस्वरूप हम किसकुं गाना, रहा नहि कछु छाना,
आतम आपोआप प्रकाश्यो, किसका करना ध्याना. भये० २
प्रभुमस्तीकी दिवानीमें, दिल दिलदारकु जाना,
प्रारब्धे देहादिक वर्तन, होवत पीना खाना. भये० ३
दुनियासे आतमका खेलो, न्यारा सत्य पिछाना,
बुद्धिसागरब्रह्मचिदानंद, रसमें है गुलताना. भये० ४

आतम !!! सबसे हिलमिल चलना.

आतम ! सबसें हिलमिल चलना, आतमसम सब जगजीवो है,
प्रभुमयजीवन धरना आतम०
नरनारी सब बाह्य भेद है, आतमरूप समजना;
हिंदु मुसल्मीन ख्रीस्ति बौद्धो, आतमरूप समरना. आतम० १
देश जातिका भेदकुं मिथ्या, मानी सबसें मिलना;
शुद्धप्रेमसे सर्व जीवोकी, साची सेवा करना. आतम० २
धर्मभेदमें समता धरना, मोहसें है जग मरना,
आतमरसका रसिया होकर, शुद्धब्रह्मकु वरना. आतम० ३
आतमशुद्धिसें है मुक्ति, पक्षपात नहि करना,
निर्गुण आतममस्तीकु वरना, भवसागरकुं तरना. आतम० ४
भोजनपाणी सबकुं देना, ज्ञानसें जग उद्धरना,
बुद्धिसागर चिदानंदरस, पीकर जीवन धरना. आतम० ५

आतम !!! आतमकुं खुश करना.

आशावरी.

आतम !! आतमकुं खुश करना, अन्यकी खुशामतमें गुलामी;
आपस्वभाव विचरना........................आतम०
रीझवना क्या अन्यजनोंकुं, आपोआप रीझवना;
परकी आशा दुःख निराशा, निज प्रभुताइ समरना. आतम !! १
मन इन्द्रियकुं खुश करनेंसे, क्षण क्षण होता मरना;
मोहगुलामी बडी हरामी, उससे है नहि तरना. आतम० २
जडसुख प्रभुताकी आशासें, परकुं नहि करगरना;
शुद्धब्रह्ममस्तीमें रहकर, फक्कड होकर फरना. आतम० ३
निज आतमकुं कोउ न उद्धरे, आपोआप उद्धरना;
बुद्धिसागर स्वतंत्र आतम, चिदानंदपद वरना. आतम० ४

आतम!!! परकुं क्या समजाना.

आशावरी.

आतम! परकुं क्या समजाना, आपोआप समजकर रहेना;
होना नहीं नादाना........................आतम०
मानत है में परकुं बुझाया, अहंवृत्तिभ्रमखाना;
भवितव्यता जिसकी है जैंसी, ऐंसा होता जाना. आतम० १
भाविभावसें निमित्त होना, पर उपदेशमें माना;
ऐंसा ज्ञान समजकर आतम !!! करना नहि अभिमाना. आतम० २
निज मन समजाया नाहि समजे, परको कैंसे बुजाना;
जबतक आतमके वश नहि मन, तबतक नाटकखाना. आतम० ३
आपोआपकुं समजाना है, होकर जगमें दिवाना;
बुद्धिसागर परमप्रभुमें, रसिया है मस्ताना. आतम० ४

हमकुं ऐसी निद्रा आइ.

आशावरी.

हमकुं ऐसी निद्रा आइ, जामें दुनियादारी भूली,
ममता सब विसराइ हमकुं०
ध्याता ध्येय अरु ध्यानकी वृत्ति, विलयपनाकुं पाइ;
ऐसी अवधूत निद्रा पाकर, आनन्दघन छवाइ हमकुं० १
नामरूपकी वृत्ति नहि कछु, मरण जीवन कुछ नाहि;
मन तन देहका भान नहि कछु, त्रिगुणातीतता छाइ. हमकु० २
आधि व्याधि उपाधि नहि कछु, निद्रा समाधि सुहाइ,
बुद्धिसागरचिदानदघन,–रसमें अखिया वेराइ. हमकुं० ३

आतम! साक्षी होकर रहेना.

आशावरी.

आतम! साक्षी होकर रहेना, नाम रु रूपमें है अरु नाहि,
उसमें न लेना न देना आतम०
अस्ति नास्तिमय तु है आतम, सर्वविश्वरूप चेना,
आपोआप समर प्रभु तुं है, प्रकट है आनदघना. आतम० १
सर्वका साक्षी आतम! तु है, वाच्य अवाच्य तुं है ना,
अज अविनाशी अलख अरूपी, व्यापक ज्ञानसे कहेना. आतम० २
तेरी गति आतम! तुंहि जाने, हुतुंरचि न वहेना,
बुद्धिसागर ब्रह्मस्वरूपी, पूर्णचिदानद चेना. आतम० ३

सबका धर्म है न्यारा न्यारा.

आशावरी.

सबका धर्म है न्यारा न्यारा, चिदानंदरूपी आतमका;
धर्म है अगम अपारा.........................सबका०
मनका धर्म सो मनमें रहेता, तनका तनमें धारा;
आत्मस्वभावे आत्मधर्म है, समजे नहि संसारा. सबका० १
सर्वद्रव्य निज धर्मकुं धरते, ऐसा ज्ञान विचारा;
ज्ञान रु आनंद आत्मधर्म है, निज उपयोगे निहारा. सबका० २
आतम आपोआप धर्ममें, रहना मुक्ति पसारा;
बुद्धिसागर शुद्धातमका, धर्म है अंतर् प्यारा. सबका० ३

आतम आपोआप प्रकाशी.

आशावरी.

आतम आपोआप प्रकाशी, नाहि गृही ओर नहि वनवासी;
नाहि यति सन्न्यासी.......................आतम०
नहि ब्रह्मचारी नहि व्यभिचारी, नाहीं फकीर उदासी;
नहीं व्रती वा नही अव्रती हम, नहीं भूखे अरु प्यासी. आतम० १
नहीं गुरु वा नहि हम चेला, नहि हम स्पृही वा निराशी;
रागी न त्यागी न भोगी न योगी न, हर्ष न शोक विलासी. आ० २
नहि मनवाणी काया पुद्गल, आतम हम अविनाशी;
बुद्धिसागर ब्रह्मस्वरूपी, ज्ञानानन्द उजासी. आतम० ३

हमेरा आतमरूप है जाना.

आशावरी.

हमेरा आतमरूप है जाना, नामरूपकी माया न हम है;
सबका साक्षी है माना हमेरा०
जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति न हम हैं, हम नहि श्याना दिवाना;
सर्व जगत्का हम है प्रकाशी, सत्ताए एक सुहाना. हमेरा० १
एक अनेक न एक अनेक है, जाना कथेसें न जाना,
सदसद्रूपी तुर्यातीत है, परमे वर परमाना. हमेरा० २
जडमें त्यागग्रहणकी न बुद्धि, त्यागका त्यागकु माना,
जडचेतन सब जगमें समता, पूर्ण स्वरूप पहिचाना. हमेरा० ३
मेरा तेरा है नहि जग कछु, है नाहि मानापमाना;
बुद्धिसागरप्रभुमस्ताना, आनंदरस गुलताना हमेरा० ४

मायावस्त्र खरी पडयुं

राग मारु.

निशदिन जोडतारी वाटडी ए राग.

मायावस्त्र खरी पडयु, थयो आतमा नागो,
लाज न मर्यादा रही, शुद्ध उपयोगे जाग्यो. माया. १
नागानी शहेनशाहीनी, कोड आवे न तोले;
आनन्दरस वेरायलो, आखो जनमा डोले. माया. २
लघु बालकवत् आतमा, निर्दोषी खेले,
सर्वविश्व प्रिय थइ पड्यो, शुद्धप्रेमी न ठेले. माया. ३
प्रकृति पहेल्या वस्त्र हती, मातासम थै बेठो,
निर्भोगी थयो आतमा, बुद्धि अंतर पेठो. माया. ४

नागाथी कर्मनी दुनिया, झट आघी भागी;
खुल्लो आकाशवत आतमा, शुद्ध चेतना जागी. माया. ५
माहारुं ताहारुं नहि रह्युं, शुद्ध आनंद उल्लसे;
नव नव ज्ञेयनी वर्तना, ज्ञानयोगे विलसे. माया. ६
परा पश्यंती वारनी,—दशा नागी जणाइ;
बुद्धिसागर आतमा, ज्योति ज्योत सुहाइ. माया. ७

अवधूत नाम न रूप हमेरा.

राग सोरठ.

अवधूत नाम न रूप हमेरा, आतमज्ञानसें आतम जाग्यो;
मिट गया अंधेरा......................अवधूत०
नामरूपकी वासना बूरी, प्रगटे राग रु वैरा;
नामरूपका मोह पलाया, हर्ष न शोकका चहेरा. अव० १
मिथ्या नामकुं रूपकुं दुनिया, निंदो स्तवो लख फेरा;
उसमें हमकुं शोक न प्रीति, गगनगढे दिया देरा. अव० २
ज्ञानानन्दकी मस्त फकीरी, जहां नहि मेरा तेरा;
बुद्धिसागरशुद्धातम प्रभु, अनंत नूर अकेला. अव० ३

गुणानुरागी थाशोरे.

राग गोडी.

गुणानुरागी थाशोरे, ज्यां त्यांथी ग्रहो सत्य. गुणानुरागी.
दुर्गुण दोष न देखवारे, कर्मलगी ते होय;
सद्गुण ज्यां त्यां देखवारे, दोष त्यां अचरिज न्होय. गुणा० १
सद्गुणरागथी प्रगटतीरे, सम्यग्दृष्टि बेश;
सम्यग्दृष्टि बलथकीरे, नासे रागने द्वेष. गुणानुरागी. २

दोषे सहु जीवो भर्यारे, दोषोने उवेख;
स्वार्थमतादिक मोह तजीरे, सम्यगुणोने पेख. गुणानुरागी. ३
निर्दोषपनी दृष्टिनेरे, प्रगट थती घट वार,
धरी मध्यस्थनी भावनारे, गुण देखो धरो प्यार. गुणानुरागी. ४
रजस्तमोगुण सत्त्वनारे, गुण अवगुणनो विवेक,
सत्वगुणोथी आत्मनारे, गुण देखो धरो टेक गुणानुरागी. ५
गुणरागी पहेला थवुंरे, गुण छे प्रभुनुं स्वरूप;
बुद्धिसागरगुरुगुणीरे, सेवंता टळे धूप. गुणानुरागी. ६

अब हम पढपढ गुणकर थाके.

सोरठ.

अब हम पढपढ गुणकर थाके, आपोआप स्वरूपे है हम;
ज्ञानानन्दसें पाके अब
बडे बडे पंडित प्रोफेसर, मतपंथदर्शनी छाके,
कंचनकामिनीमोहे मुंझे, दास बने आशाके. अब. १
शब्दतीर पण वहां नहि पहोंचे, शाब्दिकोके ताके;
नैयायिकके रडे तडाकें, पहोंचे न युक्तिफडाके. अब. २
मन सकल्प विकल्प मिटे तब, जागत आतमझाके,
बुद्धिसागरब्रह्मप्रभुकी, प्रभुता कोउ न ढांके. अब. ३

सर्वनयोनी सापेक्षदृष्टिए सर्वसत्य समजाय छे.

राग गोडी.

नयोनी सापेक्षाएरे, सर्व सत्य समजाय. नयोनी
सर्वप्रकारे सत्यनीरे, सर्व वातु समजाय,
रागरोषभ्रांति टळेरे, इष्ट स्वरूप जाय. नयोनी. १

सर्वधर्मदर्शनविषेरे, अरसपरस मतभेद;
विरुद्धाचारविचारनीरे, दृष्टिना टळे खेद. नयोनी. २
दर्शन धर्मना भेदथीरे, युद्धादिक जे थाय;
वैर अहंतादिक टळेरे, मध्यस्थे सत्य जणाय. नयोनी. ३
नयसापेक्षनी दृष्टिथीरे, मध्यस्थ समता थाय;
सर्वातम एकातमारे, भावदशा प्रगटाय. नयोनी. ४
प्रभुमहावीरे जणावियुंरे, सर्वनयोनुं ज्ञान;
बुद्धिसागर आतमारे, शुद्ध रयो गुण नाण. नयोनी. ५

आतम!!! आप स्वभावमें रमना.

सोरठ.

आतम आपस्वभावमें रमना, मनकी मायामें दुःख छाया;
त्यागी दे सब भ्रमणा..आतम.
पुण्यपापफलसुखदुःख प्रगटे, समभावे वह खमना;
मनमें काम कषायो प्रगटे, उसकुं ज्ञाने दमना. आतम. १
कबही अमीरी कबहु फकीरी, राजा रंक है भ्रमणा;
उच्च नीच अरु सारा खोटा, सब है मनका सपना. आतम. २
आतममें आनंदरस भोजन, आतमज्ञानसें जमना;
आतमका उपयोगे रहना, नाशे जन्म रु मरणा. आतम. ३
सत्ताए प्रभु तुं है आतम, लेत है क्या मनशरणा;
तेरारूप समरलें साहिब, तारक है तुज तरणा. आतम. ४
उपयोगे निज आतमशुद्धि, करना है प्रतिक्रमणा;
बुद्धिसागर समरस प्रगटे, होवत ज्योति उज्ञमणा. आतम ५

आतम ! अपना देशमें जाना.

सोरठ.

आतम अपना देशमें जाना, परदेशोका मोह न करना;
आयु खूटे न मुझाना आतम.
अपना देशमें सुख मजा है, परदेशे दुःख पाना;
अपना देशमें आपहि श्याना, परदेश होत दिवाना. आतम. १
मोहादिकयुत मन परदेश है, करना नहि अभिमाना,
अब चालो निज अलखदेशमें, होकर मभु मस्ताना. आतम. २
अपना देशमें परमानंदरस, पीकर हो गुलताना,
परपुद्गल परदेशमें दुःखका,–दरिया बहुत तुफाना. आतम. ३
जाना न आना खाना न पीना, असख्यमदेशममाना;
जन्मजरा नहि मृत्यु रु तनमन, चिदानदमधाना. आतम. ४
उपयोगे ब्रह्मदेशमें जाना, समभावे दिल माना;
बुद्धिसागरदेश पिछाना, ठरिया ठाम ठिकाना आनम. ५

हमारो कोइ न लेजो केडो.

सोरठ

अमारो कोइ न लेजो केडो, दूर कर्यों दुनियानो वखेडो;
अमने कोइ न छेडो अमारो.
अमो अमारा मारग लाग्या, करता न कोइथी चेडो,
अमने अमारी लागी दुनिया !!, नाहक क्या झझेडो. अमारो. १
अमो अमारुं सम्भु करीए, तमे तमारु फेडो,
मुज मारगमा माथु न मारो, कर्म तमारुं खेडो. अमारो. २
जेवा तेवा अमे अमारे, नहीं ओढाय पछेडो,
बुद्धिसागरपूर्णानन्दमा, आपो आपने तेडो. अमारो ३

अमारो पार न को जन पामे.

सोरठ.

अमारो पार न को जन पामे, शाब्दिक तार्किक पंडित थाक्या;
ठरिया नहि निज ठामे............................अमारो.
जेमां जेटली बुद्धि तेटली, वाट हमारी जणावे;
मन बुद्धिथी पेलीपार हुं, त्यां कोइ भेदु आवे. अमारो. १
मुजने मूढाजन शुं ! जाणे, दृष्टिरागी न पावे;
सौमां छुं पण सौथी न्यारो, पावे कह्यो नहि जावे. अमारो. २
रागने रोष टळे घटमांही, प्रगटुं आनंदभावे;
बुद्धिसागर ब्रह्मस्वरूपी, हुंछुं ज्ञानस्वभावे. अमारो. ३

अमारी पाछळ कोइ न लागो.

सोरठ.

अमारी पाछळ कोइ न लागो, लागो तो आतममां जागो;
ममतामोहने त्यागो..................................अमारी.
आतमदेशमां अमे विचरीए, रूप अमारो नागो;
मन संकल्प विकल्पने तजीए, रहेवा न दइए डाघो. अमारी. १
पाछळ पडिया साचा मानुं, जागे जो आतमरागो;
आतममांहि पूर्णानन्द छे, निज निज पासे मागो. अमारी. २
शुद्धस्वरूप वसंत बिचरीए, गाइए आनंद फागो;
बुद्धिसागर अलखदेशमां, थाता अनुभव यागो. अमारी. ३

आतम नाम अनेक विचारो.

आशावरी राग.

आतम नाम अनेक विचारो, नाम प्रभुना अनेक जाणो;
ज्ञानानन्द अर्थ धारो   आतम०
समज्यावण नाम रागने जापथी, आवे नहीं भवपारो,
फोनोग्राफनी पेठे बोलो, टळे न दिल अंधारो.   आतम. १
असंख्यप्रदेशी आतम जीव छे, रामने रहिमान पोते,
अरिहंत अल्ला हरिहर ब्रह्मा, बुद्ध स्वयं निज गोते.   आतम. २
ज्ञानने दर्शन चरणस्वरूपी, आतमने ब्रह्म कहीए,
देहदेवळमां देव छे पोते, घट घट आतम लहीए.   आतम. ३
उत्पत्ति ते ब्रह्मा कहीए, व्यय तेने हर कहीए,
ध्रुवता विष्णु आतम पोते, अनेकरूपे वहीए.   आतम. ४
ॐ अर्हं सोऽहं महावीर जिन, तत्त्वमसि प्रभु प्यारो;
देहमां व्यापक नूर अनंतुं, आतम अलख निरांरो.   आतम. ५
आतमनी पूरणशुद्धि ते, परमातम उजियारो
बुद्धिसागर नामी अनामी, आतम अर्थ विचारो.   आतम. ६

हमारो संग न कोइ करशो.

सोरठ.

अमारो संग न कोइ करशो, समज्यावण अमसंग करता,
खत्ता खाइ रखडशो   अमारो०
गुरु करे ते कोइ न करशो, गुरु कहे तेम करशो.
काचा पोचा पासे न आवो, ओड्डु चोट देतरशो.   अमारो. १
काचो पारो खाइ पचावो, तो अमसंग विचरशो,
सद्गुरु दर्शनज्ञान अंपथा, समजी मनने वरशो   अमारो. २

छायक थै अम पासे आवो, तो फक्कड थै फरशो;
पाणीयारा मुन्सी जेवा, पासे पग नहीं धरशो. अमारो. ३
दुनियामां जीवंतां मरीने, अम पासे संचरशो;
दुनिया भूलो तो अम पासे, नहि तो नाहक मरशो. अमारो. ४
मुज रीझवतां दुनिया खीजशे, श्रद्धावण नहीं ठरशो;
काळना मार्या क्यारे न मरशो, समजी संग जो करशो. अमारो. ५
आतमरूपे अमने जाणी, मन देह जग विसरशो;
बुद्धिसागर अंतर आनंद, आतमसंगति वरशो. अमारो. ६

आतम मनइ[ ]य वश करना.

सोरठ.

आतम ! ! ! मनइन्द्री वश करना, जबतक मनइन्द्री वश नहीं है;
तबतक नहीं है तरना.................आतम०
इन्द्र चन्द्रकी पदवी सहल है, सहल है नभमें फिरना;
मनइन्द्रीकुं जीतना दुर्लभ, सहल है पढना गुणना. आतम० १
मनइन्द्रीकें मोहसें मरना, चारगति अवतरना;
आतममें नहि होत उतरना, दुःख दावानल जलना. आतम० २
आतमज्ञानसें मनइन्द्रीकुं, वशकर मुक्ति वरना;
बुद्धिसागरब्रह्मस्वरूपी, उपयोगे सुख धरना. आतम० ३

आतमअनुभव विरला जाने.

सोरठ.

आतमअनुभव विरला जाने, मरजीवा अलमस्त फकीरो;
आतमरसकुं पाने.................आतम०
वेदागम बाइबल कुरानकुं, पढकर प्रभु न पिछाने;
राग रोष काम दूर करे तब, आपोआप पहिचाने. आतम० १

आतमज्ञानसें समता पाकर, मशगुल आतमध्याने;
ऐसा अवधूत प्रभु परमाने, आरोहे शिवस्थाने. आतम० २
नयदृष्टिए आतम सत्यकु, सापेक्षाए जाने;
बुद्धिसागरआतमरसकु, चाखे निश्चय ज्ञाने. आतम० ३

आतम !!! छोडदे मोहकी यारी.

सोरठ

आतम ! छोडदे मोहकी यारी, मोहकी यारीसें दुःख भारी,
बहोत भरी है खुवारी आतम०
जबतक मनमें मोह है तबतक, आख रहत है विकारी;
अस्थिर मनतन रहत है वाचा, समजो चित्त विचारी. आतम० १
काल अनादि भवमा भटक्यो, अब दें भ्रान्ति निवारी,
आतमज्ञानसें आतम जागो, आप हो आपकी व्हारी. आतम० २
समताभावमें निशदिन रहेना, देदो आत्मखुमारी;
समतासें मोह क्षणमें विनसे, मुक्ति मिलन है प्यारी. आतम० ३
आतम आपोआपकी यारी, कर उपयोग समारी,
बुद्धिसागर शुद्धातमरस,प्रगटे अपरंपारी. आतम करदे आपकी यारी०४

आतम सत्य है तेरी फकीरी.

सोरठ.

आतम !!! सत्य है तेरी फकीरी, राग रु द्वेष नहि कछु चिंता,
भय दुःख नहि दिलगीरी आतम०
मनकी त्यागग्रहणकी रुचि, नहि नहीं दीनता रु अमीरी,
बुद्धिसागर प्रभु मस्ताना, आपोआप हजूरी. आतम० १

अमारी फकीरी मस्ती भरेली.

सोरठ.

अमारी फकीरी मस्ती भरेली, दुनियावाने डहापण नहि मुझे.
आंतर आनंद हेली.........................अमारी०
परमातम परमेश्वररूपमां, चेतना मस्त बनेली;
दुनियादारी दूरे ठेली, ईश्वर एक छे बेली. अमारी० १
मनोवृत्ति प्रेमे थै चेली, मुख लही थै छे छकेली;
रही नहि मननी ठलाठेली, वासना वेगे मरेली. अमारी० २
स्वतंत्रता निर्भयता केलि, ज्ञान वसंत फुलेली;
बहिरातमवृत्ति न रहेली, प्रभुरूपवृत्ति ठरेली. अमारी० ३
बुद्धि थै प्रभु पामतां घेली, वृत्ति रही नहि मेली;
अनुभवप्रज्ञा प्रगटी फेली, प्रगटी वधाइ वहेली. अमारी० ४
मतपंथदर्शनथी वंठेली, चेतना ब्रह्ममां खेली;
बुद्धिसागर मस्त फकीरी, प्रगटी लाली भरेली. अमारी० ५

आतम धर्म है आनंदज्ञाना.

सोरठ.

आतम धर्म है आनंद ज्ञाना, पुण्य पाप दो धर्म है न्यारा,
जाने सो जैन माना.. .. ..आतम.
पुण्यसें सुख यश पूजा होवत, पापसें दुःख अपमाना;
आत्मधर्म दोनोसे जूदा, समजे कोउ श्याना. आतम. १
पुण्य पाप दो पुद्गलबाजी, संध्यारागसमाना;
पुण्य पाप स्वप्नेकी माया, मोहसें नाहि मुंझाना. आतम. २
राग त्याग दो मनका योग है, अंतरसें भिन्न जाना;
बुद्धिसागर आत्मधर्ममें, हुवा हम मस्ताना. आतम. ३

आतमनूर.

दलाली लालनकी. ए राग.

मेरा आतम आनन्द नूर, अमीरस छायरहा,
हम लालन मस्त फकीर, अमीरस पान लहा.
आतम है परमातमारे, जो जोवे सो पाय;
आपोआपहि आतमारे, ज्ञानानन्द सुहाय. अमी० १
दुनिया भूली दिलमेरे, खोजो हजराहजूर,
प्रेमी ज्ञानीकु प्रभु मिलेरे, वरसत आनन्दनूर अमी० २
तिलमें तेल रु काष्ठमेंरे, अग्नि रहा जु समाय,
देहमें आतम प्रभु त्युहिरे, देखो नयन मिलाय. अमी० ३
ब्रह्म चिदानंदमय प्रभुरे, निरखी हुवा मस्तान,
बुद्धिसागर आतममेंरे, हुवा परमगुलतान. अमी० ४

मनुष्यो परमेश्वर दिल धरना.

सोरठ

मनुष्यो !!! परमेश्वर दिल धरना, न्याय नीतिका वर्तन करना,
धर्म कर्म आचरना मनुष्यो.
स्वार्थ वैर आदि दोषोकु, प्रगटभये परिहरना,
हिंसा न करनी जुठ न कहना, दया सत्यकु धरना. मनुष्यो. १
चोरी अरु व्यभिचार न करना, पापयुद्ध परिहरना;
जूठा सोगन कबहु न खाना, आतमघात न करना. मनुष्यो. २
दुर्गुणव्यसनोमें न फसना, सद्गुणगण दिल धरना;
बुद्धिसागर प्रभु गुरुधर्मकी, सेवाभक्ति सुधरना. मनुष्यो. ३

मनुष्यो!!! मननी प्रतीत न करशो.

राग आशावरी.

मननी प्रतीति न करशो, मनुष्यो मननी प्रतीत न करशो. ॥
मन जीत्युं मन मरी गयुं वहु, एवी अहंता न धरशो;
मार्युं कहेतां पाछुं जागे, मन विश्वासे मरशो. मनुष्यो० १
राग रोष प्रगटे ज्यांसुधी, त्यांसुधी नहीं ठरशो;
मन छे नर्क स्वर्ग भव बाजी, मन कहे तेम न करशो. मनुष्यो० २
ज्ञानी योगी तपसी संतो, !!! चेतीने संचरशो;
हुं तुं स्फुरणा' मोहे प्रगटे, मनसंगे भव फरशो. मनुष्यो० ३
ममता अहंता कामविकारो, जोइ जोइ संहरशो;
हुं ज्ञानी योगी हुं तपसी, हुं हुं मन परिहरशो. मनुष्यो० ४
मन शयताननी अकळकळा छे, पलपल उपयोग धरशो;
दुर्गुण हरशो सद्गुण वरशो, नहींतो दुःखे मरशो. मनुष्यो० ५
क्षयोपशम उपशम गुण पामी, अहंवृत्ति न धरशो;
बुद्धिसागर आतमभावे, उपयोगी थै ठरशो. मनुष्यो० ६

आतम!!! मोहने मारी नाखो,

आशावरी,

आतम! मोहने मारी नाखो, मोहथकी नहीं सुखने शांति;
प्राणांते सत्य भाखो................................आतम.
कंचनकामिनीमोह त्यजीने, आतमसुखने चाखो;
मनवच कायथी हिंसा त्यागो, आतममां मन राखो. आतम. १
परधन पुद्गल सर्व गणीने, त्यागो ममता बळापो;
बुद्धिसागरशुद्धोपयोगे, जपवो अजपाजापो. आतम. २

सद्गुरु आपतरे पर तारे.

आशावरी वा सारग.

सद्गुरु आपतरे पर तारे, मोह प्रगटतां मारे. सद्गुरु०
कंचन कामिनी मोह निवारे, दया दान दम धारे;
भक्तजनोनी चढता व्हारे, पडता न मायाजाळे सद्गुरु. १
मतपंथवासनावेगने वारे, आतमरूप सभारे,
साक्षी दृष्टायै जग चाले, शुद्धब्रह्म निज भाळे. सद्गुरु २
हर्षने शोकनीवृत्ति संहारे, ममता अहंता टाळे,
सत्य शौच समता गुण धारे, भव्यजीवोने उद्धारे. सद्गुरु ३
शुद्धातम उपयोगे म्हाले, समथी विश्व निहाळे,
कर्मकाड मत मोहने टाळे, सहु सापेक्षे विचारे. सद्गुरु. ४
पारसमणि प्रभु जग अजवाळे, ज्ञानी कर्म विदारे,
बुद्धिसागरगुरुभक्तिथी, शिष्यो प्रभु पद भाळे. सद्गुरु. ५

आतम ! दुनियाकुं भूलजाना.

आशावरी.

आतम ! दुनियाकु विसरना, रागद्वेष न जडमें करना,
समताभावे विचरना ,आतम.
जाग्रत् होता स्वप्न है मिथ्या, ऐसा ज्ञानसें माना;
स्वप्नसमी सब दुनिया बाजी, उसमें नहि मुझाना आतम. १
अलख अरूपी अज अविनाशी, आतम तु गुणखाना;
तेरा ताने मनकुं करले, निर्भय हो मस्ताना आतम. २
आपोआपकु है समजाना, मनमें नहि गभराना,
जिसका सयोग वियोग है उसका, हर्ष शोक तज ज्याना. आतम ३
शुद्धातमरूप तेरा समरलें, होवत नहि पस्ताना,
बुद्धिसागर पडछा पाया, रहा न मन अभिमाना. आतम. ४

મનુષ્યો ! હળીમળી સંપી રહેશો.

આશાવરી.

મનુષ્યો ! હળીમળી સંપો રહેશો, કર્માધીન છે સર્વે જીવો;
આતમસમ ગણી લેશો...મનુષ્યો.
સર્વજીવોના ગુણને દેખો, દુર્ગુણ સામું ન જોશો;
વૈરલેવાની ઇચ્છા ન રાખો, ટાળો મનના દોષો. મનુષ્યો. ૧
પોતાની ભૂલ પોતે જોશો, પશ્ચાત્તાપથી રોશો;
પરમેશ્વરને દિલમાં રાખી, પાપ કરેલાં ધોશો. મનુષ્યો. ૨
સત્તા લક્ષ્મીથી ન ફુલાશો, ભૂખ્યાને કંઇ દેશો;
તરશ્યાને જળ મૂર્ખને વિદ્યા, આપી મુક્તિ લેશો. મનુષ્યો. ૩
અરસપરસ અપરાધ ખમાવો, ખોટું માઠું ન લહેશો;
સર્વજીવોનો ઘાત ન કરશો, પ્રભુનો એ સંદેશો. મનુષ્યો. ૪
ચોરી જારી વ્યસન નિવારો, ન્યાય નીતિથી રહેશો;
દેશ જાતિને ધર્મના નામે, અહંપણાને ન પોષો. મનુષ્યો. ૫
સૌમાં પ્રભુને દેખો પ્રેમે, નાસ્તિકભાવને ખોશો;
સ્હાયકરો શક્તિ અનુસારે, દુઃખીને સંતોષો. મનુષ્યો. ૬
પરમેશ્વર મહાવીરને સમરો, ગુરુ સંતોને પોષો;
બુદ્ધિસાગરપ્રભુપદ પામો, એમાં નહીં અંદેશો. મનુષ્યો. ૭

આતમ !!! કોને હણો ન હણાવો.

આશાવરી.

આતમ !!! કોને હણો ન હણાવો, હણતાને અનુમોદો ન ક્યારે;
દયાધર્મ દિલ લાવો...આતમ.
મનવાણી કાયાથી જીવો, હણવા ન નિશ્ચય લાવો;
અહિંસામાં સર્વે ધર્મો, છે નિશ્ચય દિલભાવો. આતમ. ૧

दयाविनानो धर्म न कोइ, रत जीव वचावो;
दयाथकी दिलमा परमेश्वर, प्रगटे निश्चय दावो. आतम. २
दयाविनानुं वर्तन पाप ज, हिंसाबुद्धि हठावो;
कोइनु बूरु करो नहीं क्यारे !! पाठ दयाना पठावो. आतम. ३
शत्रुओनी करो न हिंसा, दिलमा दया वहेवरावो
पशुपंखीमनुरक्त न पीवो, अन्योने नहि पावो. आतम. ४
हिंसामय शयतानी राज्य त्या, वधो करो न करावो,
अहिंसाना स्वर्गराज्यमा, विचरो ने विचरावो. आतम. ५
सर्वप्रवृत्तिमाहि अहिंसा, उपयोग दिलमा लावो,
जीवता प्रभुपद पाम्यानो, लावेणो ल्यो ल्हावो आतम. ६
सेवा भक्ति कर्मो सफळा, आतमशुद्धि जमावो,
बुद्धिसागरधर्म अहिंसा, पाळो प्रेमे पळावो. आतम. ७

आतम !!! आपस्वरूपमा म्हालो.

सोरठ.

आतम !!! आप स्वरूपमा म्हाल्लो, राग ने द्वेष कर्याविण चाल्लो;
आतमसम जग भाळो आतम
प्रतिक्षण आतम ! निज यात्रामा, मोहनी वृत्ति टाळो.
चाहतुं सहतुं अमृत ल्हाणु, अंतरमा मनवाळो. आतम. १
मरण जीवनमा निर्भय थने, अहंपणाने गाळो,
नामने रुपमा निर्मोहभावे. रहीने जीवन गाळो. आतम. २
क्षण क्षण दिल महावीरने समरो, आयुष्य एळे न हारो,
बुद्धिसागर शुद्धातमप्रभु, चिदानंदपद म्हाल्लो. आतम. ३

आतम ! अहंपना नहि करना.

राग. आशावरी.

अहंपना नहि करना, आतम ! अहंपना नहि करना ॥
हम है ज्ञानी व्रतीगुणी हम, ऐसी न वृत्ति धरना;
नाम रु रूपकी अहंवृत्तिकुं, दिलमें प्रकटती हरना. आतम. १
हम है साधु अन्य असाधु, अहंकार परिहरना;
गुणीपनाका क्या अभिमाना, निरहंपनेसें ठरना. आतम. २
अष्टधा अभिमान धरना बूरा, चतुर्गतिमें फरना;
अहंपनेसें होवत मृत्यु, निरहंपनेसें तरना. आतम. ३
नाम रु रूपका त्यज अहंकारा, अनहंपनेसें विचरना;
बुद्धिसागर आतम उजागर, परमानंदपद वरना. आतम. ४

आतम ! अलखप्रदेशमां चालो.

आशावरी.

आतम ! अलखप्रदेशमां चालो, मुसाफरीनां साधन बदली;
बीजां लेइने चालो..आतम !०
घोडा बदली रथने बदली, बीजां लेइने चालो;
म्हारुं त्हारुं मोहने टाळी, ज्ञाने पंथ निहाळो. आतम. १
प्रेमीओने करी प्रणामो, आगळ यात्रामां म्हालो;
जडनुं जडने निजनुं निजने, आपी जीवन गाळो. आतम. २
दिव्य प्रकाशमां आगळ चालो, ठाठ त्यजी दो ठालो;
अनंत आनंदघनमां म्हालो, शुद्धातम गणो व्हालो. आतम. ३
दर्शन ज्ञानने चारित्ररूपी, आपोआपने भाळो;
बुद्धिसागर आतमभावे, आपोआप निहाळो. आतम. ४

॥ आतम ! प्रभु नाम समजी समरीए ॥

सोरठ.

आतम ! प्रभु नाम समजी समरीए, प्रभुना नामो असख्य विचारी;
नामरूपमोह हरीए आतम० ॥
देहमा व्यापक आतम प्रभु छे, ते हु निश्चय धरीए,
कायादिक कर्म प्रकृति माया, हुं तु तेमा न करीए. आतम. १
सर्व प्रभु नाम वाच्य छे आतम, चिदानद घट वरीए,
सर्वमा साक्षी थैने रहीए, निर्लेपी थै ठरीए आतम. २
रागने रोषमाही न प्रणमीए, उपयोगे झळहळीए;
पराभक्तिने सात्विक ज्ञानथी, आगळ जे प्रभु वरीए. आतम. ३
सग छता निःसगी रहीए, मोहवृत्ति संहरीए,
ध्याता ध्येयने ध्यान छे आतम, गुणगुणी एकत्व ठरीए. आतम. ४
आतम आनदरस पामीने, अन्यरसोमा न भळीए.
बुद्धिसागर आतम निश्चय, थाता न फेरा फरीए. आतम. ५

चेतन ! ! ब्रह्ममां प्रेम जगावो.

आशावरी.

चेतन ! ब्रह्ममा प्रेम जगावो, काया माया मोह त्यजीने,
शुद्धब्रह्म थै जावो चेतन. ॥
पद्मसुगधे कमळमा भ्रमरो, मरतो प्रेमनो दावो,
प्रेम पतगियु दीपकमा मरे, आतममा प्रेम लावो. चेतन. १
श्रवणना प्रेमे हरणने नाग ज, भान भूले दिल भावो,
आतमप्रेममा सर्व स्वार्पण, करीने प्राण गुमावो. चेतन. २
प्रभुना प्रेमनी न्यारी खुमारी, आनदघन प्रगटावो,
बुद्धिसागर आतमप्रेमी, ले तुं जीवन ल्हावो. चेतन. ३

आतम ! समताभावे विचरशो.

आशावरी.

आतम ! समताभावे विचरशो, पलपल महावीरप्रभुने स्मरशो;
मननुं कह्युं नहीं करशो......................................आतम०
अनीति दोषमां डगलुं न भरशो, दुष्टवृत्ति परिहरशो;
सुख दुःख आवे हर्षचिंतावण, आतम उपयोग धरशो. आतम. १
कर्मोदयमां साक्षी थैने, शुद्धज्योते झळहळशो;
नामने रूपनी वासना वारी, आतमशुद्धिए फरशो. आतम. २
दर्शनज्ञानचारित्रस्वरूपी, निजरूप क्षण न विसरशो;
आतम तुं परब्रह्म निरंजन, सद्व्रतधर्मे ठरशो. आतम. ३
आपोआप स्वरूप विचारो, जडमां अहंता न धरशो;
आतम कर्मनो भेद विचारी, देहाध्यासने हरशो. आतम. ४
शुद्धबुद्धिए आतम निश्चय, धारी भवोदधि तरशो;
बुद्धिसागर अलख अरूपी, चिदानंदपद वरशो. आतम. ५

स्वराज्य लायक देश.

ओधवजी सन्देशो शामने. ए राग.

स्वराज्य लायक देश खंड ते जाणवो,
ज्यां नरनारी ज्ञानी सद्गुणी होयजो;
न्याय ने नीतिथी वर्ते प्राणी जतां,
वैर तजेने नडे न कोने कोयजो. स्वराज्य. १
दारु चोरी ज्ञारी दुर्व्यसनो तजे,
खूनामरकी करे न जातां प्राणजो;
साधु संतनी सेवा करता भावथी,
करे न स्वार्थे जूठी ताणाताणजो. स्वराज्य. २

धर्मभेदथी खेद करी जे नहीं लडे,
धर्मदेशने वर्णमा समताभावजो,
कुटव रूजीयो करे न कोर्ट नहीं चडे,
सत्यने न्याये लेता साचा दावजो. स्वराज्य. ३

कोम कोममा वैर नहीं हिंसा नहीं,
मोटा न्हाना पाळे सत्याचारजो,
शक्तियोने अधर्ममा नहीं वापरे,
दया दान दम वरता नरने नारजो. स्वराज्य. ४

एकबीजाना दुःखेदुःखी जे सदा,
करवा फर्ज अरस्परस उपकारजो,
पशुपंखीने मनुष्यहिंसा नहीं करे,
प्रभुविश्वासे धारे धर्माचारजो. स्वराज्य. ५

गम खाइने अन्योनु भलु जे करे,
धरे सरलता लेश नहीं अभिमानजो;
मनवाणी ने कायाथी ज पवित्रता,
धारे निशदिन करता साचुं ज्ञानजो स्वराज्य. ६

दुष्टकर्मने केफी वस्तुओ तजे,
करे न तनमा अन्यजीवोनी चोरजो;
देश खडमा होय न धाडुपाडुओ,
प्राण पडे पण बने न कोट चोरजो स्वराज्य. ७

एकबीजाना धर्मनो द्वेष करे नहीं,
मवळाओ ज्या निर्बलने नहि खायजो,
पक्षापक्षी अन्यायो ज्या नहि रहे,
पापपथमा प्राणाते नहि जायजो स्वराज्य. ८

अपराधीओ उपर पण करुणा घणी,

प्राणांते पण करे न को व्यभिचारजो;
सती जति सन्मान घणां गुणीओतणां,
आत्मसमुं जग देखे नरने नारजो. स्वराज्य. ९

न्याय थता जनताना निर्मळबुद्धिथी,
सदा सुलेहे वर्ते सत्यप्रबंधजो;
जूलमने खून करे नहि मनआवेशथी,
करे न दोषो मोहे बनीने अंधजो. स्वराज्य. १०

सरखी रीते न्याय थता सहु लोकना,
करे न कोइ कोइतणुं अपमानजो;
शुद्धप्रेमथी मित्र बनी संपी रहे,
खमे खमावे जनो परस्पर मानजो. स्वराज्य. ११

दोषो टाळे ग्रहे गुणो परताइने,
चामडीमोहे करे न काळां कर्मजो;
काम क्रोध इर्ष्यादिकनो त्यागी बने,
प्रभु गुरुने दिलमां धारे धर्मजो. स्वराज्य. १२

ज्ञान योगने सेवाभक्ति जागती,
मन वाणी कायाने वश करनारजो;
मोहतणी शयतानीनुं ज्यां जोर नहि,
अरसपरसमां वर्ते साचो प्यारजो. स्वराज्य. १३

स्वराज्य लायक एवां ज्यां नर नारीओ,
स्वतंत्रता सुख शांति होय प्रधानजो;
बुद्धिसागर स्वराज्य आंतरबाह्यमां,
समभावे प्रगटे घटमां भगवान्जो. स्वराज्य. १४

दिलमें क्या करना अभिमाना.

आशावरी.

दिलमें क्या करना अभिमाना, सतपणाका गुण नहि पाया;
फोगट दिलमें फुलाना दिलमें.
लक्ष्मी मिली पर दान दिया नहि, मन धनमेंहि लुभाना;
सत्ता मिली समता नहि पाया, श्यानपनामें दिवाना. दिलमें. १
विद्या पढी अहंकार भया वहोत, दिलमें न प्रभुकु पिछाना;
व्रत तप जप संयम नहि पाया, देह जात शमसाना. दिलमें. २
विद्युद्वेग रु हस्तिकर्णवत्, अस्थिर सब पहिचाना;
बुद्धिसागर शुद्धातम सच, दुनिया नाटकखाना. दिलमें. ३

आतम सरीखुं सहु जग धार्युं.

राग आशावरी.

आतम सरीखुं सहु जग धार्युं, सर्वजीवोने हणु न हणावु;
हणता हर्ष न धारुं . . .आतम.
कोपर रागने रोष करु नहीं, हिंसाबुद्धि निवारु;
मुजसम जगमा सर्वजीवोनु, जीवन धारु प्यारुं. आतम. १
धर्मने जातिवर्णना भेदथी, मोहनी वृत्ति न धारुं;
वैरी उपर वैर न राखुं, शत्रुने न संहारु. आतम. २
सर्वविश्वना मानव मुजसम, समदृष्टिथी भाळुं,
समदृष्टियी सर्वजीवोना, हितमा जीवन गाळुं. आतम. ३
आतमरूपे सर्वजीवोने, देखु ने संभारु,
कर्मतणा पर्यायो शुभाशुभ, कल्पना प्रगटी वारु आतम. ४
स्वाधिकारे फर्ज अदा करी, निष्क्रिय निजने विचारु,
बुद्धिसागर दिल अजुवाळु, निजसम विश्व निहाळु. आतम. ५

आतम !!! समताभावकुं धरना.

आशावरी.

आतम !!! समताभावकुं धरना, शुभ अशुभ दो भावकुं हरना;
निज उपयोगे विहरना.........................आतम.
समतासें सब कर्म निजरना, क्षणमें केवल वरना;
शुद्धातम निजरूप समरना, पुण्यपाप परिहरना. आतम. १
क्रोधादिकका उपशम करना, उससे निश्चय तरना;
क्षण क्षणमें नहि होत हे मरना, प्रगटत अमृत झरना. आतम. २
जीवनमरणमें मोह न करना, अनासक्तिसें फरना;
बुद्धिसागरसमता शरणा, करके कबहु न डरना. आतम. ३



मनुष्यो !!! आतमधर्मने धरशो.

राग आशावरी वा सारंग.

मनुष्यो !!! आतमधर्मने धरशो, धर्मभेदथी द्वेष धरीने;
मारामारी न करशो..........................मनुष्यो !!!
मुंडे मुंडे भिन्न भिन्न मत, कोपर द्वेष न धरशो;
एकमतो कदि थयो न थाशे, धर्मयुद्ध परिहरशो. मनुष्यो. १
धर्मना भेदे मारामारी, कापंकापा न करशो;
धर्मोमांथी सत्यने लेशो, पक्षापक्षी न करशो. मनुष्यो. २
शास्त्रोमांथी साचुं ग्रहशो, मध्यस्थबुद्धि धरशो;
रागने रोष टळ्यावण लोको, आतम धर्म न वरशो. मनुष्यो. ३
महावीरसमवीतराग थवाने, समताभावे विचरशो;
मतपंथदर्शनमोहे न मुंझो, सत्यविचारे न मरशो. मनुष्यो. ४
आतमधर्म प्रगट करवाने, सर्वकषायो हरशो;
हिंसा जूठुं चोरी झारी, दुष्टपणुं दूर करशो. मनुष्यो. ५

दुर्गुण दुर्व्यसनो ने अनीति, तेमा पगलुं न भरशो;
आतमज्ञानने सद्गुण वरशो, तेथी भवोदधि तरशो मनुष्यो. ६

प्रभुमहावीरसम थावाने, सत्यविचारे विचरशो;
बुद्धिसागरआतमधर्मे, निजआतम उद्धरशो मनुष्यो ७

साचाब्राह्मण जगमां तेओ जाणवा.

ओधवजी संदेशो कहेशो श्यामने. ए रांग.

साचाब्राह्मण जगमा तेओ जाणवा,
ब्रह्मने जाणे ब्रह्मनु वर्तन होयजो;
ब्रह्मनी विद्या भणे भणावे विश्वने,
अहिंसामय विचार वर्तन जोयजो साचा. १
सत्यने जाणे सत्यने बोले सत्यनु–
वर्तन मनवाणीकायाथी थायजो,
करे न चोरी प्राण जता पण जे कदा,
व्यभिचारीनी वाटे न क्यारे जायजो. साचा. २
वीशवर्षनी उमर सुधी जे धरे,
ब्रह्मचर्यने करता ज्ञानाभ्यासजो,
लक्ष्मीना लोभी नहि संतोषे रहे,
धरता परमेश्वर उपर विश्वासजो. साचा. ३
गुणने कर्मथी ब्राह्मणपणु प्रगटाय छे,
जन्मथकी नहि आतम ब्राह्मण थायजो,
न्यायने नीति शुद्धप्रेम समभावथी,
मानवमाहि ब्राह्मणपणु प्रगटायजो साचा ४
युद्ध करे नहि दारु पीये नहीं जरा,
पशुपखी जलचरनु मास न खायजो,

देवनानामे पशुपंखीने नहीं हणे,
करे न हिंसामय यज्ञोने क्यांयजो. साचा. ५
न्हावा धोवा मात्रथी नहि ब्राह्मणपणुं,
जनोइ धरवा मात्रथी नहि प्रगटायजो;
काम क्रोधने कपट कलाना त्यागथी,
पाखंड व्हेमना त्यागथी गुण सोहायजो साचा. ६
खेती नोकरी पीलण कर्मों नहिं करे,
विद्यावण बीजीवृत्तिनो त्यागजो;
धर्मना मोहे अन्यधर्मीओ साथमां,
द्वेष धरे नहीं राखे साचो रागजो. साचा. ७
दुर्गुणव्यसनो प्राणपडे पण नहीं धरे,
अन्यजीवोने पीडे नहि तलभारजो;
जूठी साक्षी पूरे नहि निंदा त्यजे,
सात्विक पानने सात्विक ले आहारजो. साचा ८
जूठां शास्त्रो ग्रन्थो जे रचतो नहीं,
पेटनेमाटे करे न बूरां पापजो;
जाति मात्रथी ब्राह्मणना अभिमानथी,
पक्षापक्षी करे न देता शापजो. साचा. ९
सद्गुण सत्याचारथी छे ब्राह्मणपणुं,
ज्ञानविना नहि क्रियामात्रथी जोयजो;
जातिमात्रथी गुण कर्मोवण शुं वळे ?,
ढोंग व्हेमथी गुण प्रगटे नहि कोयजो. साचा. १०
सर्वनयापेक्षाए सघळा धर्मनी,
एक वात्सल्यतानो देतो उपदेशजो;

सत्यधर्मने धारे आतमशुद्धता,
हेते जेना सहु वर्ते उद्देशजो. साचा. ११
एवा ब्राह्मणने ब्राह्मणीओ विश्वमां,
सर्वलोकनुं सत्य करे कल्याणजो,
बुद्धिसागर साचा ब्राह्मण सगथी,
मोह टळेने मळे प्रभु भगवान्जो. साचा. १२

राज्याधिकारी वर्ग.

उपरनो राग.

राज्यतणो अधिकारी वर्ग ते सत्य छे,
लाच न लेवे करे न पक्षापक्षजो;
दया घणी दिलमाने सत्य वदे सदा,
वफादारने पूर्ण प्रमाणिक दक्षजो राज्य. १
क्षमाविनानी सत्तायी दोषो वधे,
सत्तामदथी थाय घणा अन्यायजो.
सत्ता मदथी निज भूलो नहि सुधरे,
मनवाणी कायानी शुद्धि न थायजो राज्य. २
व्यभिचार हिंसा चोरी जूठ्ठ तजे,
लुच्चाइने द्वेष नहीं तल्भारजो,
विनय विवेकने लघुता दिलसमता घणी,
केफी वस्तु दारनो परिहारजो. राज्य. ३
प्रजाराज्यनु श्रेय सदा जे साधतो,
जूल्म अनीति वारे याता दंडजो,
पशुपखी मानवनी शांति रक्षतो,
चोरो खूनी कोम्ने देतो दंडजो. राज्य. ४

पाप करे नहि प्राणांते पण जे कदा,
अदाकरे निज फर्जने धारी धर्मजो;
एवा सत्तावाळा ज्यां छे राज्यमां,
प्रजा अने राजाने त्यां छे शर्मजो. राज्य. ५

क्रूर अने लुच्चा स्वार्थी अधिकारीओ,
हाजीहा करनाराने बदमाशजो;
राजाने ते प्रजासंघना शत्रुओ,
लडे लडावे करे प्रतिज्ञा नाशजो. राज्य. ६

सूक्ष्मदृष्टिथी नीति न्यायने पारखे,
प्रभुविश्वासी सभ्य करे परमार्थजो;
प्रजासंघने देश राज्यना अग्रणी,
समजे शास्त्रोनां रुडां वाक्यार्थजो. राज्य. ७

धीर वीर गंभीर ने दाता सद्गुणी,
चावुं सहेतुं शुद्धप्रीति धरनारजो;
अधिकारनो उपयोग ज सारो करे,
धरे प्रजाहित सत्य विचाराचारजो. राज्य. ८

गमखाइने अपराधीओनुं करे,
भलुं अने अंतरमां रहे निष्कामजो;
गुण टाळे सर्वजीवोथी मित्रता,
बनी मध्यस्थ ज खर्चे धर्मे दामजो. राज्य. ९

सज्जनतानां लक्षण जाणे आचरे,
देश प्रजाने करे न भूपनो द्रोहजो;
उत्साही प्रेमी आनंदी बनी रहे,
करे न जूठो दुनियादारी मोहजो. राज्य. १०

एवा सत्ताधिकारी ज्यां नोकरो,
देशराज्यमां आनंद शांति अपारजो;
बुद्धिसागर शुद्धातम प्रभु पामवा,
लायक एवा अधिकारी नरनारजो. राज्य ११



आतम ! तेरी सत्यकमाणी.

आशावरी.

आतम ! तेरी सत्यकमाणी, जडकी कमाणी जूठी जानी,
तनधन है धूलधाणी आतम
मेरुसम सुवर्णके मन्दिर, पदवी इन्द्र इन्द्राणी,
शहेनशाही अमृतपानी, इन्द्रजाल सब मानी. आतम० १
सुंदर काया मन अरु वाणी, स्वप्नसमी समजानी;
ज्ञानानन्दमें सर्व समानी, समजे योगी ज्ञानी. आतम० २
अनंतवीर्य उपयोग निशानी, अनुभवसें दिल मानी,
बुद्धिसागर दिल मस्तानी, भया ऋद्धि गुलतानी. आतम० ३

आतम !!! देखो आतम नूरा.

आशावरी

आतम !!! देखो आतमनूरा, असंख्यप्रदेशी घटघट व्यापक,
आनन्दरसभरपूरा . आतम०
देहमें है ओर देहसें न्यारा, आपोआप हजूरा,
द्रष्टा दर्शन दृश्य के आप हि, निजनिजसें नहीं दूरा. आतम० १

आतम आनंदअमृत छंडके, पी नहि मोहधत्तूरा;
आपस्वभावे खेलो आतम, प्रगटे अनुभवतूरा. आतम० २

सब जगका साक्षी निःसंगा, चैतन्य ब्रह्म है शूरा;
बुद्धिसागर अलख निरंजन, व्यापक जग मशहूरा. आतम० ३

आत्मतत्त्वना ज्ञानी साचा त्यागीओ.

ओधवजी संदेशो कहेशो श्यामने. ए राग.

आत्मतत्त्वना ज्ञानी साचा त्यागीओ,
कंचन कामिनी त्यागे बाहिर् त्यागजो;
आत्मनी आसक्ति नहि अंतर् त्याग छे,
तनधन मोहना त्यागे आतमरागजो. आ० १

हिंसा जूठुं चोरी मैथुन त्यागथी,
काम क्रोध लोभादिक त्यागे धर्मजो;
गुणविण भगवां धोळां पहेरे शुं थयुं?
मुंडे लुंचे टळे न आठे कर्मजो. आ० २

ब्रह्मचर्यने रक्षे वाडो जाळवी,
धर्मक्रिया मतभेदे द्वेषनो त्यागजो;
सद्वर्तनने पूर्णप्रमाणिक जे रहे,
सात्त्विकत्यागे वधे सत्यवैराग्यजो. आ० ३

क्षमा सरलता मार्दव मुक्तिने धरे,
तपजप संयम ध्यान समाधि धारजो;
मनवाणी कायाथी शौचने धारता,
मनवचकायनी गुप्तिना धरनारजो. आ० ४

नयसापेक्षे सत्यधर्मने बोधता,
धर्मभेदथी लडे नहीं तलभारजो;
इन्द्रियतनुने मनपर काबु धारता,
द्रव्यक्षेत्रने कालभाव व्यवहारजो आ० ५
सागरवरगंभीरा धीरा वीर जे,
पांचसमितिधारक करे उपकारजो,
आतमना उपयोगे वर्ते आत्ममा,
मैत्रीआदिभावना भावे चारजो आ० ६
देवगुरुने धर्मनी श्रद्धा प्रीतिथी,
आतमशुद्धिना पाळे आचारजो;
तमोरजोगुण त्यागपणाथी त्यागता,
दुर्गुणदुर्व्यसनादिकनो परिहारजो. आ० ७
समताभावे आत्मस्वपमा म्हालता,
रागद्वेषना त्यागे त्यागी थायजो;
आत्मराज्यमा स्वतन्त्र थैने खेलता,
राजयोगने साधी घट हर्षायजो. आ० ८
ज्ञानानन्दने प्रगटावी प्रभु जे थया,
तेओने वंदे सेवे सुख थायजो,
बुद्धिसागरआनंदमंगलता वरे,
त्यागीसंतसमागम क्षण सुखदायजो. आ० ९

राज्यकोम विनाश.

राज्यकोम विणसाय, तदा तो राज्यकोम विणसाय;
क्रूर धूर्त लुचा जनो रे, आगेवानी पाय,
स्वार्थी दुर्जन अग्रणी रे, धर्मांधजनसमुदाय. तदा. १

द्वेष कुसंपने वैरथी रे, फाटाफूटने घात;
राजाव्यसनीने निर्गुणी रे, द्रोही प्रगटे जात. तदा. २
वीकण बायला बुडथलो रे, सेनापतिने प्रधान;
देशकाळ नहीं जाणता रे, मूरख ने नादान. तदा. ३
संप करतां न आवडे रे, पक्षनी ताणाताण;
राजाप्रजामां दुर्गुणो रे, हुल्लड ने तोफान. तदा. ४
राजाप्रजा ने नोकरो रे, करता पक्षापक्ष;
अन्याय जूल्म वधे घणा रे, महाजनवर्ग न दक्ष. तदा. ५
अरसपरस खाइ जवा रे, धरे विचाराचार;
एकबीजाना पक्षनी रे, करता अनीतिए व्हार. तदा. ६
आळ परस्पर दे घणां रे, करता मारामार;
कायदाओने तोडता रे, दुःख अशांति अपार. तदा. ७
हलका नीच तोफानीओ रे, थाता आगेवान;
संतसभ्य शाणाजनो रे, पामे बहुअपमान. तदा. ८
महाजनवर्गने अवगणे रे, सुलेहनीतिनो भंग;
फूट पडे लश्करविषे रे, भेद ने खेदना रंग. तदा, ९
ज्ञानी पंडित गृहस्थनी रे, थती घणी हलकाइ;
धर्मगुरुओ कुसंपीला रे, दुष्टोनी धींट्टाइ. तदा. १०
राज्यना सघळा अंगमां रे, कोमां भेदाभेद;
चोरी झारी वधे घणी रे, प्रगटे पापथी खेद. तदा. ११
देशराज्यसंघकोममां रे, लक्षण पडतीनां एह,
बुद्धिसागरधर्मथी रे, संपथी उन्नति रेह.

समजशो लोको सत्य सदाय. तदा. १२

अमारो आतम भूप भलेरो.

आशावरी

अवसर वेर वेर नहि आवे—ए राग.

अमारो आतम भूप भलेरो, राग ने द्वेषनो जेने न चहेरो;
लेतो आनंद लहेरो अमारो०
अगुरु लघुपर्याय रहेलो, गुणपर्याय भरेलो;
दुनियादारीमा डाह्यो ने घेलो, चेतना साथ मळेलो. अमारो. १
मोटामोटापंडित थाकया, अलख न जाय कळेलो,
बुद्धिसागर पूर्णानन्दी, खेले ज्ञानना खेलो. अमारो. २

अमारो अंतर आतमचेलो.

आशावरी

अमारो अंतर आतमचेलो, आप हि ज्ञानी आप हि घेलो;
खेले नवनव खेलो अमारो०
मनवाणीदेहे सुधरेलो, कर्मनी संगे मेलो,
शीखे आनंदरसना गेलो, गुरुसेवामा ठरेलो. अमारो० १
असंख्यनयदर्शनने भणेलो, निष्कामभाव भरेलो;
अतरमा उपयोगे रहेलो, गुरुसेवामा पहेलो. अमारो० २
आपगुरुरूप धरवामा वहेलो, प्रभुजीवनमय चहेरो;
बुद्धिसागर आतम मेळो, ज्योतिज्योत मळेलो. अमारो० ३

अलख अमे कोइना मार्या न मरीए.

आशावरी.

अलख अमे कोइना मार्या न मरीए, देह छे नाशी हम अविनाशी;
कोना डराव्या न डरीए.............................अलख०
नभ सहुमांही पण नहीं मरतुं, हणतां यदि फरीफरीए;
छेदाउं भेदाउ न जरीए, अग्निना बाळ्या न बळीए. अ० १
आयु खये तनु प्राण पडे तो, काळथी नहि थरथरीए;
आतमने काळ खाय न क्यारे, कोने नहीं करगरीए. अ० २
करी केशरियां निर्भय शूरा, वीर बनी संचरीए,
अंतरमां आतम उपयोगे, फक्कड थैने फरीए. अ० ३
आपोआप स्वरूप समरीए, फर्ज अदा निज करीए;
बुद्धिसागर आनंद वरीए, कर्मभर्म परिहरीए. अ० ४

अलख अमे मर्या न क्यारे मरशुं.

आशावरी.

अलख अमे मर्या न क्यारे मरशुं, अज अविनाशी अमरअजर हम;
ब्रह्मस्वरूप समरशुं.............................अलख०
देह प्राण पंचभूतमां भळशे, ठाम अमे निज ठरशुं;
सत्यने छंडी जूठुं न करशुं, भय चंचळता न धरशुं. अलख० १
पुद्गलनुं पुद्गलमां जाणी, वियोगे शोक न करशुं;
आतमवण सहु मिथ्या मानी, मोहनुं मोहने धरशुं. अलख० २
उपजे मरे सहु पुद्गलस्कंधो, साक्षी बनीने विचरशुं;
बुद्धिसागरब्रह्मसनातन, ज्ञानानन्दने वरशुं. अलख० ३

॥ अरिहंत आतम नजरे आया ॥

जिनदर्शन मोहनगारा—ए राग.

अरिहंत आतम नजरे आया, जामें मनवाणी नहीं काया रे. अरिहंत०
मनवाणीकायासें अगोचर, मिटगई मोहकी छाया;
अस्तिभाति प्रियरूप है नहि है, ब्रह्ममहावीर न्हाया रे. अरिहंत०॥ १
कर्ता अकर्ता हर्ता अहर्ता, षट्कारकमयपाया,
पूरणआनंद पूरणज्ञाने, परमब्रह्म सुहाया रे. अरिहंत०॥ २
ऐसा आतम सबका साक्षी, हु तु भेद विलाया;
बुद्धिसागर आपोआपही, परमेश्वर परखाया रे. अरिहंत०॥ ३

आतम! कर्मसें कुच्छ न डरना.

सोरठ

कर्मसें कुच्छ न डरना, आतम ! ! कर्मसें कुच्छ न डरना,
कर्मका स्वामी जागता नहि, निर्भय होकर फिरना आतम.
आतमज्ञान प्रकाशे कर्मतम, क्षणमें जिणसे समजना,
कार्यो करता निर्लेपभावे, कर्म न लें कुच्छ अपना आतम० १
आतम उपयोगे सब करता, जिसकी भीति न धरना,
करना तो पिछे कबहु न डरना, अच्छा होवत मरना. आतम० २
भय चंचलता खेदकुं हरना, आतमप्रभुकु समरना,
बुद्धिसागरआनंदवरना, आपोआपकु तरना. आतम० ३

प्रभुदर्शन घटमें पाया.

जिनदर्शन मोहनगारा, जिने कर्मकलंक पखाया रे—ए राग.

प्रभुदर्शन घटमें पाया, घट आनन्द उभराया रे. प्रभु०
आपोआप प्रभु समजाया, नामरूप नहीं माया,
पूर्णज्ञान रु पूर्णानन्दी, परमब्रह्म परखाया रे. प्रभु० १

अलख अरूपी अज अविनाशी, अनंतशक्ति सुहाया;
सबका साक्षी चैतन्य चिद्घन, परापश्यंती गाया रे. प्रभु० २
चाह अचाह न त्याग ग्रहण नाहि, आपमें आप समाया;
बुद्धिसागर शुद्धोपयोगे, आप प्रभु हो जाया रे. प्रभु० ३

आतम !!! पीजा अमीरसप्याली.

सोरठ.

आतम !!! पीजा अमीरसप्याली, जेनी घेंनथी जग भूलातुं;
प्रगटे आनंदुलाली............................आतम०
ज्ञाननी प्याली अनुभवकाफी, प्रेममशालावाळी;
ध्याननी अग्निथकी ज उकाळी, संतयोगीजन प्यारी. आतम० १
अमीरसप्याली पीतां खुमारी, प्रगटे न उतरी उतारी;
जन्ममरणनां स्वप्न टळे सहु, प्रेमे पीवो नरनारी. आतम० २
आनंदशांतिनी घेंन चढे बहु, निर्मळदिल अजवाळी;
बुद्धिसागरमस्तफकीरी, ब्रह्मखुदाइ निहाळी. आतम० ३

संतो !!! आतमरूप समरना.

आशावरी.

संतो ! आतमरूप समरना, मायासेंहै जन्म रु मरणा;
निजउपयोगे तरना..............................संतो०
कालका काल महाकाल तुं, तेरा न जन्म रु मरणा;
निश्चयनयसें बंध न मुक्ति, अंतर्दृष्टि धरना. संतो० १
आतमरूपका ज्ञान विना कबु, मिटत नहीं मोहभ्रमणा;
ज्ञान विना सबसाधन निष्फल, लाखचोराशीमें फिरना. संतो० २
आपोआपकुं जानो संतो, भवसागरकुं उतरना;
बुद्धिसागर अलख निरञ्जन, परमातमपद वरना. संतो० ३

आतम ! चारवरणरूप थावो.

आशावरी

आतम !! चारवरणरुप थावो, सद्गुणने सत्कर्मथी वर्ण ज;
समजी शिवसुख पावो आतम०
चारे वर्णने त्यागीजनोनी, सेवाथी शूद्र कहावो;
निष्कामभावे सेवा ने भक्ति, करी ल्यो शूद्रनो ल्हावो आतम० १
आतमप्रभुनु शूद्र चरण छे, पूजाय पहेलुं ते भावो,
सेवक वण कोइ स्वामी बने नहीं, शूद्र अर्थ दिल लावो. आतम० २
शूद्र बन्या पछी आतमगुणोनी, खेती ने व्यापार थावे,
मन इन्द्रियादि पशुपालनथी, वैश्यपणुं ज सुहावे आतम० ३
दोषविकारोशत्रु सामा, धर्मयुद्ध करी फावे,
मोहने जीते सद्गुणरसी, क्षत्रिय आतम थावे. आतम० ४
क्षत्रियधर्मे अरिहंत पदवी, अंतरमां प्रगटावो,
परिषह उपसर्गे स्थिर थावो, मोहने मारी हठावो. आतम० ५
रागद्वेष हण्याथी क्षत्रिय, वर्णपणे य जावो,
ज्ञान ने ध्यान समाधियोगे, केवलज्ञान जगावो आतम० ६
समरसभावे केवल प्रगटे, ब्राह्मण आप सुहावो,
बाह्यवर्णमा मुंझे ते मूरख, आतमवर्ण कमावो. आतम० ७
सत्त्वरजमने तमनी प्रकृति, कर्मथी न्यारा थावो,
त्यारे सिद्धबुद्धपरमातम, परब्रह्मने पावो. आतम० ८
मनतनवाणी साधन तेथी, आतमवर्ग जगावो.
बाह्यजगतमां वर्णना मोह, पशुवत्ने दुःखदावो आतम० ९
आतमना उपयोगे धर्म, भावना निश्चय भावो,
भावनाथी आचार प्रगटना, सम्यक्त्व द्विजत्व पावो आतम० १०
आतममा ज्ञानादिवर्णनो, करवो अभिमावो.
बुद्धिसागर आनंदरसनुं, पान करी मस्त थावो. आतम० ११

ब्रह्मसागरमां समाणी,

सहियां मुने भय लाग्यो एक दिनको. ए राग.

ब्रह्मसागरमां समाणी, नदीओ ब्रह्मसागरमां समाणी;
सागरमां भळीदर्शननदीओ, बनी सागरनुं पाणी. नदीओ०
ब्रह्म, सत्ताए एकात्मा छे, वीरप्रभुनी वाणी;
बुद्धि ध्यानसमाधि लहीने, आतममांहि विलाणी. नदीओ० । १
पंडितो वादंवादा करीने, करता ताणाताणी;
ब्रह्मसागरमां उंडा उतरतां, भूल करेली जणाणी. न० २
एकेकदृष्टिए दर्शन प्रगटयां, हठनिजपक्षनो ताणी;
सर्वदृष्टिसापेक्षाए वट, जाणंतां गुणखाणी. न० ३
सर्वे मत पंथ दर्शनमांही, समताए मुक्ति प्रमाणी;
दुर्गुण टाळी सद्गुण लेतां, पामो प्रभुनी निशानी. न० ४
मतपंथ दर्शन निर्मोही थै, ईश्वर लेजो पिछानी;
बुद्धिसागरब्रह्मसागरमां, ब्रह्मभावे भळो ज्ञानी. न० ५

प्रभो ! तुज सागर समनयवाणी.

सहियां मुने भयलाग्यो एक दिनको. ए राग.

प्रभो ! तुज सागरसम नयवाणी, सर्वदृष्टि ज्यां समाणी. प्रभो ! ! !
जेटलावचन पथो छे तेटला, नयदर्शन रह्यो जाणी;
सापेक्षे नयदृष्टि अनेकान्त,-श्रुतसागरमां समाणो. प्रभो० १
तरंगसमा मत दर्शन पन्थो, उपजे विणसे त्यो जाणी;
असंख्यनयनी दृष्टिए ध्रुवता, ब्रह्मसागरनी मानी. प्रभो० २
केवलज्ञानी महावीर प्यारी, उपदेशशैली पिछानी;
बुद्धिसागरब्रह्मसागरमां, स्नानकरी थयो ज्ञानी. प्रभो० ३

खरी ए प्रभु पाम्यानी निशानी,

सोरठ

खरी ए प्रभु पाम्यानी निशानी, सात्त्विकज्ञानने सात्त्विकभक्ति;
आनन्दओघ कमाणी खरी.
देहाध्यास रहे नहि मनमा, होय न ताणाताणी;
आखोमा अमृत दिलमा दया बहु, वृत्ति नहीं अभिमानी खरी० १
रागद्वेषनी वृत्ति हणाणी, सत्यने मीठीवाणी,
न्याय नीतिवर्त्तन गुणखाणी, समता दिल प्रगटाणी. खरी० २
अनासक्तने आतमज्ञानी, वर्त्ते सा य पिछाणी,
बुद्धिसागर जोवता सुख, कर्मयोगी मस्तानी. खरी० ३

आतम ! ! ! कर्मयोगी तव मानुं.

आशावरी.

कर्मयोगी तव मानुं, आतम ! कर्मयोगी तव मानुं. आतम.
लाखोकामिनीतोपोरचे, धीर मेरुसमजाणु,
मानापमानमा लाभालाभे, हर्ष न शोक पिछानु. आतम० १
जीवनमरणमा हर्ष न चिंता, योगीपणुं नहि छानु,
कर्तव्यो करता रहेवानु, दिल सद्गुणनु ठाणु. आतम० २
साक्षीनिःसंगभावे मस्तानु, जीवन वहे मस्तानु,
अहंवृत्तिनु बीज टहाणुं, छानो रहे नहीं भानु आतम० ३
चिदानन्दमय चेतन माणु, अनुभवमांही जणाणु;
बुद्धिसागर आतमभानु, प्हाणुं थापु मस्तानुं. आतम० ४

चावो ज्ञानानन्दपान.

चावो ज्ञानानन्दपान, अमीरसी चावो ज्ञानानन्दपान.
आतमाऽसंख्यप्रदेशे उपज्युं, अनुभववेलीसुतान;
दयामेघना जलथी सिंचाणुं, संयममंडपतान. अमी० १
चारित्रकाथो समकितचूनो, मेळवतां वधे वान;
सत्यसोपारी एकताएलची, वीडां बहुगुणवान. अमी० २
संतजनोने पानना वीडां, आपी करो सन्मान;
बुद्धिसागरपरमानन्दमां, बनी गयो गुलतान. अमी० ३

आतम !!! अनुभवभांगकुं पीना.

आशावरी.

आतम !!! अनुभवभांगकुं पीना, ब्रह्मजीवनसें जीना. आतम०
ध्यानशिलापर गुणमशाला, वाटकें करना झीना;
समताजलसें सम्यग् धोना, उपयोगे हो लीना. आतम० १
दिलप्यालामें अनुभवभांगका, आनन्दरसकुं पीना;
बुद्धिसागर आतम उजागर, प्रगटे परम प्रभु चिह्ना. आतम० २

हमेरा घरकुं हमने पिछाना.

आशावरी.

हमेरा घरकुं हमने पिछाना, आदि न अंत न देहथी न्यारा;
ज्ञानानन्द बखाना........... ....हमेरा.
बलता न जरता न खरता न पडता, असंख्यप्रदेशी माना;
काला न पीला न राता न श्वेता, लंबा न चौडा जाना. हमेरा० १

उंचा न नीचा न भारे न हलका, स्पर्श न शद्ध न ठाना;
बावन वेहार् परासें न्यारा, तुर्यातीत ठिकाना हमेरा० २
निद्रा न स्वप्न न जाग्रत् जूदा, निर्लेप नभ उपमाना;
घट घट व्यापक ज्ञानी सो समजे, पीना नहीं जिहा खाना हमेरा० ३
पिंड न खंड न पूर्ण अखंडित, अज अविनाशी सुहाना,
बुद्धिसागर ब्रह्मस्वरूपी, हमघर हममें समाना. हमेरा ४

हमने ऐंसी हवा खूब खाई.

आशावरी.

हमने ऐंसी हवा खूब खाइ, आधि व्याधि उपाधि टळी सब,
आनंदघेन छवाइ हमने०
वायुसें न्यारी अपरपारी, तिनभुवन नाहि माइ;
सबमें है वह सबसें न्यारी, भ्रांति मिटे प्रगटाइ. हमने० १
सत्यचिदानंदरससें रसाइ, ज्योतिज्योतिरूप छाहीः
जन्ममरण नहि राग न द्वेषा, उलटी अखिया सुहाइ. हमने० २
मन बुद्धि चित्त नहि अभिमाना, घटघटमेंहि समाइ;
बुद्धिसागर ब्रह्म हवा स्वच्छ, पाइ न गाता गवाइ. हमने० ३

हमेरा आतम तीर्थ अपारा.

आशावरी.

हमेरा आतम तीर्थ अपारा, दर्शनज्ञान चरणमय आतम;
सबतीरथ आधारा हमेरा०
आतम तीर्थमें नाहीं उपाधि, है नहीं मोहप्रचारा;
आतमतीर्थसें सब तीरथकी, उत्पत्ति निर्धारा. हमेरा० १

ज्ञानानन्द प्रकटता जहां है, वह तीरथ है प्यारा;
ज्ञानसमाधिसें आतमतीर्थका, ज्ञानानन्द उजियारा. हमेरा० २
आतममें सब तीर्थो समाये, जानत नाहि गमारा;
बुद्धिसागर आतमतीरथ, आपोआप विचारा. हमेरा० ३

हमेरो आतमप्रभु है प्यारो.

हमेरो आतमप्रभु है प्यारो, घटघटव्यापक जगमें विलासी;
सबमें हे सब न्यारो.... ....हमेरो०
आतमवण दिल क्षण न सुहावत, लागत जग सब खारो;
जल बिन कमल न मत्स्य न जीवत, जगजीवन आधारो. ह० १
हिंदु मुसल्मीन पारसी ख्रीस्ति, बौद्ध रु जैनमें धारो;
सर्व प्राणीमें है प्रभुआतम, उच्च न नीच नठारो. हमेरो० २
राम रहिमान अरिहंत हरिहर, नाम अनेक प्रकारो;
बुद्धिसागर ब्रह्ममहावीर, सच्चिदानंद अपारो. हमेरो० ३

आतम !!! मोहसें नाहि भरमाना.

सोरठ.

आतम ! मोहसें नहि भरमाना, मोह महाशयतानअरि है;
उसकुं न दिलमें लाना..................................आतम०
काम क्रोध मान माया लोभ रु, निन्दा मोह है जाना;
सर्वशुभाशुभ कल्पना मोह है, उसकुं न दिलमें लाना. आतम० १
जबतक दिलमें मोह प्रगटता, तबतक ज्ञान क्या ध्याना;
यावत् रागरु द्वेष है दिलमें, तावत् तुम दुःखखाना. आतम० २

मोह पराधीन है तुम यावत्, तावत् तेरा न माना;
मोहगुलामीपनासें जीवो, करते है मोहताना. आतम- ३
आतम ! छोड दें मोहगुलामी, ज्ञानसें हो सावधाना;
बुद्धिसागर आतमधर्ममें, हो जा महामस्ताना आतम० ४

हमने ऐसी समाधि लगाइ.

अ शावरी

हमने ऐंसी समाधि लगाइ, ध्यान रु ध्याताध्येयको भेद न;
मन बुद्धि विसराइ हमने०
नाम रु रूपको मोह नहि कछु, वासना सवहि विलाइ;
पिंड ब्रह्मांडको आश्रय नहि कुछ, उलटिअखिया सुहाइ हमने० १
राग न द्वेप न हर्ष न चिंता, अनतज्योति जगाइ,
अनतआनंद उलट्यो हृदयमा, मिटगइ मोहलडाइ; हमने० २
बंध न मोक्ष न जन्ममरण नहि, समता ममता न काइ;
बुद्धिसागर ब्रह्ममहावीर, परमप्रभुता पाइ. हमने० ३

खेलुं छुं हुं तो वाजीगरनी वाजी.

खेलु छु हुं तो वाजीगरनी वाजी, थाउं न राजी नराजी. खेलु०
आतमनटकी माया विलक्षण, जाणे शु ? ब्राह्मण काजी;
आतमअर्थे प्रकृति माया, ताने थ रही नाची खेलु० १
प्रकृति रही जीवोपर गाजी, ब्रह्मदासी बनी छाजी;
नि सग साक्षी आतम ईश्वर, विभवा रहियो गाजी. खेलु० २
खेल हमारा अगम अपारा, जाणे नहीं जडपाजी,
बुद्धिसागर आतमखेलो, खेलतो थयो राजी. खेलुं० ३

हमने ध्यानपतंग उडाया.

आशावरी

हमने ध्यानपतंग उडाया, उलटोअखियांसे देखत हम;
सुरतातान लगाया.....................हमने०
अनुभवज्ञानकी दोरी लंबी, उसका पार न पाया;
आतमगगनमें उंचा उडता, आनंदलहेरे सुहाया. हमने० १
श्रुतज्ञानका दीपक साथे, बुद्धिप्रकाश वढाया;
बुद्धिसागर केवलज्ञानकी, ज्योतिमें ज्योति समाया. हमने० २

आतम!!! तुम सबसें हो न्यारा.

आशावरी.

आतम तुम सबसें हो न्यारा, नामरूपस भिन्न निरञ्जन;
चिदानंदआधारा...........................आतम०
नामरूपमें आतम तुम नहि, यशअपयशसें न्यारा;
दुनिया देखत सो नाहि तुम हो, आप स्मरी लें प्यारा. आतम० १
पुण्य पाप फल सुख अरु दुःखसें, मानामानसें न्यारा;
उच्च नहि अरु नीच नहीं तुम, मोहका सब है पसारा. आतम० २
अज अविनाशी अलख अरूपी, ज्ञानसें है उजियारा;
बुद्धिसागर परब्रह्म तुम, मिटगया सब अंधियारा. आतम० ३

हमने अनहदवाद्य बजाया.

सोरठ.

हमने अनहदवाद्य बजाया, तनमनना भान ज विसराना;
पार न ध्वनिका पाया.... ....हमने०
सर्ववृत्तियां तन्मय होकर, आप हि आप सुनाया;
आप हि गाया आप हि पाया, अनहद आनंद छाया. हमने० १

षट् चक्रोकु भेद गगनगढ, जिननिशान चढाया;
ध्याता ध्येय ह ध्यान कछु नहि, कथनीमें नहि आया हमने० २
अनहद ध्वनिसें अग्रे जाकर, परापारकु पाया;
बुद्धिसागर पेखे सो माने, गानेसें न जनाया हमने० ३

आतम !!! निजनी सेवा सारी.

आशावरी राग

आतम !! निजनी सेवा सारी, निजभक्ति गुणकारी आतम०
आतमशुद्धिअर्थे द्रव्यने, भावथी सेवा सारी,
देहदेवळमा आतमदेव छे, भक्ति करो भयहारी आतम० १
मनवचतनुनुं रक्षण पुष्टि, मन नसंयम धारी;
आतमने परमातम करवा, समजो अपेक्षा विचारी. आतम० २
गुण प्रगटाववा दुर्गुण हरवा, निजआतमहितकारी;
उपकार सत्कर्म भक्तिने सेवा, आतमशुद्धिकारी. आतम० ३
आतमनी करे आतम सेवा, भक्ति अपेक्षा धारी;
आतमभक्तिए आतम प्रगटे, परमातम सुखकारी आतम० ४
अष्टांगयोग ते आतमभक्ति, चरणसेवा जयकारी,
खानपानादि सघळी प्रवृत्ति, सेवारूप छे सारी. आतम. ५
सम्यग्ज्ञानीनी सर्वप्रवृत्ति,-वृत्ति छे सेवा प्यारी;
बुद्धिसागरआतमप्रभुनी, सेवा असंख्यप्रकारी. आतम० ६

हमारा भजनोकु नहि गाना.

आशावरी.

हमारा भजनोकु नहि गाना, हम है पागल सदा दिवाना;
तुमभी होगा दिवाना हमारा०
कच्चापारद खाना जैसा, जैसा सोमल खाना,
ऐसे ज्ञानविना भजनोकुं, गानेसें पस्ताना. हमारा० १

गात गवैया भजनोकुं बहुत, ऐसा न होत है गाना;
वही भजनहै अनहद्ध्वनिका, मन होवत मस्ताना. हमारा० २
ज्ञान ग्रहणकर पदगानेसें, शिवपुर झटिति जाना;
बुद्धिसागर पक्का जो है, उसका अच्छा गाना. हमारा० ३

हमकुं जाने सो है ज्ञानी.

आशावरी.

हमकुं जाने सो है ज्ञानी, जाने क्या हमकुं अज्ञानी;
हम आतम गुणखानि..................................हमकुं.
दुनिया शोधे सो अज्ञानी, समजे क्या दुनिया दिवानी;
हमकुं जाने सो हमकुं पावे, लेना हमकुं पिछानी. हमकुं० १
हम नहि तनुमनधनजडवस्तु, अग्नि वायु न नभ पानि;
बुद्धिसागरशुद्धातमकी, अंतर्ध्वनि यह जानी. हमकुं० २

अब हम अवधूत होकर फिरते.

आशावरी.

अब हम अवधूत होकर फिरते, आतम अवधूत मस्तदशामें;
नाहीं जीते नहीं मरते..................................अब०
दुनिया दिवानी च्हाये सो वोलो. हम नहीं कोउसें डरते;
आतममें हम मग्न भये है, आतम सहेलकुं करते. अब० १
सबसें न्यारी गति हमारी, उलटी नदी उतरते;
वर्तन पागल जेंसा हमारा, नक्कल करे सो मरते; अब० २
कबहु हमारी संग न करना, करते सो न उगरते;
बुद्धिसागर आनंदघन हम, आतम आप समरते. अब० ३

मनुष्यो !!! करशो परउपकारो.

आशावरी

मनुष्यो !!! करशो परउपकारो, तन मन ऐळे न हारो. मनुष्यो० ॥
अवसर मळियो फेर न आवे, मळे न मनु जन्मारो,
गयो अवसर पाछो नहीं आवे, करी ल्यो जन्म सुधारो. मनुष्यो० १
दुर्गुण दुर्व्यसनोने निवारो, सतसमागम धारोः
दोष उवेखी सद्गुण देखो, दुःखीना दुःख टाळो. मनुष्यो० २
मोह शयताननुं कह्यु न करशो, करशो धर्मविचारोः
उपकारनो प्रतिवदलो न इच्छो, काम प्रगटतो मारो. मनुष्यो० ३
काया माया अहंता न करशो, धरशो धर्माचारो,
दान दया दम सम आचरशो, निर्दोषजीवन गाळो. मनुष्यो० ४
परपीडाथी पाप छे मानो, निजपरिणतिने सुधारो,
बुद्धिसागरप्रभुभक्तिथी, निजआतमने उद्धारो. मनुष्यो० ५

हमारा वर्तन सबही तमासा.

आशावरी.

हमारा वर्तन सबही तमासा, करनी रहेणी सची न झुठी
जलनिधमें ज्यु बतासा हमारा०
हम सर्वज्ञ नहीं है सतो !!! संतोके हम दासा,
लिखे पढे हम बालक खेला. मानु तोतडी भाषा. हमारा० १
हमकु हम न पिछान शकेंहे, स्वप्नसरीसा विलासा,
दुनिया हमपर फजकु न रखना, गुरुपनका विश्वासा हमारा० २
गति हमारी प्रभु जानत है, हम है प्रभुका प्यासा,
बुद्धिसागरप्रत्यक्षप्रभुका, देखा दिव्य तमासा. हमारा० ३

आतम!! सद्गुणसें सुख पाता.

आशावरी.

आतम सद्गुणसें सुख पाता, दुर्गुणसें दुःख पाता. आतम.
सद्गुणसें किंमत है जनकी, होता जगप्रख्याता;
राज्य रु लक्ष्मीकी किंमत नहि कछु, दुर्गुणी खत्ता खाता. आतम० १
दुर्गुणी व्यसनी चक्रीकुं कोउ, अंतरसें नहिं च्हाता;
इसलिये दान दया दम संयम, ज्ञान विवेक महत्ता. आतम० २
सद्गुण वण तन धन यौवनकी, किंमत कोडी न शाता;
शेठ राजा हुये तोभी कुच्छ न, प्रगटत दिलमें अशाता. आतम० ३
न्याय नीति भक्ति उपकार न, क्या दिलमें हरखाता;
मोहमें माता जडमें राता, एकदिन नर्कमे जाता. आतम० ४
यत्र तत्र सद्गुण पूजाता, सद्गुणी नहि परखाता;
बुद्धिसागरसंतकी संगसें, गुणगण दिल प्रकटाता. आतम० ५

प्रभु म्हने कोटि उपाये उगारो.

आशावरी.

प्रभु म्हने कोटि उपाये उगारो, लखुं उपदेशुं भूल हजारो;
अवगुण दोष अपारो . . .. .प्रभु.
बालक उन्मत्त जेवो बनीने, करुं हुं जे जे लवारो;
सत्य जूठ सहु जाणे प्रभो तुं, शुद्ध करीने उद्धारो. प्रभु० १
एक पलकमां त्हें उद्धार्या, मुज सरीखा हजारो;
मुज दोषो सामुं नहीं जोशो, फक्त दया करी तारो. प्रभु० २

गाडो घेलो पण भक्त हुं तारो, तुं छे प्राणथी प्यारो;
अलख अकल तुजने न लखु हु, तेमा नहीं दोष मारो. प्रभु० ३
तुज स्मरता यत्न करंता, प्रगटे दोष विकारो;
सवळाथी नवळो हारे त्या, करशो न्यायविचारो. प्रभु० ४
अज्ञानी हु भूलुं तेमा, भूलनो हेतु सुधारो;
तुज शरणे आव्या पछी मारो, तुज शिर छे सहु भारो. प्रभु० ५
तारो ठूवे ने ज्ञानी भूले, हु अज्ञान छु वाळो,
तारो उगारो तमारो आधारो, दोष हवे शुं मारो प्रभु० ६
जेवी बुद्धि तेवी रीते, थयो हुं महावीर तारो,
बुद्धिसागर व्हारे आवो, अरजी उरमा स्वीकारो. प्रभु० ७

जगत्में हम है सबसे नठारा.

आशावरी.

जगत्मे हम है सबसें नठारा, सनजीवोकी निंदा जबतक;
तबतक हमही नठारा जगत्में०
जबतक राग रू रोष प्रगटत है, तब तक दोष अपारा,
गुणीपनाका क्या अहंकारा, जबतक दिलमें विकारा जगत्में० १
निंदोतो सब हमकुं निंदो, धो हमकु विकारा,
हमही हमकु निंदत गहेत, पश्चात्ताप अपारा. जगत्में० २
ज्ञानपनाका गर्व क्या करना, हम हैं मूर्ख गवारा,
बकवादी हम करत लवारा, हमपर मोहसवारा. जगत्में० ३
परब्रह्ममहावीरप्रभुका, शरण किया सुखकारा,
बुद्धिसागरसतजनोकी, सगतसें है उद्धारा. जगत्में० ४

जगतमें सबसें हम है सारा.

आशावरी.

जगत्में सबसें हम है सारा, सर्वद्रव्य निजधर्मसें सारा;
कोउ न वर्ते नठारा.................. ....जगत्में ॥
सापेक्षासें सारा नठारा, मन बुद्धिसें विचारा;
जड चेतन निजभावसें सारा, ए सब है व्यवहारा. जगत्में० १
चिदानंदमय ब्रह्म प्रभु है, आतम हम निर्धारा:
जड जग करत है सेवा हमारी, निश्चयसें अविकारा. जगत्में० २
निश्चयनयसें कर्म न हम है, हम है आतम प्यारा;
अनंत गुण पर्यव एकरूपी, राग रु रोषसें न्यारा. जगत्में० ३
देना नहि आतम धिकारा, ज्ञानानंद आधारा;
बुद्धिसागर आतम हम हैं, निश्चय उपयोग धारा. जगत्में० ४

हमारा मनका नहि है ठिकाना.

हमारा मनका नहि है ठिकाना, गति हमारी हमहि जाने;
हमकुं विसरजाना.....................................हमारा;
गुरुगमविन मत्कृतभजनोपर, आकीनकुं नहि लाना;
जिनवर गणधर ऋषि मुनिवरकी, वाणी करणी प्रमाना. हमारा०१
बुद्धि हमारी नयबहुरंगी, प्रभुपरभये है दिवाना;
हम है हमारे तानमें रसिये, हमकुं न छेडो श्याना. हमारा० २
हमकुं कबहु नहिं अनुसरना, करना महावीरध्याना;
बुद्धिसागर अनंत ब्रह्महै, आपोआप मकाना. हमारा० ३

दयासम धर्म न को जग सारो.

राग आशावरी. सोरठरागेणाऽपिगीयते.

दयासम धर्म न को जग सारो, दयाविना प्रभु दर्शन नहीं छे;
हिंसाबुद्धिवारो दया०
दयाविषे सत्य तप जप भक्ति, प्रमाद जाय विचारो,
दयासमो कोइ धर्म न मोटो, जीवदया चित्त धारो. दया० १
रहेमविना रहिमान मळे नहीं, दया प्रभुरूप धारो;
द्रव्यने भाव दयाथी अळगा, तेना अवर्णवादारो दया० २
दयाविनानुं सत्य छे जडुं, न्याय ते मोह विकारो;
अहिंसानी वृत्तिप्रवृत्ति, वरता धर्माधारो. दया० ३
सत्य दयावंत जगमा सवळा, निर्दय नवळा धारो;
हिंसक लोकोथी प्रभु दरे, मानवभव नहीं हारो दया० ४
प्रभुमहावीरे दयाधर्मथी, कीधो विश्वोद्धारो.
बुद्धिसागरदयाधर्मथी, लोको ! ! ! आतम तारो दया० ५

क्षमापना.

आपस्वभावमा रे अवधूत सदा मगनमें रहेना. ए राग.

सघळा जीवने रे, आज खमावुं साचा भावे,
क्रोध मान माया ने लोभे, जीवो हण्या हणाव्या,
सताव्या परिताप्या जे में, आजे सर्वे खमाव्या. सघळा० १
अज्ञाने कामे जीवोनु, बूरुं कीधुं भावे,
लाखचोराशी योनि भमता, खमावुं समतादावे. सघळा० २
द्वेष मनमा अन्यजीवोना, घातक कर्या विचारो,
द्वेषविचारोने गर्हु छुं, त्यागु हिंसाचारो. सघळा० ३

एकेन्द्री आदिथी मांडी, पंचेन्द्री सहुजीवो;
करी करावी हिंसा निंदु, गर्हुं पामी दावो. सघळा० ४
हिंसा जूठुं चोरी झारी, कुकर्म निंदु जाणी;
परिग्रहयोगे हिंसा कीधी, खमावुं धर्मने आणी. सघळा० ५
युद्धादिकहिंसककार्योथी, मार्या जीव खमावुं;
धर्मभेदना द्वेषे मार्या, पश्चात्तापे भावुं. सघळा० ६
गृहावासमां सर्वारंभे, मारेलाने खमावुं;
त्यागावस्थामां परमादे, संताप्याने शमावुं. सघळा० ७
मिथ्याविरतिकषाययोगनां, निंदु गर्हुं पापो;
आस्रवकर्मो निंदु गर्हुं, माफी जीवो आपो. सघळा० ८
लडाइ टंटा द्वेषने निंदा,-करी जीव संताप्या;
रागद्वेषे कामे मुंझी, जीवो जे जे काप्या. सघळा० ९
पशुपंखी जलचर संताप्यां, कूडां दीधां आळो;
हांसी चाडीचूगली कीधी, दीधी द्वेषे गाळो. सघळा० १०
दुःखियाना न्याये अन्याये, हिंस्या जेजे प्राणी;
अधर्ममांहि धर्मने मानी, अशुद्धपरिणति आणी. सघळा० ११
अधर्म कीधा सघळा निंदु, कीधा दुष्टविचारो;
इर्ष्याथी पापो जे कीधां, निंदु पापाचारो. सघळा० १२
अनंतभवनां पापो निंदु, वैरनी वृत्ति त्यागुं;
रागकामनी वृत्ति त्यागु, सर्वने पाये लागुं. सघळा० १३
निमित्त थैने अन्यजीवोने, कर्मो जे बंधाव्यां;
मनवाणी कायाथी कंइ पण, मनडांने दुहाव्यां. सघळा० १४
मैथुनआदिकर्म जे कीधां, खेती आदि कर्मो;
तेथी जीवो जेह विणास्या, उपदेश्या जे भर्मो. सघळा० १५
शरणे आव्या जीवो मार्या, साधु हण्या हणाव्या;
देवगुरुने धर्मनी निंदा, कीधी जीव सताव्या. सघळा० १६

जीवोने शत्रुओ मार्या, तेओने ज मराव्या,
मार्याने वळी अनुमोद्या जे, जाणे तेह समाव्या. सघळा० १७
आजलगी कोइ जीवो उपर, रही वैरदुर्बुद्धि,
निंदु गर्हु सघळुं भावे, करु आतमनी शुद्धि सघळा० १८
देवोने देवीओ निंद्या, निंदु गर्हु दोषो;
गुरु उपर प्रगटेला निंदु, गर्हु सघळा रोषो सघळा० १९
जूठी साक्षी पूरी निंदु, धरु न मनआसक्ति,
देवगुरुने धर्मसतनी, करी जे जे कुभक्ती. सघळा० २०
मित्र गुरु स्त्रीद्रोह कर्या जे, गुण उपर अपकारो,
धर्मशास्त्रने जूठा मान्या, निंदु मिथ्याचारो. सघळा० २१
अरसपरस सहु जीव लडाव्या, धर्मे हिंसा कीधी,
पराइ ऋद्धि ओळवी लीधी, हिंसकरीति लेधी सघळा० २२
वीतराग मुनिवरने सघनी, साक्षीए ज खमावुं;
सर्वेजीवो छे आतमसरखा, निश्चय मनमां लावु सघळा० २३
अन्यजीवोना बहु अपराधो, कीधा जे आभवमां,
यादी लावी घणु खमावुं, रहु नहि भवदवमां सघळा० २४
अन्यजीवोना दोषो देखी, जगमां हलका पाड्या,
आळो दीधा अनुमानेने, शुभपरिणाम नसाड्या. सघळा० २५
वैरतणो प्रतिबदलो लेवा, कीधा कावादावा,
अन्योनी अपकीर्ति करवा, कीधा जे मनभावा. सघळा० २६
नातजात ने देशकोममां, सघराज्यमां कीधा,
नारद जेवा कामो जे जे, ते ते खमावी लीधा. सघळा० २७
साधुसाधुने ज लडाव्या, धर्मीओने अडाव्या,
सरलजनोने बहु सपडाव्या, क्रोधे खूब चडाव्या. सघळा० २८
रहस्य छिद्रो मर्म प्रकाश्या, विश्व सर्वने विणास्या,
अन्यजीवो दुःखी बहु थाने, एवा मार्गे प्रकाश्या. सघळा० २९

मनवाणीकायाथी दुष्कृत, कीधां जे जे कराव्यां;
अनुमोद्यां ते निंदु गर्हुं, याद जे आव्यां नाव्यां. सघळा० ३०
पृथ्वी पाणी वायु अग्नि, वनस्पति त्रस पाणी;
भवोभव आ भव सर्वे खमावुं, पश्चात्तापने आणो. सघळा० ३१
हिंसाना उपदेशो आप्या, अने अपाव्या संश्या;
लख्या लखाव्या हिंसक ग्रन्थो, करी खमावुं हिंसा. सघळा० ३२
रात्रीभोजन कर्मादानने, भोजनपाणीयोगे;
भोग अने उपभोगे जीवो, हणिया यंत्रप्रयोगे. सघळा० ३३
स्वार्थदंडने अनर्थदंडे, हणिया जीव हणाव्या;
खमुं खमावुं मित्रभावथी, संकटमां सपडाव्या. सघळा० ३४
शिष्यो भक्तो गुरुबंधुओ, दुष्टजनोने खमावुं;
रागने रोष करु नहि कोथी, वीरप्रभु दिल ध्यावुं. सघळा० ३५
संघ चतुर्विध वर्ण चतुर्विध, सर्वजातना त्यागी;
खमुं खमावुं हस्त जोडीने, देजो सर्वे माफी. सघळा० ३६
परमेश्वर दे मुजने माफी, रहुं नहीं अपराधी;
बनुं सदा हुं निरपराधी, करुं न आधि उपाधि. सघळा० ३७
प्रभुमहावीरवचनामृतथी, जागी उठयो जाणी;
क्षमापना छत्रीशी रची शुभ, निज आत्मार्थप्रमाणी. सघळा० ३८
सर्वे जीवो खमुं खमावुं, वैर न कोइथी रहियुं;
सर्वे जीवो मित्र सरीखा, क्षमापना दिल वहियुं. सघळा० ३९
मेसाणामां करी चतुर्मास, क्षमापना शुभ कीधी;
क्षमापना जे करशे जीवो, तेनी थाशे सिद्धि. सघळा० ४०
वैरविरोध रहित जग थाओ, शांतिमंगल वरशो;
बुद्धिसागर आनंद पामी, सिद्धबुद्ध थै ठरशो. सघळा० ४१

साधुभाइ!!। मनवशकरणा न सहेला.

सोरठ

साधुभाइ मनवश करना न सहेला, ज्ञानी तपसी गए बहुत लपसी;
मनमारण मुश्केला साधु०
हरिहरब्रह्माव्यास न जीते, सबमें है सबसें अकेलाः
अनेकरूपसें मनके वश जग, खेले अगणित खेला. साधु० १
कबहुक दीनने कबहु मर्द है, कबहु ठक्ष बहकेला;
कबहु आतमवश होइ वर्ते, छटकी करत बहुफेला. साधु० २
मन ओर आतम भिन्न हुवे तब, मिलता है मुक्तिमहेला,
बुद्धिसागर आतमजीतसें, मन नाहि दस रु महेला. साधु० ३

आतम!!। जग सब जूठो बाजी. ॥

राग आशावरी.

आतम! जग सब जूठी बाजी, होवत कहा वहा राजी. आतम०
मन बाजीगरकी सब बाजी, होना क्या राजी नराजी,
पढकर भूले पंडित काजी, कोउकु कबहु न छाजी. आतम० १
मोहके वश क्या होवत पाजी, रहे न चक्री गाजी;
बुद्धिसागरप्रभु अपनाजी, दूजा सब स्वप्नाजी. आतम० २

आतम! आपकुं आप जगाना.

सोरठ

आतम! आपकु जगाना, मोह प्रमाद शयतान भगाना;
आपमें मनकु लगाना . आतम०

केवलज्ञानस्वरूपी सच्ची, जागृति है तुज श्याना;
तुर्यावस्था जागृति वह तुज, अनंतज्योतिका स्थाना. आतम० १
जाग्रत होकर उठो चेतन! तुम हो जगमें प्रधाना;
वहुत गइ अव अल्प रही है, करलो अमृतपाना. आतम० २
जाग्रत् होतें नहीं अंधियारा, ज्ञाननिशान चढाना;
गगनके गढमें अनहदधूनका, वाद्यकुं वेगे वजाना. आतम० ३
अनुभव पाकर गुरुगमज्ञाने, आपोआपकुं गाना;
बुद्धिसागर आतमआनंद-रसमें है मस्ताना. आतम० ४

चिदानंदरूप संभारो रे.

निशानी कहा वतावुंरे. राग गोडी. ए राग.

चिदानंदरूप संभारो रे, करी वश मनवचकाय. चिदानंद०
एकेक इन्द्रिय वश थतां रे, प्रगटे दुःख अनंत;
पांचे इन्द्रिय वश थतां रे, आवे नहीं भव अंत. चिदानंद० १
शुभाशुभमनपरिणति रे, रोके सुख अनंत;
सर्वेच्छाओ रोधतां रे, आत्मधर्म प्रगटंत. चिदानंद० २
क्रोध मान माया अने रे, लोभ प्रगटतो वार;
कामविषयना स्वार्थने रे, वारे भवोदधिपार. चिदानंद० ३
हिंसा जूठ चोरी अने रे, मैथुनवृत्ति निवार;
अनंतसुखसागरप्रभु रे, प्रगटे शक्ति अपार. चिदानंद० ४
आतम आपस्वरूपमां रे, रहो उपयोगे नित्य;
बुद्धिसागरपूर्णता रे, प्रगटे सत्य पवित्र. चिदानंद० ५

आनंदरस अमृत चाखो रे.

राग गोडी. निशानी कहा बतावुं रे. ए राग.

आनंदरस अमृत चाखो रे, पुद्गलरस करी दूर. आनद०
आतमरस पाम्या पछी रे, पुद्गलरस न चहाय,
आतमरसअनुभव थता रे, पुद्गलरस टळी जाय. आनद० १
कोटि उपायो केळवे रे, टळे न जडरसराग,
आतमरसने स्वादता रे, सहेजे जडरसत्याग. आनंद० २
आत्मज्ञानथी प्रगटतो रे, आतमरस भरपूर;
क्षणिक जडरस पाछळे रे, दुःख विपत्ति हजूर. आनद० ३
देहइन्द्रिय मन शातथी रे, सुख न शाति लगार,
आतमरस पाम्या पछी रे, रहे न जडरस प्यार. आनंद० ४
आतमरस छे आतममा रे, आतमनी नहीं बहार्,
बुद्धिसागर आतममा रे, आनंद अपरपार. आनंद० ५

प्रभुका धर्म सो धर्म हमारा

राग कान्हरो.

प्रभुका धर्म सो धर्म हमारा, माया धर्म सो धर्म है न्यारा;
प्रभुका वर्ण सो वर्ण हमारा, प्रभुका रूप सो रूप हमारा १
प्रभु हमारा दिलमें समाया, प्रभुके रूपमें हमभी समाया,
प्रभु सो हम है हम सो प्रभु है, सत्तापेक्षा एक विभु है. २
प्रभुकी जाति वह हम जाति, देह जाति है मिथ्याभ्रान्ति,
प्रभु है अरूपी हम है अरूपी, सापेक्षातो रूपारूपी. ३
प्रभु है जैसा हम है तैसा, प्रभुका देशा हमका भी देशा,
बुद्धिसागरप्रभुसंदेशा. सुनते दिलमें रहा न अदेशा. ४

कंचनकामिनीमोहकुं वारो.

कान्हरो.

कंचनकामिनीमोहकुं वारो, शुद्धातमकुं दिलमां धारो;
बाहिरभोगकी इच्छा होवे, तबतक प्रभुकुं कोइ न जोवे; कं० १
अंतर्कामका नाटकखाना, तबतक होत न प्रभुसें ताना;
जबतक चामडीरंगमें प्रीति, कामोदयकी चेष्टाप्रवृत्ति. कं० २
तबतक आतमरसकुं न स्वादो, छंडो मोहका सब उन्मादो;
जबतक स्वप्नमें कामकी चेष्टा, तबतक होता नहि उपदेष्टा. कं० ३
स्वप्नमें देहकी धातु जो जावे, तबतक योगी न कोउ कहावे;
आतमरसआस्वाद जो प्रगटे, कामके स्वप्नादिक सब विघटे. कं० ४
आतमरसका आतमदरिया, आतमरसस्वादी जन तरिया;
बुद्धिसागर अनुभववरिया, मुनिवर योगी बने केशरिया. कं० ५

चेतन !!! विषयनी इच्छा निवारो.

अवसर बेर बेर नहीं आवे. आशावरी.

चेतन !!! विषयनी इच्छा निवारो, विषसम विषयना भोगे न शांति;
आवे नहीं भव आरो..चेतन०
ज्यांसुधी मनमां विषयनी इच्छा, त्यांलगी स्थिरता न पावो;
वर्णगंधरसस्पर्शने शब्दना, मोहे न मनने मुंझावो. चेतन० १
पांचे इन्द्रिय मनना कामे, प्रगटे सर्वकषायो;
डगले डगले दुःख अनंतां, अनुभव दिल प्रगटायो. चेतन० २
जड पुद्गलमां ममता अहंता, सुखबुद्धि संसारो;
जडचेतन जगमांही समता, प्रगटे तो भवपारो. चेतन० ३

विषयरसे व्हाय। हडकाया, पामे दुःख अपारो;
चेत चेत वैराग्यने धारी, छंडो काम तपारो. चेतन० ४
स्वप्नविषे पण विषयनी इच्छा, प्रगटती झट वारो;
बुद्धिसागर आतमशुद्धि, थाता घट उजियारो. चेतन० ५

मुनिवर !!! मौनपणे व्रत पाळो

आशावरी.

मुनिवर ! ! ! मोनपणे व्रत पाळो, आतमना उपयोगे रहीने,
रागने द्वेषने टाळो मुनिवर०
पंचमहाव्रत पंचाचारने, अष्टागयोगथी चालो;
समभावे रही आतम म्हालो, मूको मोहनो चाळो मुनिवर० १
काम अहंता ममता मारो, प्रगट्या शत्रु सहारो
द्रव्यभावथी सगने टाळो, वासनाबीजने बाळो. मुनिवर० २
त्रण्यगुप्ति धरी आनंदवेने, आतमजीवन गाळो,
बुद्धिसागर शुद्धोपयोगे, परमेश्वर दिल भाळो. मुनिवर० ३

खरां ए शिक्षित नरने नारी.

आशावरी

खरा ए शिक्षित नरने नारी, भाषा अनेक भणे अभिमान न,
दुर्गुण व्यसन निवारी खरा.
हिंसा करे नहीं जूठु न बोले, थाय नहीं व्यभिचारी;
चोरी करे नहीं नीतिए वर्ते, वर्ते सदा उपकारी खरा० १
पोपटपेंठे भाषाज्ञाने, वृत्ति न टळती नठारी,
भण्यागण्या वक्ताओ यता — दुर्गुण रहेता भारी खरा०

सद्वर्तन वण पास थतां शुं ? फोगट छे हुशियारी;
बाह्यसुधारो मनमां कुधारो, दुष्टवृत्तिने विकारी. खरां० ३
प्रभुविश्वासी सत्य प्रकाशी, वैर झेर परिहारी;
मातापितानी सेवा करे बहु, कार्य करंता विचारी. खरां० ४
मतमतभेदे खेद करे नहीं, संपी बने सहकारी;
सद्गुरुसेवा करे बहुप्रीते, धर्माचार विचारी. खरां० ५
रागद्वेषनी परिणति वारी, थावे धर्मविहारी;
मनवचकायापवित्रता धारी, दिलमां दयानी क्यारी. खरां० ६
अवगुण उपर गुणने करे जे, सात्विकभक्ष्याहारी;
सात्विक पान करे विवेके, प्रमाणिकगुणधारी. खरां० ७
मनवाणीकाया केळववी, केळवणी ए सारी;
कहेणी प्रमाणे रहेणी नहीं ज्यां, भणतरमां भूल भारी. खरां० ८
सेवामां अर्पाइ जावुं, निश्चय ए निर्धारी;
निर्दोषदृष्टि समताचारी, धर्म्यजीवन अवतारी. खरां० ९
दिलनां सागर जळसम निर्मल, पृथ्वी क्षमा गुणधारी;
वायुपेरे लघुताथी हलकां, अग्निसमां तेजधारी. खरां० १०
नभवत् निःसंगी निर्लेपी, मेघनदी अनुसारी;
गुणगणरागी हृदयनी खूली, मूकी सर्वे बारी. खरां० ११
जडरस भोगी पण जे अयोगी, आतमरस अधिकारी;
आतमशुद्धि करे गुणीयारी, जगमांही बलिहारी. खरां० १२
सात्विक केळवणी पामेलां, देवदेवी नरनारी;
बुद्धिसागर प्रभुजयकारी, शिक्षण शिवसुखकारी. खरां० १३

आतम !! ताहारो था उपयोगी.

सोरठ.

आतम !! ताहरो था उपयोगी, नित्य निरंजन निर्मलज्योति;
पुद्गलयोगे अयोगी आतम०
पुद्गलनाशी तुं अविनाशी, देहरोगी तु अरोगी;
पुद्गलरूपी तुं छे अरूपी, ज्ञानानंदनो भोगी आतम० १
काल अनादि अनंत तु आतम, हर्षवत नहीं शोकी;
वर्णगंधरसस्पर्श न शब्द न, अलखदशा तुज नोखी आतम० २
उपयोग धर्म छे उपयोग किरिया, मोहे था नहीं दोगी;
बुद्धिसागरब्रह्मस्वरूपी, उपयोगे प्रभुयोगी आतम० ३

आतम !!! निज उपयोगे रहेशो.

सोरठ.

आतम !!! शुद्धोपयोगे रहेशो, मोहपरिणति प्रगटी वारो;
उपयोग धर्मने वहेशो आतम०
उपयोगे कर्म अनंता खरता, निजगुण निजने देशो,
त्रणभुवन शहेनशाही छे तुजमा, परमो शिवसुख लेशो आतम० १
अनत आनद आतममाही, लेश परो न अरेशो;
बाहिरबुद्धि तजी अन्तरमा, शुद्धबुद्धि मां भरेशो. आतम० २
असंख्यतीर्थंकरनो पंथो, आतमशुद्धमन्थो,
बुद्धिसागरशुद्धातममा, उपयोगे ठरा बेसो. आतम० ३

आतम! आतमशुद्धिने धारो.

(आतमशुद्धि.) सोरठ.

आतम ! आतमशुद्धिने धारो, मनवाणीतनुथी तजी हिंसा;
धरो अहिंसाआचारो............................आतम०

देवगुरुने धर्मनी श्रद्धा, समकितना ज विचारो;
मिथ्याबुद्धिप्रवृत्ति त्यजतां, टळता मनना विकारो. आतम० १

सेवाभक्ति ज्ञान उपासना, कर्मयोग व्यवहारोः
वैर विरोध न दिलमां रहेतां, प्रभुदर्शन अवधारो. आतम० २

मैत्रीप्रमोदने मध्यस्थ करुणा, भावना भावो चारो;
निर्दोष जळभोजनने लेतां, सात्विक वृत्ति सुधारो. आतम० ३

सात्विक ज्ञानने शुद्धज्ञाननां, शास्त्रो भणी मोह मारोः
सर्ववासना बीजो बाळो, अंतर्मां मन वाळो. आतम० ४

परने पीडा करो न करावो, अन्यजीवो न संहारो;
मनवचकायथी परजीवोने, दुःखवो नहि गुणधारो. आतम० ५

जूठुं चोरी मैथुन दारु-व्यभिचार मांस निवारो;
संयम तप सद्वर्तन धारो, टाळो कषाय प्रचारो. आतम० ६

धर्मी अधर्मी विधर्मी उपर, राग रोष खेद टाळो;
भावीभावे सुखदुःख प्रगटे, समभावे ते निहाळो. आतम० ७

उपसर्गो परिषह सहु संकटो, प्रगटे हिम्मत नहीं हारो;
सुवर्णवत् कसाओ विवेके, आतम गणी ल्यो प्यारो. आतम० ८

सर्वजीवो निज आतम सरखा, गणवा ए धर्म सारो;
दुर्गुण दुर्व्यसनो झट टाळो, शुद्धस्वरूप संभारो. आतम० ९

आगम वेद पुराण कुरानने, बाइबल सार उद्धारो;
दोषो टाळो सद्गुण धारो, दान दया उपकारो. आतम० १०

चावुं ने सहेवुं साचुं रहेवुं, काम जीती प्रभु भाळो;
बुद्धिसागर कहेणी रहेणी, सरखी सफल अवतारो. आतम० ११

चतुरजन !!! हितशिक्षा दिल धरशो.

आशावरी

चतुरनर !!! हितशिक्षा दिल धरशो, सतजनोनी संगति करतां;
नक्की पोते सुधरशो चतुर०
कुटुंबकोममा सपीने रहेशो, फाटफूट नहीं करशो;
धर्मने राज्यनो द्रोह न करशो, कार्य दयाना आदरशो चतुर० १
मातपिता वृद्ध गुरुजन सेवा, करता न पाछा पडशो,
दारुमासथकी दूर रहेशो, मतपथभेदे न लडशो चतुर० २
प्राणाते पण हिंसा न करशो, जूठु न स्वारे रगशो,
जूठु बोलो नहीं चोरी न करशो, व्यभिचार परिहरशो चतुर० ३
सात्विक आहार पानने लेवे, मनतनशुद्धि आचरशो;
निर्भय निर्दोष स्वातंत्र्यजीवन, धरीने विश्व विचरशो. चतुर० ४
परोपकारें अर्पाइ जाशो, पापकर्म परिहरशो;
निष्कामे पुण्यकार्यो करशो, भूलदोष परिहरशो चतुर० ५
मनवाणी कायथी दुष्कृत. निंदी पश्चात्तापने करशो,
मनवाणीतनुव्यवहार शुद्धि, करीने संयम धरशो चतुर० ६
प्रभु मेळववा तप जप दानने, नियम व्रत आचरशो,
सद्गुरुसेवा भक्तिमा स्वार्पण, करता प्रभुपद वरशो चतुर० ७
स्त्रीमळी शुद्धप्रेमथी वर्तो. पाप करता डरशो;
मनथी कोनु बूरु न इच्छो, जूठी साक्षी न भरशो चतुर० ८
दुर्गुण तजशो सद्गुण लेशो, न्यायनी तथी विचरशो;
दुष्ट व्यसनथी दूरे रहेशो, नीतिए पेटने भरशो चतुर० ९
दुःख संकट पडता प्राणाते, अनीति पाप न करशो,
विपत्तिमाहीं प्रभु न विसरशो, क्षण क्षण प्रभुने समरशो. चतुर० १०

अपराधी दुर्जन शत्रुनुं, शक्ति छतां भलुं करशो;
समताभावे आतमजीवन, धारी शिवपुर वरशो. चतुर० ११
प्रभुमहावीरनां शुभवचनामृत, हितशिक्षा आचरशो;
बुद्धिसागरप्रभुमयजीवन, प्रकट चिदानंद वरशो. चतुर० १२

॥ हमकुं जानत है कोउ ज्ञानी. ॥

आशावरी.

अवधू क्या मागुं गुणहीना. ए राग.

हमकुं जानत है कोउ ज्ञानी, हमकुं न जानत पापी अज्ञानी;
जानत नहि अभिमानी.... ....हमकुं०
हमकुं जानत अवधूत योगी, कोउ अनुभवतानी;
शुद्धसनेही त्यागी जानत, लेत है भक्त पिछानी. हमकुं० १
समभावीजन हमकुं जानत, जानत है कोउ ध्यानी;
हमकुं जो जाने उसके घरमें, झळके हमारी निशानी. हमकुं० २
हमकुं जो जानत उसके दिलमे, उभरात आनंदवाणी;
बुद्धिसागर समजे सो पावे, आनंदघनकी खानि. हमकुं० ३

आतम तुंछे ज्ञाननो दरियो.

आशावरी.

आतम तुंछे ज्ञाननो दरियो, अस्तिनास्तिगुणपर्यायजलधि;
ज्ञेयतरंगे भरियो.... ....आतम०
शक्ति अनंती समये समये, सत्ताए नित्य ठरियो;
त्रण्यकालमां एकस्वरूप तुं, नहिं मरियो अवतरियो. आतम० १
अनंत सुखसागर गुरुदेव तुं, गुरुकृपाए मळियो;
बुद्धिसागर ब्रह्मस्वरूपमां, ब्रह्मस्वरूपे भळियो. आतम० २

दीर्घायुषी अने आरोग्यवंत सुखी थवाना उपायो.

चालो सहियर मंगल गाइए, लइए प्रभुना नामोरे. ए राग.

दीर्घायुषी आरोग्य जीवन, शिक्षाओ सहु जाणोरे;
जाणी वर्तो तेह प्रमाणे, निश्चय एवो आणोरे. दीर्घा० १
कडकडीने भूख ज लागे, त्यारे नियमित खावुरे;
अतिशय खारु मीठु न खावु, शीतोदकथी न्हावुरे. दीर्घा० २
वीर्यबुंद नहि पडवा देवुं, कसरत करवी सारीरे;
हस्तकर्मआदि कुटेवो, पडवा न देवी नठारोरे दीर्घा० ३
दुग्धादिक सात्विकभोजनथी, तनुनुं पोषण कीजेरे;
भोजन करता शोक ने भीति, क्लेशादिक त्यजीजेरे दीर्घा० ४
तामस राजस भोजन त्यजवुं, हर्ष शोक वण रहेवुंरे;
पक्षर दिवसे करी उपवासज, मुखथी साचु कहेवुरे. दीर्घा० ५
हिंसा जूठुं चोरी कर्मो, त्यागी बनो संतोषीरे;
अधर्म्यमैथुन व्यभिचारादिक, त्यागो थाओ न रोषीरे. दीर्घा० ६
ताजीहवाने निर्मलपाणी, वस्त्रेथी तनु पोषोरे;
पापी खोटा धधा त्यागो, परधन स्हामु न जोशोरे. दीर्घा० ७
जुवानी तो दिवानी गणी, जाळववी चारित्रेरे;
दुष्टव्यसनने दुर्गुणथी तो, दूरे रहीए प्रीतेरे. दीर्घा० ८
देवगुरु ने सतनी सेवा, करीए रुडी रीतेरे,
अतिश्रम अतिखावु अतिनिद्रा, त्यजीए चोखे चित्तेरे. दीर्घा० ९
अनिद्राने अतिउपवासो अभक्ष्यभक्षण त्यागोरे;
अतिविहरवु ने अविहरवु, तजवो कामनो रागोरे. दीर्घा० १०
अतिशय हसवु रोवु त्यजवु, अति विचाराचारोरे;
ऋतुना अनुसारे वर्तन, खावु पीवु विहारोरे. दीर्घा० ११

अतिलुखु ठंडुं ने उन्हु. कडवुं सडेलुं न खावुंरे;
अतिशय थाक परिश्रम तजवो, ऋतुनियमे न्हावुंरे. दीर्घा० १२
हदनी वाहिर वेसवुं फरवुं, जागवुं बोलवुं त्यागोरे;
अतिवाचन अतिश्रवणने जोवुं. तेनो त्यजशो रागोरे. दीर्घा० १३
रात्रे वहेला उंघो व्हेला, निद्रा तजीने उठोरे;
क्रोध मान माया आसक्ति, कामने अतिशय कूटोरे. दीर्घा० १४
वात पित्तने कफ करनारां, भोजन पानने छंडोरे;
मदिरा मांसथी अळगा रहेवुं, करो न जूठ घमंडोरे. दीर्घा० १५
प्राणायामने आसन साधी, व्याधि न थावा दइएरे;
बाल्यकालथी एवाभ्यासे, निरोगी थै रहीएरे. दीर्घा० १६
वीशवर्षनी उम्मर सुधी, ब्रह्मचर्यने धरीएरे;
दुष्ट कुटेवोथी दूर रहोए, सुखीजीवन वरीएरे. दीर्घा० १७
बार वर्षनी उमर थातां, कोनी भेगा न सूवुंरे;
कुद्रती जीवनना नियमे, वर्त्ततां नहीं रोवुंरे. दीर्घा० १८
अतिचावी खोराकने खावो, जलपण पीवुं चावीरे;
प्रकृति साचववी ज्ञाने, आतम निर्भय भावीरे. दीर्घा० १९
वनस्पति आहारे जीववुं, अतिलोभी नहि थावुंरे;
शुद्ध हवा जलस्थाने रहेवुं, निषेध्यने नहि खावुंरे. दीर्घा० २०
वैरी विरोधी हाथे न खावुं, रात्रीभोजन छंडोरे;
करी परीक्षा खावुं केफी-वस्तु मोहने खंडोरे. दीर्घा० २१
जीववामाटे खावुं पीवुं, मूत्रनो वेग न रोकोरे;
विष्टानो पण वेग न रोको, वेग रोकतां रोगोरे. दीर्घा० २२
दातण सारी रीते करवुं, दिवसे निद्रा न लेवीरे;
अतिसुखियाने पराश्रयीनी, जिंदगी दासना जेवीरे. दीर्घा० २३
आतमज्ञानने प्राप्त करीने, मननो आधि टाळोरे;
कषाय दुर्गुण टळतां निश्चय, सुख शांतिने भाळोरे. दीर्घा० २४

अति उपाधि व्याधि हेतु, कथमथकीज निवारोरे;
वालक वालिकाओ जाणी, घरशो ए आचाररे. दीर्घा० २५
दीर्घायुपी आरोग्य जीवन—पचीशो ए गाइरे,
समजीने वर्तो नरनारी, पामो सुखनी वधाइरे. दीर्घा० २६
समज्या त्यारथी भूल सुधारी, वर्तशो नरने नारीरे,
बुद्धिसागरपवित्रजीवन, धर्मशिरामण सारीरे. दीर्घा० २७

महावीर आतम नाम छे जाणुं.

आशावरी.

महावीर आतम नाम छे जाणुं, योगिक नाम हजारो लाखो,
अर्थथकी सत्य मानुं महावीर०
निजगुणने निजमांही आकर्षे, माटे कृष्ण पिछानुं,
शुद्धस्वभावमां रमण कर्याथी, राम ते दिलमां आणुं. महावीर० १
महावीर केवलज्ञाने व्यापक, विष्णु सत्य वखाणुं;
ब्रह्मस्वरूपी माटे ब्रह्मा, दोष हरे हर भानुं. महावीर० २
रुद्र स्वरूपी मोह हण्याथी, आतमरुद्र सवायो.
ब्रह्मने चेतन अर्थथी महावीर, त्रिभुवननाथ सुहायो महावीर० ३
पूरण रहेमथी रहिम कहेवायो, अल्ला करीम कहायो;
बुद्धने ईश्वर महादेव तुंहि, नाम असंख्य लखायो. महावीर० ४
महावीर नाममां असंख्य नामो, सर्व भाषाना समाया,
अनेकभावे महावीर आतम—श्रद्धामेंमें भाव्या. महावीर० ५
अस्तिनास्ति सदसद्रूपे, महावीररूप जग जाण्युं;
सर्वजीवो छे महावीर घट घट, रंगु न आग्रह टाणुं. महावीर० ६
आतमसत्ताए महावीर ज, व्यक्तिए प्रगटे प्रमाणुं;
रागद्वेष हणे महावीर ज, रहे स्वरूप न छानुं. महावीर० ७

महावीर आतम उपशमभावे, क्षयोपशमथी जाणुं;
क्षायिकभावे जाणीने दिल, व्यक्त थवा भाव आणुं. महावीर० ८
सर्वजीवोने महावीररूपे, देखुं भावना भावुं;
महावीर महावीर जपतां ध्यातां, आनंद पूरण पावुं. महावीर० ९
अर्हन् सिद्धसूरिने वाचक, मुनिने महावीर धारुं;
अन्तर परमातम महावीर छे, क्षणक्षण दिल संभारुं. महावीर० १०
बाहिरथी अंतर् महावीरमां, उतरी परमवीर थावुं;
बुद्धिसागर आतममहावीर, आपोआप सुहावुं. महावीर० ११

आतम!!! शुद्धस्वदेशी थाशो.

आतम! शुद्धस्वदेशी थाशो, शुद्धातम महावीर स्वराज्यमां;
निर्भय थै सुख पाशो.................................आतम०
परमेश्वर महावीरप्रभुमां, लयलीन थै प्रभु थाशो;
सेवकस्वामी भाव विनाना, स्वतंत्रराज्यने पाशो. आतम० १
असंख्यप्रदेशी भारतदेशमां, पूर्णानन्दे सुहाशो;
पुद्गलपरदेशमांहि न जाशो, अनंतशक्ति कमाशो. आतम० २
दर्शनज्ञानचारित्र स्वदेशी, आतममांहि प्रकाशो;
अज्ञान रागने रोषने टाळे, शुद्धपणाने पाशो. आतम० ३
कर्मे अशुद्धि ने धर्मे शुद्धि, शुद्धोपयोगी थाशो;
मनवच कायथी हिंसा टाळी, दयागंगमां न्हाशो. आतम० ४
ज्ञाननुं भोजन खाओ खवाडो, समजल पीशो पाशो;
ध्यानसमाधिनी निद्रा लेशो, सहेशो ने सहु च्हाशो. आतम० ५
गुणस्थानक निःसरणि चढीने, मुक्तिमहेलमां जाशो;
आतम ते सम्राट् महावीर, थातां स्वतंत्र सुहाशो. आतम० ६

दुनियामा मोहराज्य तमासो, मुंझे खत्ता खाशो;
आतमराज्यमा ज्ञाने प्रवेशो, मोही थै पस्ताशो. आतम० ७
परमेश्वरमा मनने धारो, दुर्गुणव्यसन विनाशो,
सघळा सद्गुण घट प्रगटावो, कामम‍ां करशो न वासो. आतम० ८
सात्विकभोजन जळ वापरशो, भोगोथकी विरमाशो;
हिंसा जूठु चोरी मैथुन, त्याग करी शुद्ध थाशो आतम० ९
शुद्धस्वदेशी गुणपर्यायो, ओळखीने ज विकासो
देवगुरुने धर्मनो दिलमा, पूर्ण धरो विश्वासो. आतम० १०
अहिंसा सत्यसंयमतपजप, ज्ञानभक्तिए विलासो;
बुद्धिसागरशुद्धस्वदेशी, आपोआप प्रकाश्यो. आतम० ११

आतम! तुं नही जडनो भीखारी.

आशावरी.

आतम!!! तु नहीं जडनो भीखारी, शहेनशाह तु जगनो स्वामी,
तुज पदवी ले संभारी आतम०
दर्शन ज्ञानचारित्रने वीर्य ज, अनंतसुख भंडारी
अनंतसुखनो लेश नहीं कइ, निश्चय कर निर्धारी. आतम० १
सुख अनंतु छे निजरूपमा, परघर दुःख अपारी;
ममता अहंता जडमा करे केम? भ्रांतिथी दु.ख भारी आतम० २
जडवस्तुथी सुखदुःख कल्पना, करी निजरूप विसारी;
आतमना उपयोगे छे सुख, क्या करे जडनी यारी. आतम० ३
भीखनुं काम सकळरी नीचु, इन्द्रने चक्री भीखारी;
पुद्गलभीखथी तृप्ति न शांति, मोहे थाती खुवारी. आतम० ४
वर्णगंधरसस्पर्शनी भीखे, तृष्णाए दुःख भारी,
जडसंगने समता प्रगटे, दुःख रहे न लगारी आतम० ५

मागण पेठे माग म आतम ! ! ! मागणवृत्ति नठारी;
रत्ननुं मंदिर झुंपडी बेमां, समभावे सुखकयारी. आतम० ६
अहंममता आशारहित मुनि, अनंत सुख अधिकारी;
तनमनधनमूर्छा उतरतां, जीवंतां मुक्ति सारी. आतम० ७
महीजलअग्निवायुने नभथी, तुं मोटो निर्धारी;
ताहरी तोले कोइ न आवे, तनुदेवळ प्रभु भारी. आतम० ८
पुद्गलऐंठ अनंती वेळा, खाधी पीधी अपारी;
तेथी तृप्ति लेश थइ नहीं, समज समज सुखकारी. आतम० ९
अनंत ज्ञानानन्दनी ऋद्धि, प्रभुता गणीले प्यारी;
नामरूपनो मोह त्यजीदे, घटमां प्रभुता लें भाळी. आतम० १०
सर्वपुद्गलमां निःसंग रहेवुं, आतमरूप विचारी;
बुद्धिसागर आतमराजा, विश्वप्रभु वलिहारी. आतम० ११

कुर्बानी ने होम पशुवध संबंधी उपदेश.

ओधवजी सन्देशो कहेशो श्यामने. ॥

अल्लाने खावापीवानुं नहीं कशुं ?
नित्य निरंजन नूर छे अपरंपारजो;
पशु मार्याथी तेना नामे ते कदी,
खुश थतो नहि नाखुश नहि तलभारजो;
पक्षपात त्यागीने सत्य विचारशो.... ....१
अल्लाने पशुभक्षणनी इच्छा नथी,
खावुं होय तो स्वयंग्रहीने खायजो;
एवुं तो ममजाय नहीं मतपक्षमां,

पशुए शुं ? कीधो प्रभुनो अन्यायजो;
सत्यबुद्धिथी साचुं शुद्ध विचारजो ...२
पशुपंखीने प्रभुनानामे मारता,
प्रभुनानामे थतो घणो अन्यायजो;
प्रभु पण पोताना जेवो खातो गणो,
तेमा मननी इच्छा हुकम जणायजो,
जेवा पोते तेवा प्रभुने शुं ? गणो ३
प्रभुने माताने पशुओ खावा नहीं,
मास रक्तने भक्षे नहि कदि देवजो;
मासरक्तने खानारा देवो नहीं,
राक्षस पापीने खावानी टेवजो,
होमयज्ञमा पशुपंखी नहीं होमशो ४
माता मेलडी नामे पशुओ नहीं हणो,
देवना नामे मनुष्यना पाखड जो,
खावे पीवे जेवु ते प्रभुने धरे,
मनुष्यना कल्पित एवा बहु बडजो;
पशुना स्थाने याज्ञिको केम नहीं मरे ५
अज्ञ नथी परमेश्वर के पशुने हणे,
हणनाराना उपर करता रहेमजो,
पशुने मारे स्वर्ग न पोताने मळे,
अन्य मरे ने स्वर्ग मळे निज केमजो;
रागद्वेष निवारी सत्य विचारजो ६
रागरोष कामादियुत मन छे पशु,
एवा पशुनी करो कुर्बानी होमजो,
व्हेम करीने प्रभुना नामे नहीं हणो,

पशुपंखीनुं दुःखवशो नहि रोमजो; ७
मनवाणीने कायाथी हिंसा त्यजो....
दुर्गुण व्यसनोनी कुर्बानी सत्य छे,
मोहादिकपशुहोमे यज्ञ छे सत्य जो;
बुद्धिसागरधर्मरहस्य विचारशो.
दया दान उपकारनां करजो कृत्यजो;
सर्वविश्वना लोको सत्य विचारशो........ ....

तनुपर सत्यजनोइने धारो.

आशावरी.

तनुपर सत्यजनोइने धारो, समझ्यावण गाडरियाप्रवाहे;
टळे न मोहविकारो.... ....तनु.
आतमक्षेत्रमां दया कपासने, वावो करीने सुधारो;
धर्मगुणो प्रगटंतां भारी, समकितरुनो वधारो. तनु० १
चोवींशजिननी दानशीयल तप, भाव ए आज्ञा चारो;
छन्नु तांतणानी जनोइ, रत्नत्रयीत्रिक वाळो. तनु० २
देवगुरु आतम साक्षीए, बळवंत थावा धारो;
शुद्धोपयोगी बीजुं जीवन, भाव द्विजत्व विचारो. तनु० ३
ॐऽहंसोऽहंअर्हं मंत्रथी, मंत्री धरो आचारो;
मनवाणीकायने आतमशुद्धि,-करवी लक्ष्य ए धारो. तनु० ४
बहिरातम त्यजी अंतर आतम-जीवन धर्मने धारो;
ज्ञानानंदअमृतरस पीवो, परब्रह्म निज भाळो. तनु० ५
अज्ञानतमथी ज्ञान प्रकाशमां, आवी धर्म प्रचारो;
बुद्धिसागरब्रह्मस्वरूपी, घट घट आतम भाळो. तनु० ६

आत्मप्रेरित.

आशावरी.

आतम ! आतमप्रेरित सुणजे, परापश्यतीभासित प्रेरित;
करजे बीजु परिहरजे आतम०
मनवचकायनी गुप्ति करीने, अतरध्वनि साभळजे,
अतरमा प्रभुना पयगामो, प्रगटता मन धरजे. आतम० १
अवर् प्रगटित ज्ञानवेदान्तो, आगमो साचा फळशे,
शुद्धबुद्धिथी आतमशुद्धि, अनत आनंद मळशे. आतम० २
ध्यानसमाधि पछी आतममा, ज्ञान ते प्रगटी नीकळशे;
बुद्धिसागरपरमेश्वर दिल, ज्योतिर्मय झळहळशे. आतम० ३

आतम ! आतमधर्म छे त्हारो.

सोरठ

आतम ! आतमधर्म छे त्हारो, आतमधर्म प्रगट करवामा,
आतमशुद्धिने धारो आतम०
रागरोष काम अज्ञान टळता, प्रगटे ज्ञानआचारो,
समभावे सद्धर्ममा मुक्ति, दर्शनमोहने मारो. आतम० १
सर्वप्रकारे मोह टळे तो, आतमशुद्धि अपारो,
आतमशुद्धिमा मुक्ति समाइ, धर्म न निजथी न्यारो. आतम० २
धर्मना लाखो मतिभेदो छते, सशय खेद न धारो,
रागद्वेषने हिंसाटाळो, धर्म प्रगटशे सारो. आतम० ३
अहिंसा सयम तप साधो, करशो परउपकारो.
धर्मना मोहे धर्म न प्रगटे, धर्मनो मोह निवारो. आतम० ४
मननी मान्यता धर्म विचारो, करता असंख्यात वारो,
आत्मधर्म ते ज्ञानानन्द छे, प्रगटावो घट प्यारो. आतम० ५

आतम ज्ञानानन्द प्रगटता, करतां शांति अपारो;
सात्त्विक साधन धर्मथी न्यारो, आतमधर्म विचारो. आतम० ६
तर्कना वाद विवाद करंतां, आवे न धर्मनो आरो;
रागद्वेष टळ्यावण धर्मनां-शास्त्रो भणे नहीं पारो. आतम० ७
प्रथम दुर्गुण व्यसन निवारो, ममता अहंता टाळो;
सात्त्विक जल भोजन आहारो, पवित्र धरो आचारो. आतम० ८
एकदेशीयविचार निवारो, सर्वदेशी ल्यो विचारो;
सर्वजीवोने आतमसरखा, गणी धरो शुद्धप्यारो. आतम० ९
मनवचकायथी पाप निवारो, निष्काम पुण्याचारो;
आतम अनुभवज्ञान प्रगटशे, आनंद अपरंपारो. आतम० १०
प्रभुमहावीर गुरुकृपाए, घटमां थयो उजियारो;
बुद्धिसागरआतमधर्म छे, चिद्आनंद निर्धारो. आतम० ११

धर्मी थवाने लायक सद्गुण मेळवो.

ओधवजी सन्देशो कहेशो श्यामने. ए राग.

धर्मी थवाने लायक सद्गुण मेळवो,
सद्गुण सत्यक्रियाथी मुक्ति थायजो;
उत्साही बनशो पहेलां नरनारीओ,
उद्योगी प्रेमी बनतां दुःख जायजो;
प्रगतिजीवनमां उत्साहे आगळ धसो. १
खुशमीजाजे आयुष्य वहेवुं ज्ञानथी,
थतां पराजय कदि न तजवुं धैर्यजो;
खंतने टेकथकी आगळ धसता रहो,
संकट पडतां प्रगटावो दिलशौर्यजो;
कर्मथी पडतां पण दिलथी चढता रहो.... .... २

आतमना विश्वासी थै कार्यो करो,
भावीभावगणीने सहेशो दुःखजो;
प्रामाणिकता जाळवो तनधनभोगथी,
निष्कामी थै पामो शाश्वतसुखजो:
चडती पडतीमा समभावे प्रभुने भजो ३

शत्रुनु पण सारु चिंतवो ने करो,
अपराधीउपर करशो उपकारजो,
परोपकारो करता मृत्यु थाय तो,
सारामाटे गणी मरशो नरनारजो;
सारामाटे सर्व थतु मन मानजो ४

मनवाणीकायाथी कोइ जीवनी,
करो न हिंसा जूठ न बोलो लेशजो:
हळीमळीने सर्वसाथजीवन वहो,
स्वार्थने मोहे करो न कोथी कलेशजो,
सर्वजीवोने आत्मसरीखा मानजो ५

रोगादिक वखते पण आनंदी रहो,
दुःख पडे ते सुखनामाटे थायजो,
आसक्तिवण सर्वसंगो जाळवो,
प्रभुविश्वासे वर्तता दुःख जायजो,
ज्ञानी योगी भक्त बनो नरनारीओ ६

मनवाणीकायाथी पवित्रता धरो,
दयादानदमसयम पाळो सत्यजो;
क्षमा सरलता मार्दव ब्रह्मने धारशो,
चोरी ज्ञारी त्यजी करो शुभकृत्यजो;
दुर्गुण व्यसनने दुष्टाचारने त्यागजो ७

सद्गुरु संतथी प्रीति धारी वर्तजो,
सर्वजीवोनी सेवा करशो सत्यजो;
अहं अने ममतानी वृत्ति वारजो,
दुःखीओने सहाय करो शुभकृत्यजो;
कर्युं अने गुण पाम्यामां मौन ज रहो.... .... ८
आतमशुद्धि करवा तप संयम धरो,
परमार्थे अर्पाइ जाशो भव्यजो;
बुद्धिसागर धर्मी जीवन पामशो,
गुरुगमपामी करशो शुभ कर्तव्यजो;
सर्वदेशोधर्मीथावा हित शिख छे.... .... ९

हितशिक्षा.

ओधवजी सन्देशो कहेशो श्यामने. ए राग.

मिथ्या मति नास्तिकनो संग निवारजो,
दुर्जन शठनो धरो नहीं विश्वासजो;
हिंसक जूठा चोरथी चेती चालजो,
सम्यग् ज्ञानी संगति करशो खासजो;
प्रभुमहावीर आज्ञाए जग चालजो.... .... १
व्यभिचारी व्यसनीनी सोबत त्यागजो,
धर्मना द्वेषीजननो करो न संगजो;
धर्मना रागीजननी संगत धारशो,
मुनिसंगतथी वधशे धर्मनो रंगजो;
संघनी सेवामाटे अर्पाइ जशो.... ....२
स्वाधिकारे मर्द बनी कार्यो करो,
पाखंडी पासे नहीं करशो वासजो;

सत्य वदतां सत्याचरता मृत्युथी,
बीवु नहीं बनवु नहीं मूढना दासजो;
आतमशक्ति फोरवी जगमा जीवशो 3

निर्बळ कायर बीकणनु शु ? जीववु,
अज्ञाने जीवन ते पशु अवतारजो;
प्रभुमहावीरध्येय गणी जीवन बहो,
निर्बळने जीवननो नहि अधिकारजो;
धर्मार्थे मरवाथी पाछा नहीं पडो ४

पशुबळ सत्ताधारकथी बीवु नहीं,
धर्मीसंतनु करो नहि अपमानजो,
मातपितागुरुदेवनी भक्ति कीजीए,
सद्गुणीजननु सदा करो सन्मानजो;
गुणना रागे रीझो नरने नारीओ ५

जातिमात्रना मोहे मुक्ति दूर छे,
दभथकी दूर मुक्ति कोश हजारजो,
वीतरागता पाम्या वण मुक्ति नहीं,
धर्ममोहथी फूलो नहि तलभारजो.
सत्यतत्त्वने ज्ञानथकी ज विचारजो ६

नामरुपनो मोह तजी प्रभुपथमा,
आगळ चालो समताए नर नारजो,
बुद्धिसागरप्रभुमहावीरभक्तिथी,
पामो अविचळ आनद अपरपारजो,
गुणस्थानकनिःसरणीपर चढता रहो ७

श्रावक.

ए गुण वीरतणो न विसारु.

श्रावक होय ते समकित धारे, विवेके किरिया करतोरे;
अविरति देशविरति बे भेदे, स्वाधिकारने धरतोरे. श्रावक० १
देवगुरुने धर्मनी सेवा, भक्तिमां अर्पातोरे;
गुरुसाधु जोगवाइ छतां ते, वहोरावीने खातोरे. श्रावक० २
धर्मशास्त्र सुणतो गुरुपासे, अत्यंतश्रद्धाप्रेमेरे;
गुरुवंदन त्रण्यकाल करे जे, वर्ते साचा नियमेरे श्रावक० ३
पंचाचारने प्रेमे पाळे, देश विरतिने धारेरे;
बारव्रतो गुरुपासे ग्रहीने, रहे श्रावकव्यवहारेरे. श्रावक० ४
सातनयोथी षड् आवश्यक, समजीने आचरतोरे;
गाडरियानी रीतने त्यागे, धर्मार्थे तनु धरतोरे. श्रावक० ५
मुनिव्रतनी नित्य इच्छा राखे, शक्ति मळे मुनि थावेरे;
संघसकलनी सेवाभक्ति, करतां न संतोष लावेरे. श्रावक० ६
जंगमस्थावर तीरथयात्रा, भावने शक्तिए करतोरे;
धर्मने धर्मीना रक्षणमाटे, मरवाथी नहीं डरतोरे. श्रावक० ७
सर्वकार्य करतां परमेष्ठी-मंत्रने मनमां जपतोरे;
जूठी साक्षी पूरे न वधारे, जूठ अनर्थ न लपतोरे. श्रावक० ८
मनवाणी तनुशक्ति वधारे, प्रामाणिक व्यवहारेरे;
निश्चय अनुभवज्ञानने पामे, अडग रहे स्वाधिकारेरे. श्रावक० ९
द्रव्यक्षेत्रकालभावानुसारे-जैनोनी उन्नति माटेरे;
कर्तव्यो करतां जीवंतो, धर्म धरे शिरसाटेरे. श्रावक० १०
सीदंतानी स्हाय करे ने, धर्मीनुं सगपण धारेरे;
नीतिए धंधो करी कुटुंबनुं, पोषण करे व्यवहारेरे. श्रावक० ११

शुभ उपयोगे शुद्धोपयोगे, रही वर्ते आचारेरे;
बुद्धिसागरसघनी सेवा, करीने कर्म निवारेरे. श्रावक० १२

॥ आर्य अने अनार्य. ॥

ए गुण वीरतणो न विसारु. ए राग.

गुणकर्मोथी आर्य अनार्यना-, लक्षण जुजुवा जाणोरे;
मनवाणीकायथी आर्यपणाने, समजी आचारमा आणोरे. गुण० १
प्राण पडे पण न्याय न मूके, प्रामाणिकता न चूकेरे,
दानदयादमपत्रने फुके-परधन उपर थूकेरे. गुण. २
दुश्मन पण घेर अतिथि थैने, आवे करे सत्काररे;
स्वागतसेवामा बाकी न मूके, आर्यना सत्याचाररे. गुण० ३
सत्य सरलता शुद्ध प्रीतिथी-आर्यो जगमा सनूरारे,
हिंसाजूठुंकूडकपटमा, पापे अनार्यो छे पूरारे. गुण० ४
सज्जनता सभ्यता सहृदयता, होय नहीं व्यभिचारीरे;
देवगुरुधर्मश्रद्धाधारक, आर्यो धरे सत्यधारीरे. गुण० ५
दुर्जनता शठता लपटता, व्यभिचारी अनाचारीरे,
मानव मारीने हाथ न धूवे-पापाहार आचारीरे. गुण० ६
क्रोधी मानी लोभी पूरा, अनीतिस्वार्थमा पूरारे;
प्रत्यक्षराक्षस जेवा तमोगुणी, निर्दय लुचा क्रूरारे. गुण० ७
देव न माने धर्म न माने, एवा अनार्य मतीलारे;
मार्दवऋजु परपीडा करे नहीं, आर्यजनो छे रसीलारे. गुण० ८
पचेन्द्रियभोगे सुख माने, बहिरातमजडवादीरे;
पाप गणे नहीं हिंसा जूठमा, अनार्यो उन्मादीरे. गुण० ९
आतममा सत्य आनद माने, दुर्गुण व्यसनो टाळेरे,
आलोक परलोक धर्मने माने, सद्गुणमा मन वाळेरे. गुण० १०

लुच्चाइने स्वप्ने न धारे, अधर्म्ययुद्ध न करता रे;
निंदा मश्करी आळने त्यागे, आर्यपणाने धरतारे. गुण० ११
आर्यो अद्रोही अनार्यो छे द्रोही, आर्यो छे उपकारीरे;
नगुरा नगुणा दुष्ट अनार्यो, गुणीउपर अपकारीरे. गुण० १२
स्वतंत्र निर्भय शुद्ध प्रमाणिक, होय ते आर्य पिछानोरे;
प्रतिज्ञाभ्रष्ट पवित्र नहीं जे, तेह अनार्य प्रमाणोरे. गुण० १३
मातपितागुरुसंतना भक्तो, आर्यो छे गुणरागीरे;
मातपितागुरुसंतना द्वेषी, तेह अनार्यो अभागीरे. गुण० १४
ज्ञानी वैरागी ने त्यागी, आर्य एवां नरनारीरे;
अज्ञानी अतिकामी अनार्यो, अधर्मयुद्धाचारीरे. गुण० १५
च्हावुं सहेवुं सत्यने कहेवुं, जूल्म करे न लगाररे;
अपराधो उपर उपकारो, करता आर्य विचाररे. गुण० १६
स्वार्थे च्हावुं सहेवुं जाणे, जूल्मअनीतिनुं धामरे;
परमेश्वरने पण पीजाता, स्वार्थ न वण बीजुं कामरे. गुण० १७
समता न धारे तेह अनार्यो, करे शुं ? आतमशुद्धिरे;
ममतावारे समता धारे, आर्यपणानी बुद्धिरे. गुण० १८
जडऋद्धिमां मोही अनार्यो, आर्यो रहे निर्लेपरे;
जीवनमरणमां अनार्यो छे मोही, आर्यो न धारे चेपरे. गुण० १९
आर्यो परमार्थे अर्पाता, धरता शुद्धोपयोगरे;
मूढअनार्यो स्वार्थमां राता, धरता विषयनो भोगरे. गुण० २०
वेषक्रियाजातिअहंकारे, रहे अनार्यो रक्तरे;
सत्यक्रियागुणधारक आर्यो, बाहिरमां न आसक्तरे. गुण० २१
धर्मविचाराचारी आर्यो, तपसंयमगुणखाणरे;
पाखंडधारीजडनिर्दयजन, पापी अनार्य छे जाणरे. गुण० २२
प्रभुजीवनथी आर्यो जीवे, ज्ञानने चारित्र्यवंतरे;
जडजीवनथी अनार्यो जीवे, दुष्टविचारोना मंत्ररे. गुण० २३

धर्मीनी व्हारे आर्यो चढंता, धर्माथे त्यजे प्राणरे;
धर्मीने धिक्कारे अनार्यो, वैरी मूर्ख अजाणरे गुण० २४
ज्ञानयोगी कर्मयोगी ने भक्तो, वीतराग छे आर्यरे;
जन्मथी आर्य अनार्यपणुं नहीं, गुणथी छे आर्यत्व धार्यरे गुण०२५
मेसाणामा चोमासु करी, अष्योत्तरनी सालरे;
श्रावणपूर्णिमा दिवसरचना, करता मंगलमालरे. गुण० २६
आर्यपणाना सद्गुणकर्मो, धारो नरने नाररे,
बुद्धिसागरप्रभुपद पामो, वर्ते जयजयकाररे. गुण० २७

योगस्वरूप.

सतो देखीएरे परगट पुद्गल जाल तमासा.

योगना लक्षणोरे जाणी परमयोगीपद वरशो,
समज्यावण गाडरिया चाले, वर्ते योग न धरशो योगना० १
परमातमपद वरवामाटे, साधनधर्म व्यापारो;
समकितपूर्वकधर्मप्रवृत्ति, योगशब्द व्यवहारो. योगना० २
रागने रोषे बाह्यविषयमा, प्रगटे जे चित्तवृत्ति,
तेवी सर्वे चित्तनी वृत्ति, रोधे योगनी शक्ति योगना० ३
कर्मप्रकृति बंधन सघळा, तेथी मुक्त थवाने,
इहायोगनु बीज विचारो, शुद्धस्वरूप मळवाने. योगना० ४
आतम ते परमातम पोते, सत्ताए छे साचो,
प्रगट थवाना तेना कारण, योग छे तेमा राचो. योगना० ५
आतमने परमातम करवा, मनवचकायप्रवृत्ति,
व्यवहारे थाती ते जाणो, निमित्तयोगनी वृत्ति. योगना० ६
मनवाणीकायाथी पच–महाव्रतोनु धरवुं,
यमनियमादि आठ अगो, योगनु लक्षण वरवु. योगना० ७

तिरोभावनो आविर्भाव ज, उपादान छे योग;
शुद्धगुणो पर्यायो करवा, अंतरंग उपयोग. योगनां० ८
उपशम क्षयोपशमने क्षायिक–, भाव ते योग प्रमाणो;
कर्मवियोगे आतमगुणना, योगे योग ज जाणो. योगनां० ९
साकारप्रभुना ध्याने रहेवुं, योग सालंबन मोटो;
निराकारप्रभुना उपयोगे, कदि न आवे तोटो. योगनां० १०
असंख्यप्रदेशी आतमस्वरूपनुं, शुक्लध्यान जयकारी;
निरालंबनयोग ते मोटो, पामे शिवसुख भारी. योगनां० ११
मतिश्रुतज्ञानना उपयोगे जे, तत्त्वस्वरूप विचारे:
संप्रज्ञातसमाधि पामे, तेम सविकल्प ज धारे. योगनां० १२
स्थूल तथा सूक्ष्म ज बे भेदे, शुभादिक परिणामे;
क्षयोपशमी सविकल्प समाधि, असंख्यभेदने पामे. योग० १३
सिद्धादिक अवलंबनयोगे, आतमशुद्धि थाती;
आतमनुं परमातम थावुं, योगनी ए प्रख्याति. योग० १४
काल अनादिकर्मनी साथे, आतम छे परिणामी;
शुद्धभावमां आतम प्रणमे, योग छे आतमरामी. योग० १५
अनंत ज्ञानानन्दमयी छे, आतम शुद्धस्वभावे;
कर्म खरंतां ज्ञानानन्दनो–, व्यक्तियोग सुहावे. योग० १६
मनमां मोहनी वृत्ति प्रगटे, तेनो रोध जे करवो:
द्रव्यभावमनविरहित आतम, आवियोग ते धरवो. योग० १७
त्रण्यगुप्तिने पांचसमिति, उत्सर्गे अपवादे;
पंचाचार ते साधनयोग ज, पडो न वादविवादे. योग० १८
देवगुरुमुनिधर्मसंघनी, सेवाभक्तिप्रवृत्ति;
आस्रवनी निवृत्ति योग ज, नियमशौचनी रीति. योग० १९
नयव्यवहारथकी जे योग ज, असंख्यभेदे जाणो;
मनोवृत्ति शुभपरिणामादि–, भेदे असंख्य मानो. योग० २०

कर्मबंधथी मुक्त थवामां, असंख्य योग घटेना,
बंध विना नहीं मुक्तिनी सिद्धि, ज्ञानी एम वदता. योग० २१
प्रीतिभक्ति वचन असंगे, परमप्रभु दिल धरवा;
मनमां प्रगटता ज कषायो, उपयोगे परिहरवा. योग० २२
मनवचकायथकी ज अहिंसा, सत्यास्तेयने धारो,
ब्रह्मचर्य संतोषक्षमाथी, आतमने अजवाळो. योग० २३
मैत्रीमुदिता करुणाभावना, मध्यस्थभावना योगो,
शुभने शुद्ध उपयोगे रहेवु, भोग छता नहीं भोगो. योग० २४
अनासक्तिए सर्व साधो, जाळववा अधिकारे,
कर्मयोगी थं कार्यो करवा, तरे योगी ते तारे योग० २५
साधनक्षयोपशमशुभवृत्ति, प्रवृत्ति शुभयोगे,
असंख्ययोगो सापेक्षाए, सिद्धयोग उपयोगे योग० २६
क्षायिकभावे केवलज्ञानने, पामे योग ज पूरो
निरालंबनयोगे सिद्धि, कार्य नहींज अधूरो. योग० २७
सालंबनसाधन योगज छे, निरालंबन हेते,
औपचारथी सद्भवयोगने, पामो शुभसंकेते योग० २८
सर्वकषायनी दुष्टवृत्तियो, रोधवी योग ते सारो,
छंडो हिंसामय आचारो, धारो शुभ आचारो. योग० २९
दया सत्य ने ब्रह्मचर्यने, कंचनकामिनी त्यागे,
आत्मस्वरूपे परिणमता, सर्वसिद्धियो जागे योग० ३०
मुद्रा आसन प्राणायामथी, एकांते नहि सिद्धि,
मोक्षाशाए राजयोगथी, प्रगटे अनंत ऋद्धि. योग० ३१
राजनी आगळ हठनी किंमत, कोडी सरखी जाणो
आत्मज्ञानीने सापेक्षाए, हठ छे साधन मानो योग० ३२
सिद्धियोनी मानपूजानी, भोगाशा मुख त्यागे;
स्वाधिकारे साधन सघळां, मन रहेना वैरागे योग० ३३

ॐ अर्हं महावीरना मंत्रे, मंत्र योग छे मोटो;
परमेष्ठी जपतां ने ध्यातां, मोह रहे नहि खोटो. योग० ३४
पिंडस्थादिकचार ध्यानथी, आतमशुद्धि करवी;
साधनमांही मुंझावुं नहि, साध्यदशाने वरवी. योग० ३५
द्रव्यने भावसमाधि भेदो, अनेक छे एम जाणो;
रागने द्वेष नहीं त्यां समाधि, मुख्यभाव मन आणो. योग० ३६
दुर्गुणी व्यसनी कैंफीचीजो-,खानारा नहीं योगी;
सद्गुणी भक्तने ज्ञानी योगी, भोगेच्छाए भोगी. योग० ३७
षडावश्यक आदि साधन, पूजावंदनयोगो;
मोक्षयोग तेहेते साधन, अंतर धरी उपयोगो. योग० ३८
योग छत्रीशी मेसाणामां, रची स्वपर हितकारी;
बुद्धिसागर सद्गुरु योगे, सर्वयोग उपकारी. योग० ३९

शोकनिवारकभावना ग्रन्थ.

प्रणमी परमेश्वर विभु, प्रभु महावीर जिनंद;
शोक निवारक ग्रन्थनी, रचना करुं सुखकंद. १
त्रिशलाराणी जननीने, सिद्धारथ भूप तात;
बेउ स्वर्ग सिधावतां, पाम्या नंदि अशात. २
कुटुंब ज्ञातिने देशमां, रहियो शोक छवाइ;
प्रभु महावीर चित्तमां, भावदया खूब आइ. ३
नंदिवर्धन भाइने, तथा सर्वजनबोध;
दीधो वीरे ज्ञानथी, थयो शोकनो रोध. ४
शोकनिवारकबोधनो, भावे करुं प्रकाश;
चिंता शोकादिक टळे, रहे न चित्त उदास. ५

उत्सव रंग वधामणा ए राग

नंदिवर्धनभाइने, महावीर जणावे;
मातपिताना मृत्युथी, केम दिलगीरी लावे;
आतमनुं मृत्यु नथी. , , ,, ६

कर्मवशे सर्वजीवने, तनु मळतु ने जातु,
आयुटळे उठी चालवुं, साथे धर्मनुं भातु–शोक न करवो तुज घटे.७

चतुरशितिलक्षयोनिमा, चारगतिमाही जीवो;
जन्ममरण करे कर्मथी, बहु पाडता रीवो. शोक करे न शु नहींवळे.८

सुदर्शना समजी रहो, नंदिवर्धन भाइ,
न्यारो देहने आतमा, जूठी देह सगाइ. शोक० ९

देहने मात पिता गणे, देह पडतां शु ? रोवुं;
देह क्षणिक विनाशी छे, जडरुपे ते जोवुं. शोक० १०

देह अनंता धारीने, मूकी आतम आव्यो,
आतम मार्यों नहीं मरे, शोक तेनो शुं ? लावो. शोक० ११

कर्म छता अन्यदेहने, धरे कर्मने वेदे;
वेनीने एकनी दिलगीरी, करी शु रहो खेदे. शोक० १२

मातपितादिना आतमा, मर्या नहीं कदि मरशे।
चारित्रपामी सिद्ध थे, शिवपुरमाही ठरशे–शोककरोनहीं कोरनो.१३

मात पिताना आतमा, अन्यदेहमा ठाया,
वर्तमानतनुनाशथी, केम मनमा मुझाया. शोक० १४

नाटकीयानी पेठ ज्या, तनुवेष बदलवा,
कर्मवशे तनु बदलता, मिथ्याशोक न करवा. शोक० १५

ज्ञानीओ शोक करे नहीं, कर्म आतम जाणे,
मिथ्यामोह धरे नहीं, करे कर्तव्य' ज्ञाने शोक० १६

देहने आतम मानतां, मोहभीति प्रगटे;
आतमने भिन्न मानतां, शोक भीति विघटे. शोक० १७

वस्त्र जीरण तजी नव्यने, जेम धरवां तेम;
वस्त्रपरे तनु वदलतां, मोह धरवो केम ? शोक० १८

मातपितादिक गुण ग्रहो, धरो धर्मप्रवृत्ति;
मनुष्यभवनी मुसाफिरी, तजो हुंतुंवृत्ति. शोक० १९

जन्म्या तेने जाणवुं, देहने त्यजवानुं;
भूलो नहीं मनुभवविषे, धर्मने धरवानुं. शोक० २०

मोहपरिणामी आतमा, भवमांही भटके;
आतमपरिणामी आतमा, भवबंधथी छटके. शोक० २१

शोक करो नहीं रे तमे, जूठी जगनी माया;
स्वप्ननी बाजीसम बधु, पुद्गलपर्याया. शोक० २२

मरनारांने शुं रुवो ? रडनारां जवानां;
संयोग त्यां ज वियोग छे, मळयां जूदां थवानां. शोक० २३

बाजीगर बाजीसमो, बधो खेलछे खोटो;
रागने रोषने वारतां, थाय आतम मोटो. शोक० २४

तनुमां रह्योछतो देहथी, भिन्न आतम जाणो;
आतमनी पूर्णशुद्धिथी, मोक्ष सिद्धि प्रमाणो. शोक० २५

मुंझवुं शुं ? नामरूपमां, नामरूपे न पोते;
नामने रूपनो नाश छे, ब्रह्म अविनाशी ज्योते. शोक० २६

नामरूप थयां थाय छे, तेथी आतम न्यारो;
जड नहीं जाणे आत्मने, जडपर श्यो प्यारो. शोक० २७

न्यारुं ते आतमनुं नहीं, जडपुद्गल न्यारुं;
जडने सगां केम मानीए ? तेमां मारुं शुं त्हारुं. शोक० २८

देह सगाइ छे मोहथी, ज्ञाने आत्मसगाइ;
जेह सगाइ जाणे नहीं, तेनी शी छे सगाइ. शोक० २९

मोहने स्वार्थे सगाइथी, जगमा न वडाइ;
रोवु सगाने स्वार्थथी, नरी ए मूर्खताइ शोक० ३०

देहसंबंधे जे सगा, जडमोहे ते भूल्या;
आत्मसंबंधे जे सगा, निर्मोही अमूला शोक० ३१

देहसगा देह त्या सुधी, पछी सबध जूठा;
क्षणिकसबंधे मुझीने, अरे थाओ न वूठा. शोक० ३२

जन्म जरा ने मरण छे, त्रण्य देह अवस्था;
देहभावे नहीं परिणमो, थाओ ज्ञाने सुस्वस्था. शोक० ३३

जेवी सध्याने वीजळी, जळना परपोटा;
ससार सबंध तेहवा, क्षणनाशी खोटा. शोक० ३४

मनमा शोक न धारीए, वारीए मोहमाया;
मानवभवने न हारीए, चेतो चेतो भाया शोक० ३५

आतमना उपयोगथी, ध्यावो आतमराया;
आतम ते परमातमा, ज्ञानानन्द सुहाया शोक० ३६

वीजी देशी.

आ ससार असार छेजी, आतम धर्म छे सार;
कोइ न साथे आवतुंजी, रागने रोष निवाररे;
साधु आतमतत्त्व विचार, जगमा छे ए साररे. साधु० ३७
पुण्यपापकर्मो कर्याजी, परभव आवेरे साथ;
पुण्ये सुख पापोदयेजी, प्रगटे दुःखनो क्वाथरे. साधु० ३८
पुण्योदयथी धर्मनीजी, सामग्री मळे नेश,
पापोदयथी दुःखनीजी, सामग्री महाक्लेशरे. साधु० ३९

देव मनुष्यभव पुण्यथीजी, पापे नरकादिदुःख;
पापकर्म नहीं कीजीएजी, पुण्य धर्मथी सुखरे. साचुं० ४०

मोक्षाशा निश्चय करीजी, व्यवहारे पुण्यकर्म;
करीए आतम भावीएजी, प्रगटे आतमधर्मरे. साचुं० ४१

पुण्य पाप पुद्गलदशाजी, छाया तापसमान;
दर्शन ज्ञानानन्द छेजी, आतमधर्म प्रमाणरे. साचुं० ४२

जड पुद्गलथी भिन्नछेजी, आतम निश्चय थाय;
जडतनु न्यारो आतमाजी, समजे भ्रांति जायरे. साचुं० ४३

कर्मनो कर्ता आतमाजी, परपरिणामेरे थाय;
निजनो कर्ता आतमाजी, निजपरिणामे सुहायरे. साचुं० ४४

कर्मवियोगे मोक्षछेजी, मोक्षना हेतुरे सत्य;
दर्शनज्ञानचारित्रनांजी, द्रव्यने भावथी कृत्यरे. साचुं० ४५

देवगुरुने धर्मनीजी, श्रद्धा समकितयोग;
अनंतभवनी हेतुताजी, ग्रंथि थाय वियोगरे. साचुं० ४६

आठे कर्म ते जाणजोजी, द्रव्यकर्म निर्धार;
रागने द्वेष छे भावथीजी, तनु नोकर्म विचाररे. साचुं० ४७

भावकर्म टळतां टळेजी, द्रव्यकर्म नोकर्म;
सर्वकर्मना क्षयथकीजी, प्रगटे मुक्तिशर्मरे. साचुं० ४८

दुष्टवृत्तियो रोधतांजी, शुभवृत्ति व्यापार;
धर्मयोग प्रगटे दिलेजी, अहिंसा आचाररे. साचुं० ४९

दुःखी जीवो देखतांजी, करुणा प्रगटे अपार;
दयाधर्मकर्मो थतांजी, थाता पर उपकाररे. साचुं० ५०

हिंसावृत्ति न उपजेजी, प्रगटे तुर्त शमाय;
सत्यास्तेयने ब्रह्मथीजी, कर्म घणां रोकायरे. साचुं० ५१

संतोषे मन वर्ततुजी, विषयोमा नहीं राग,
प्रतिकूलमां नहीं द्वेषताजी, प्रगटे समने त्यागरे. साचुं० ५२

शत्रुपर नहि द्वेषताजी, क्षमा अने शुद्धबुद्धि,
देवगुरु आराधताजी, प्रगटे आतमशुद्धिरे. साचुं० ५३

आतमशुद्धिहेतुओजी, द्रव्यने भावथी जेह;
अवलंबे मोह ज टळेजी, देहछता वैदेहरे साचुं० ५४

आतमरुण जडतत्त्वनीजी, सहेजे ममता विलाय,
जडमा अहता नहि रहेजी, जड जडभावे रहायरे साचुं० ५५

आत्मोपयोगे परिणमेजी, आतम पामेरे मुक्ति,
माटे शोकादि त्यजीजी, आचरो धर्मप्रवृत्तिरे. साचुं० ५६

आतम उपयोगी थताजी, टळता मोहविचार,
ततुनो शोक रहे नहीजी, प्रगटे धैर्य अपाररे. साचुं० ५७

आतमना अज्ञानथीजी, वर्ते मोहनु जोर;
जडमा हु तु नहीं रहजी, रहे न कामनो दोररे. साचुं० ५८

रोइ रोइने मरी जताजी, पाछुं आवे न कोय;
आत्मस्वरूपने जाणताजी, साची शाति होयरे. साचुं० ५९

समजीने निश्चय करोजी, मनडु रागोरे शात,
धर्ममार्गपर चालताजी, रहे न मिथ्याभ्रातरे. साचुं० ६०

कर्मानुसारे जीवोजी, परभवमाहीरे जाय,
कर्मविपाको भोगवेजी, एवो वर्ते न्यायरे. साचुं० ६१

कर्मने आतम नेडनोजी, काल अनादिथी सग,
कर्मवियोग थता भलोजी, प्रगटे शुद्ध ज रगरे. साचुं० ६२

आतमज्ञानी न बांधतोजी, कर्म करे ने अकर्म;
आतमना उपयोगथीजी, निरासक्तिए धर्मरे साचुं० ६३

अज्ञानी निर्वल घणोजी, ज्ञानी महावलवंत;
कर्मयोगी ज्ञानी बनीजी, करतो कर्मनो अंतरे. साचुं० ६४

सर्वकार्य करतां थकांजी, सम्यग्ज्ञानी अकर्म;
अपुनर्बंधकपणुंजी, पामे आतमधर्मरे. साचुं० ६५

आतमधर्म छे आतममांजी, दर्शनज्ञानचरित्र;
वीर्यादिक छे कर्मनाजी, नाशे प्रगटे पवित्ररे. साचुं० ६६

आच्छादितगुण प्रगटताजी, कर्म टळे तत्काल;
सत्ताए गुण जे रह्याजी, आविर्भावे ते भालरे. साचुं० ६७

सत् ते व्यक्तपणे थतोजी, असत् न थावेरे व्यक्त;
सत्नो अभाव थतो नहींजी, असत् न प्रगटे शक्तरे. साचुं० ६८

आतमगुण पर्यायथीजी, सत्ताए सत् जाण;
चिदानंदमय आतमाजी, विणशे नहि ते प्रमाणरे. साचुं० ६९

मातपितादिक सर्वनाजी, आतमद्रव्य छे नित्य;
मुज तुज आतम नित्य छेजी, देहादिक छे अनित्यरे. साचुं० ७०

आतमाओ देहे रह्याजी, मरे नहीं त्रण्यकाल;
तेओनुं सगपण गणेजी, शोकतणी शी ? चालरे. साचुं० ७१

देहो तो वस्त्रो समांजी, कै आवे कै जाय;
तेओनुं सगपण नहींजी, सत्य समज ते भायरे. साचुं० ७२

देहोनीमांहे रह्याजी, निज आतमसम तेह;
आत्मदृष्टिथी देखतांजी, निर्मोही वैदेहरे. साचुं० ७३

भविकासिद्ध चक्रपद वंदो. ए राग.

समजी रहो शुद्ध आतम भावे, जड नहीं साथे आवे;
आतम एकलो आव्यो जावे, मुंझीश नहि मोह दावेरे;
आतम !!! आतम धर्मने धरजो, जडममता परिहरजोरे. आतम० ७४

साठ हजार तनुजो जेना, एकी वखते मरिया;
सगरचक्री मूर्छा पाम्यो, वैराग्य ज्ञानथी तरियारे   आतम० ७५
मरुदेवाए तनुजमोहे, शोके वर्षो गाळ्या;
निर्मोही थया त्यारे क्षणमा, मुक्तिपुरीमा म्हाल्यारे   आतम० ७६
रामनामोहे लक्ष्मण शोकी, राम मरता थइया;
कोइनी साथे कोइ गया नहीं, निज निज वाटे वहियारे आतम० ७७
रावण सरखो मोटो राजा, प्राण तजीने चाल्यो,
कर्मानुसारे परभव चाल्यो, भावी टळे नहीं टाळ्यारे. आतम० ७८
लाते जे धरणीने धुजावे, ते पण चाल्या चाले;
तेओना नाम देहनी यादी, रहीं नहीं आ कालेरे.   आतम० ७९
असंख्यकालना तीर्थंकरना, नाम रह्या नहीं आजे;
देहथकी कोइ अमर रह्या नहि, मोह शो ? करवो छाजेरे. आतम० ८०
आजसुधी नाम देहो अनंता, थइया गण्या न गणाये,
हर्ष शोक तेमा शु ? करवो, अभिनवरंगना न्यायेरे.   आतम० ८१
सगा सबंधीना नामने देहो, पोताना तेम जाणो,
निर्मोहभावे अज अविनाशी, अलख आतम दिल आणोरे. आ० ८२
कृष्ण वासुदेवनी राणीओ, त्राहि त्राहि पोकारी,
पण न उगारी शक्या तेओने, कर्मतणी गति न्यारीरे. आतम० ८३
कर्म शुभाशुभ बाजीगर सम, ईश्वर–,कर्म स्वभावे,
तेमा आतमभाव न धारो, रहेशो आत्मस्वभावेरे   भविका आतम
धर्मने धरजो. ८४

अग्निकुमारे द्वारिका बाळी, जलधिए उरमा घाली,
कोइ बचावी शक्युं नहीं तेने, कर्मप्रभुलीला न्यारीरे.   भ० ८५
कर्मथी बळियो आतम ईश्वर, आतमज्ञाने थावे,
कर्म अनंता क्षणमा टळता, चारित्रना शुद्धभावेरे   भ० ८६

चोपाइ.

आयुष्य प्रगटेने विणसाय, तेमां हर्ष न शोक न थाय;
आतमभावे थाय प्रसन्न, सर्व करे पण मुजमां मन. ८७
शरण माहरुं जे नरनार, करतां ते उतरे भवपार;
देह त्यजंतां करे न शोक, कदि न पाडे मोहे पोक. ८८
श्वासोच्छ्वासे मारुं ध्यान, करतां प्रगटे साचुं ज्ञान;
श्वासोच्छ्वासे मारो जाप, जपतां कोइ न लागे पाप. ८९
छेवट मृत्युकाले जेह, शरण करे मुज ते वैदेह;
अनंतभवनां कर्म विनाश, मुज शरणे मुक्ति छे खास. ९०
अज अविनाशी नित्य अनंत, काल अनादि पूर्ण महंत;
आतम ते परमेश्वर वीर, सत्ताए महावीर ज धीर. ९१
आतम महावीर शरणुं करे, मन निर्मल थै आतम ठरे;
षट्कारकं शुद्धां प्रणमाय, आतम ते परमातम थाय. ९२
आतमभावे जे हर्षाय, अठकर्मोथी बंध न पाय;
मरनारामां देखे तेह, अमर आतमा ते वैदेह. ९३
देहछतां वैदेह थाय, मुजभक्तोने काल न खाय;
लहे नहीं दुर्गतिमां वास, आयु जतां आनंदोल्लास. ९४
स्वाधिकारे करता कर्म, करे निर्जरा पामे धर्म;
स्वाधिकारे सहु व्यवहार, करता शिव पामे नरनार. ९५
देह मरे पण मरे न तेह, मृत्युकाले भीति न रेह;
निर्भय थैने छंडे प्राण, मुजभक्तो पामे शिवस्थान. ९६
मुज विश्वासी जे नरनार, पूरण माराउपर प्यार;
महापापी पण शिवपद पाय, छेवटकाले पण मुज ध्याय. ९७
सर्वजीवोना तारण हेत, तीर्थंकर मुजभव संकेत;
समजी वर्तो नरने नार, निर्लेपे करशो व्यवहार. ९८

मुजशरणे आव्या नरनार, सफळा तेना छे अवतार,
तेओ आतमशुद्धि पाय, ज्ञानी योगी भक्तो थाय. ९९
चारवर्णे आदि जनवर्ग, स्वस्वकर्म करता स्वर्ग,
पामे देह त्यजी सुख वेग, अन्यभवे नहि पामे क्लेश. १००
मुजमा मन राखी नरनार, वर्ते ते पामे भवपार;
तर्या न कोना तार्या जेह, मुजभक्तिथी तरता तेह. १०१
नंदिवर्धन आदि भव्य, समज्या पोतानु कर्तव्य;
शोक त्यजीने शांति लह्या, प्रभुने ज्ञानथकी संस्तव्या. १०२
परब्रह्म ईश्वर महावीर, सर्वदेवपूजित महावीर,
सर्वविश्वनो तारणहार, तीर्थंकर जिनवरअवतार. १०३
रही नहीं चिंता मन लेश, नाठो शोक घणो मन क्लेश,
पिता मात बे पांम्या स्वर्ग, त्याथी विदेहमा अपवर्ग. १०४
सर्वदेवदेवीशिरताज, तव आज्ञाए शरीश राज्य,
स्वाधिकारे करता कर्म, अकर्म उपयोगे छे शर्म. १०५
तुज उपदेशे नाठो भर्म, जाण्यो साचो आतमधर्म,
नभवत् आतम अक्रिययोग, सत्ताए प्रगट्यो उपयोग १०६
समकिती ज्ञानी निर्बंध, सम्यग्दृष्टि छे नहि अंध,
सापेक्षाए जाणे सत्य, तेना सघळा छे सद्कृत्य १०
तुजउपदेशे जाण्यो धर्म, नाठो एकांतदृष्टिभर्म;
अनंत शक्तिनाथ महान्, महावीर प्रगट्या भगवान्. १०८
तप जप संयम ज्ञान प्रचार, दया दान दम भक्ति उदार;
उपदेशीने विश्वोद्धार, करवा प्रगट्या छो निर्धार. १०९
वंदे पूजे स्तवे अपार, नमतो नंदि वार हजार;
आनंदी थै सत्कर्तव्य, करतो स्वाधिकारे भव्य. ११०

शोकनिवारकग्रन्थ ए, साचो रच्यो हितकार;
मरनारांनी पाछळे, भणे गणे सुखकार. १११
शोक मोह चिंता टळे, धर्मी बने नरनार;
बुद्धिसागरवीरनी, वाणी जगजयकार. ११२

" चेटकचोवीशी ग्रन्थ. "

चोपाइ.

दीक्षा लेती वखते श्री महावीरप्रभुए चेटकने आपेलो बोध.

चोपाइ.

सांभळ वैशालीराजन् ! ! ! पंडितशेखर तुं कृतपुण्य;
नीति न्याये करशो राज्य, फकीरसम अंतर् धर राज्य. १
दया दान दम वर्तन धरो, समजी सर्वे कर्मो करो;
राज्य करतां जातियत्न, करी कमाणी खाओ अन्न. २
सर्वलोकसुखकाजे राज्य-, करतां आतमनुं साम्राज्य;
फर्ज अदा कर साची सर्व, कदि न कर सत्तानो गर्व. ३
द्वेषीउपर राख न रोष, दुःखीजनने प्रेमे पोष;
शत्रुउपर धार न द्वेष, धर्म धरंता सहवा क्लेश. ४
क्षत्रियभूपति टेक न छंड, धर्मकर्ममां प्रेमे मंड;
राख न जूठो लेश घमंड, न्याय त्यां उपशम पामे बंड. ५
सद्वक्ताओ पासे राख, प्राण पडे पण जूठ न भाख;
दुष्टवृत्तियो मारी नाख, परधन गणजे जेवी राख. ६
परललनाने मात समान, गणजे कर संतोनुं मान;
करजे प्रतिदिन नवनवुं ज्ञान, निजदेशे वर्तावो आण. ७
सर्वदेशमां दया पळाव, होमातां पशुओने बचाव;
अनाथरोगीलोक बचाव, मानवभव शुभ लेजे ल्हाव. ८

प्रजाजनोनी सांभळ रीव, थावु नहि सत् करतां क्लीव;
आत्मसमा सहु गणजे जीव, कर्तव्यो करवा ज सदीव. ९

दुष्टव्यसनने राज्यनी बहार्, काढी सुखी कर नरनार;
संकट पडियानी कर व्हार, दुर्गुणथी छे राज्यनी हार. १०

माटे राज्यथी दुर्गुण दूर, करजे भूपतिगणमा शूर,
सद्गुणराज्ये सुख भरपूर, आंतर बाहिर झळके नूर ११

निर्बळथी नहि राज्य कराय, सबळानु छे राज्य सदाय;
राज्य खरु ज्यां साचो न्याय, अन्यायी राजा न गणाय. १२

निरासक्तिए राज्य जो थाय, प्रजाभूपति प्रगति पाय,
दंडादिक करता घट न्याय, राखी वर्तो भूप सदाय. १३

प्रजा एज छे भूपस्वरूप, माने वर्ते पडे न धूप;
एवो राजा विश्वअनुप, पडे नहीं क्यारे भवकूप. १४

सर्वजीवोनी कर संभाळ, दुष्टने दंडी सज्जन पाळ;
प्रजावर्गनो थै रखवाळ, मोहप्रमादीजीवन टाळ. १५

विषयोना जे बने गुलाम, तेनी साची टळती हाम,
दुर्बुद्धिए ठरे न ठाम, जन्मी सारा करे शुं ? काम. १६

दयायकी दिलडु उभराय, देवगुरुना प्रणमे पाय;
प्राणाते व्यभिचारी न थाय, भूपतिपदने योग्य गणाय. १७

अहिंसाए राज्य सुहाय, हिंसाथी राज्यो विणसाय;
अहिंसाए प्रगटे धर्म, हिंसाए प्रगटे ज अधर्म. १८

हिंसकपापीनो उद्धार, करे जीवपर बहु उपकार;
परमार्थे मरवा तैयार, सत्यभूप ते जगजयकार १९

मनवाणीकायापर राज्य, पवित्र थै करतो साम्राज्य;
टाळे दुर्गुण उपर दाझ, पामे स्वर्ग ने शिवनुं राज्य. २०

जेह शमावे प्रेमे द्वेष, प्रजावर्गना टाळे क्लेश;
नीति सद्गुणीराजा वेश, करे कर्तव्यो जेह हमेश. २१
महामारी दुष्काले जेह, प्रजावर्गने रक्षे तेह;
सर्वप्रकारे करे उपाय, धर्मी राजा सत्य गणाय. २२
सर्वप्रकारे नीति जाण, धर्मार्थे निज अर्पे प्राण;
देशराज्यमां चलवे आण, दोष हणी थावे गुणवान्. २३
चेटकराजन् ! तुं गुणखाण, तुं मारी पाळे छे आण;
अंतर्मां मारुं कर ध्यान, तेथी तुं पामीश निर्वाण. २४
अष्टादशराजामां मुख्य, प्रगटावो आतमनुं सौख्य;
आतमना उपयोगे रहो, बाह्यराज्य नीतिए वहो. २५
जैनधर्मने जग फेलाव, बाह्यांतरशक्तियो पाव;
चेटकने प्रतिबोधी प्रभु, वीर थया त्यागी शुभ विभु. २६
प्रभुवाणी सुणतां नरनार, भूपति पामे धर्म अपार;
बुद्धिसागरप्रभु उपदेश, सुणी वर्ततां रहे न क्लेश. २७

॥ संघ कर्तव्य ग्रन्थ. ॥

चोपाइ.

ईश्वर महावीरदेव जिनेश, संघधर्मनो दे उपदेश;
सत्कर्मोने ज्ञाने संघ, अनंततीर्थस्वरूपीरंग. १
जंगमतीर्थ छे संघ महान्, तेने सहु प्रणमे भगवान्;
सर्वधर्मनी खाण छे संघ, स्वर्गंगाथी मोटी गंग. २
साधु साध्वीत्यागीवर्ग, श्राद्धश्राविका गृहस्थवर्ग;
चातुर्वर्णी संघ गणाय, पूजे प्रणमे मुक्ति थाय. ३
तीर्थंकरसम संघ गणाय, संघविषे सहु तीर्थ समाय;
संघनी सेवा प्रभुनी सेव, संघ छतां सहु वर्ते देव. ४

सघनी भक्ति ते प्रभुभक्ति, संघसमी नहि कोइ शक्ति;
जैनधर्मने माने संघ, वर्ते आतम वाधे रंग. ५
संघाज्ञामा म्हारी आण, समाइ जाती योग्य ज जाण,
क्षेत्र अने कालानुसार, करे संघ ते मुजसम धार. ६
जे काळे जे क्षेत्रे धर्म, जीवे तेना जे जे कर्म,
संघाज्ञाए तेह कराय, मुज आज्ञा ते जाणो न्याय. ७
संघनी वृद्धिना जे कर्म, तेमा सर्वे समाया धर्म;
सघनी सेवाभक्तिमाह्य, तपजप संयम सर्वे समाय. ८
सर्वसंघनी करतां स्हाय, अनंत पुण्यने निर्जर थाय,
विरतिविण पण संघनी सेव करता भक्तो थावे देव. ९
संघनी रक्षावृद्धिहेत, सेवाभक्तिनो संकेत,
भक्तोमा मुज देखे जेह, भक्ति करता भक्त ज जेह. १०
संघमा मुजमा भक्ति अभेद. करे न भीति लज्जा खेद;
एवा भक्तोमा भगवान्, आतमव्यक्त थतो गुणवान्. ११
भावे संघनी सेवा थाय, अनंतभवना पातिक जाय,
संघनो शत्रु निन्दक थाय, पाप करी दुर्गतिने पाय. १२
सर्वनयोनो जाण जे संघ, प्रगटावे सहु शक्ति अभंग,
सर्वप्रकारे विद्या जाण, मुज श्रद्धा भक्ति गुणखाण १३
मुज शासन चलवे ते संघ, तेना सवळा कर्मना रंग,
अवळुं पण सवळुं प्रणमाय, मारा संघनी सद्गति थाय. १४
सम्यग्दृष्टिवाळो संघ, सवळा तेना दृष्टितरंग, १५
मिथ्याशास्त्रो पण प्रणमाय, सवळीदृष्टिए गुणदाय;
एवा संघनी सेवा थाय, न्यारे पाप अनंता जाय १६
कदि न देखो संघना दोष, दोष छता संघ ज निर्दोष;
संघ करे जे जे फेरफार, मुज आज्ञा त्या छे निर्धार. १७

आचारो तो फरता रहे, देशकाल अनुसारे वहे;
तत्त्वोमां कदि थाय न फेर, ज्यां अज्ञान ज त्यां अंधेर. १८

काल अनादि तत्त्व न फेर, आचारोमां थाय ज फेर;
देशकाल शक्ति अनुसार, परिवर्तन पामे आचार. १९

संघ सकलमां नयसापेक्ष–,मतभेदे नहीं करवो क्लेश;
समभावे सहु संघनी मुक्ति, मुज भजतां नहीं मोहनी रीति. २०

विद्याज्ञानने शक्तिप्रचार, करतो संघ वधे जयकार;
दुर्गुण दुष्टव्यसनथी दूर, रहेतां संघ वधे भरपूर. २१

खमे खमावे मांहोमांह्य, मनमां वैर न राखे क्यांय;
संघार्थे आपे निज भोग, नीतिथी शक्तिनो योग. २२

उदार गंभीर न्यायाचार, अरस्परसमां प्रेम अपार;
शक्ति छतां सहतो अपराध, संघ सदा एवो आराध्य. २३

परोपकारे निशदिन रक्त, सेवाभक्तिमां आसक्त;
उपदेश्यां मुज समजे तत्त्व, सत्त्वगुणीने उत्तम सत्त्व. २४

निज निज अधिकारे गुण कर्म, करवामां समजंतो धर्म;
एवा संघनुं धार्युं थाय, आध्यात्मिकप्रगति ते पाय. २५

अन्यजीवोपर राखे रहेम, धर्मीजीवोपर धारे प्रेम;
संपीने वर्ते थै एक, सर्वकार्यमां होय विवेक. २६

अधर्म्ययुद्धने त्यजता छेक, देवगुरुसेवानो टेक;
पशुपक्षीनी हिंसा त्याग, साधर्मिक उपर बहुराग. २७

जूल्मी दुष्टनी स्हामा थाय, रहेवा दे नहि जूल्म अन्याय;
करे अतिथि बहु सन्मान, दिल प्रगटावे आतमज्ञान. २८

सर्वलोकने देतां ज्ञान, करे नहीं दिल्मां अभिमान;
आतम ते परमातम जाण, सात्त्विकबुद्धि नहि अज्ञान. २९

सघनी चढतीपाटे सर्व--, अर्पण करता धरे न गर्व,
निष्कामे सहु करता काज, बाह्यांतर धारे साम्राज्य. ३०
धारे मनवचकायनी शुद्धि, रागने रोषनी टाळे अशुद्धि;
दारुमांसथी रहेतो दूर, अपराधीपर थाय न क्रूर. ३१
धर्मार्थे अर्पाइ जाय, धर्मीने खबराबी खाय;
अधर्मीने पण आपे बोध, दुष्टवृत्तिनो करे निरोध. ३२
संघनी सेवाभक्ति हेत, प्राणादिक स्वार्पणसकेत;
अरस्परसमां मुजसम प्रेम, राखे धारे योगने क्षेम ३३
देवगुरुने धर्मने संघ, चारेमां स्वार्पणनारंग;
दुष्टव्यसननी होय न टेव, स्वाधिकारे करतो सेव. ३४
दोषो टाळे सद्गुण धरे, धर्मीनो रागी थै फरे,
सर्वसंघनो विश्वप्रचार, करवामां तन अर्पे सार. ३५
गुणस्थानक निज निजअधिकार, गुण कर्मो करवा तैयार;
समय विचारी वर्ते जेह, एवो संघ बने गुणगेह. ३६
प्रगतिकर आचारविचार, प्रामाणिक चलवे व्यवहार,
सर्वखडना सघनी सेव, करता आतम थाने देव. ३७
ज्ञानक्रियाथी थाने मुक्त, मारा जाणे जेओ भक्त;
अन्यधर्मीपर धरे न द्वेष, आपे नहीं अन्योने क्लेश. ३८
हिंसा जूठ ने चोरी त्याग, ब्रह्मचर्य धारे वैराग्य.
सर्वजीवोपर मुजसम प्रीत, दोषोने हरवानी रीत. ३९
देशकालशक्ति अनुसार, गृहस्थ त्यागीना आचार,
दोषो उपर धरे न रोष, अदरमां धारे संतोष ४०
आतमशुद्धि राखे लक्ष, क्रिया सर्वकर्मोमां दक्ष,
एवा संघनी चढती थाय, सर्वलोकने आपे सहाय ४१

कर्मोदयथी थाय न दीन, आतमने भावे मन जिन;
करे न अन्यनुं बूरु लेश, प्रीते वैर शमावे वेश. ४२

साधर्मिक खवरावी खाय, साधर्मिकने आपे स्हाय;
उच्च नीचनो धरे न भेद, टाळे ज्ञाने सहुना खेद. ४३

लघुता दृढता श्रद्धा प्रेम, आतमज्ञानने दिलमां रहेम;
चारित्र्ये ज्यां जीवन जाय, एवा संघनी चडती थाय. ४४

भूख्यांने खवरावे जेह, तरश्यांने जल धारे स्नेह;
करे न शक्ति दुरुपयोग, रोगीओना टाळे रोग. ४५

दुष्टरीवाजो करवा दूर, शक्ति फोरवी थातो शूर;
करे न निन्दा परनी लगार, कोइपर नहि देतो आळ. ४६

शुभक्षेत्रोने पोषे नित्य, दोष त्यजी गुण धारे चित्त;
हिंसादिकने काढे दूर, एवो संघ जगत मश्हूर. ४७

दानशीयलतपभावप्रवृत्ति, नीति महाजन गुणनी रीति;
नवतत्त्वोनुं धारे ज्ञान, संघनी भक्ति दिल भगवान. ४८

इत्यादिक कोटी गुणवान्, संघ छे प्रत्यक्ष ज भगवान्;
प्रभुसाकार खरो छे संघ, तेनो क्षणक्षण करशो संग. ४९

संघ छे प्रत्यक्ष ज गुणवंत, साकारी ईश्वर छे संत;
तेनी सेवाथी प्रगटाय, घट घट आत्मप्रभु सुखदाय. ५०

संघथी मोटुं नहीं छे कोय, सर्वधर्मोनी खाण ज जोय;
संघने सर्व महाउपमान, पूजो वंदो भवी गुणजाण. ५१

एक तरफ सहुधर्मो होय, एक तरफ संघसेवा जोय;
बन्ने सरखां जाणो भव्य, संघनी सेवा छे कर्तव्य. ५२

साधर्मिकभक्तिनां कर्म, एक तरफ छे सघळा धर्म;
बेउ सरखा जाणो दक्ष, धरो संघसेवानो पक्ष. ५३

अविरति जे सम्यग्दृष्टि, मार्गानुसारी मुज पक्षी;
देशथी विरति स्वाधिकार, गृहस्थ संघ सदा जयकार. ५४
त्यागीसर्वविरतिनो संघ, मोक्षार्थी साचरु गुणरंग,
गृहस्थत्यागीसंघ सुहाय, सेवंता सद्गुरुगतिथाय. ५५
गृहस्थ त्यागी गुरु बे भेद, सर्वथी त्यागी मोटा भेद,
त्यागीओना प्रणमे पाय, गृहस्थ, गुरुभक्ते शिव पाय. ५६
कार्यप्रसंगे संघ ज मळे, धार्मिककार्यो सर्वे करे;
संघादिकप्रगतिने काज, चलने भूपपरे साम्राज्य. ५७
रसे संघना सर्वे अंग, बनी प्रभावक राखे रंग,
निष्कामी निर्मोही थाय, त्यारे संघ न दोषो पाय ५८
अरस्परसनो करे न द्रोह, ज्ञाने शमावे क्रोध ने मोह;
एकबीजाने सारु स्हाय, प्राण पडे पण द्रोह न थाय. ५९
लघुताथी प्रभुता छे वेश, मुजभक्तिए समावे क्लेश,
मुजमाटे सहु संकट सहे, सघनी सेवामा गहगहे. ६०
मुज पाछळ मुनिसंघ महान, गृहस्थसंघनो जे छे प्राण,
मुजसम सूरिनुं साम्राज्य, धर्मप्रवर्तक साचा राज. ६१
द्रव्यक्षेत्रकालानुसार, धर्मार्थे जे जे व्यवहार;
परिवर्तन जे करता तेह, तेमा मुज आज्ञा गुणगेह. ६२
संघ चतुर्विध भेगो थाय, मुजसम तेना कार्य सुहाय,
कलियुगमा तेना अनुसार, संघवृद्धि करतो जयकार. ६३
द्रव्यक्षेत्रने काळ सुभाव, स्वाधिकारे चढती दाव,
द्रव्यादिक जाणे व्यवहार, मारो संघ सदा जयकार. ६४
सर्वदेशवर्ती जे संघ, तेनी यात्रार्थी गुणरंग,
प्रतिवर्ष यात्रा एकवार, जगमस्थावरतीर्थेनी सार. ६५

यथाशक्ति सहु संघनी भक्ति, करतां आत्मिक प्रगटे शक्ति;
मुजवर गुरुपर श्रद्धा प्रेम, धारे पामे योगने क्षेम. ६६

वैधर्मी प्रतिपक्षी जेह, तेओ उपर राखे स्नेह;
दुष्ट दावथी नहि वंचाय, दुष्टोनुं नहि बूरुं च्हाय. ६७

संप शक्तिथी जीवे संघ, सद्गुण नीतिबलथी अभंग;
संघनां हानिकर जे कर्म, तेमां कोइ काले न धर्म. ६८

धर्म छतां पण तेह अधर्म, संघनी पडतीकारककर्म;
देशकाल अनुसारे संघ, वधे कर्म त्यां धर्मनुं मर्म. ६९

संघ वधे एवां जे कर्म, सर्वकालमां तेथी धर्म;
समजे ते मुज आणा जाण, बाकी बीजा छे ज अजाण. ७०

संघनी संख्यावृद्धि उपाय, फेरफारमां धर्म सदाय;
एवुं जाणे संघ ते शक्त, मुजपर प्रेमी संघ ते भक्त. ७१

संघमां ज्ञानी आगेवान, संघनी प्रगतिकारक जाण;
अज्ञानी ज्यां थाय प्रधान, संघनी पडती त्यारे मान. ७२

अनेक संकटमांथी पसार, ज्ञानी संघ थतो निर्धार;
सर्व संघने आपो ज्ञान, धार्मिकव्यवहारिक गुणखाण. ७३

गृहस्थ संघ तरीके चार,-वर्णो गुणकर्मानुसार;
वर्ती मुज आज्ञा अनुसार, धर्म करे शिव पामे सार. ७४

मुजमां मन राखी नरनार, वर्ते वर्णादिक व्यवहार;
रागद्वेषनो टाळे संग, मुक्ति पामे आतमरंग. ७५

आतमधर्म छे उपशमभाव, क्षयोपशमने क्षायिकभाव;
आतम ते परमातम थाय, ए छे संघनुं ध्येय सदाय. ७६

सर्वकर्मने करवां दूर, वरवुं अनंत आतमनूर;
आतमशुद्धि करवी बेश, साध्य ए दृष्टि प्रवृत्ति हमेश. ७७

साधर्मिकने देखे हर्ष, प्रगटे दर्शननो उत्कर्ष;
अरस्परस मळता बहु व्हाल, थाय परस्पर बहु संभाळ. ७८
अरस्परस्‌ना दुःखमा भाग, लेवामाटे प्रगटे राग;
अरस्परस अर्पाइ जाय, मेळविषे नहि भेद जराय. ७९
संघनी सेवा ते निजसेव, मानी वर्ते तजे कुटेव;
संघाज्ञा वहेवामा मरे, संघ ते हु मानी सहु करे ८०
नामरूपनो करे न मोह, करे न साधर्मिकनो द्रोह;
साधर्मिक जो आवे घेर, स्वागतभक्ति करे बहुल्हेर ८१
करे न संघतणुं अपमान, श्रमणादिकनुं धारे मान,
मुज उपदेश सुणावी खाय, अन्योने धर्मी ज बनाय ८२
रागद्वेष हणवा अभ्यास, करतो धारे मुज विश्वास;
शरण करी मुज मुक्ति पाय, साधु दर्शन करीने खाय ८३
एवा संघनी चढती थाय, सत्कर्मोथी हार न खाय;
निर्भय स्वतंत्रता साम्राज्य, पामे बाह्यांतरनु राज्य. ८४
व्यष्टिसमष्टिशक्ति अनंत, संघ सदा साकार भदंत,
संघना नाशथकी महापाप, प्रगटे दुःख संकट संताप. ८५
कदि न लेवी संघनी हाय, संघनो शत्रु दुर्गति जाय;
त्यागीसंघनी शुभ आशीष्, मळता चडती विश्वावीश ८६
संघनो नाश ते मारो नाश, जाणी संघना थाओ दास;
संघ छे सागरवत् गंभीर, सेवी स्वयं बनो महावीर. ८७
जे काले जे योग्य जणाय, करवा लायक जेह गणाय;
अतिशयज्ञानी सम्मत थाय, परिवर्तन रीवाजो पाय. ८८
चक्री इन्द्रादिक पण जेह, संघना दाससमा छे तेह;
तेओ सारे संघनी सेव, संघ उना ज छता छे देव. ८९

विद्यादिकगुण प्रकटे बेश, त्यारे संघमां रहे न क्लेश;
मारी पाछळ संघ सदाय, वर्ततो रहेशे शिवदाय. ९०

मारी आज्ञा धारे जेह, संघ न पडती पामे तेह;
मारी आज्ञावर्तन टळे, शक्ति विनानो संघ ते मरे. ९१

मारी श्रद्धाथी सहु शक्ति, सत्ताए ते थावे व्यक्त;
मुज शरणे जे आवे भव्य, सफळां तेनां छे कर्तव्य. ९२

रागद्वेष जिते ते जिन, तेनो अनुयायी ते जैन;
मोहादिक हणवा व्यापार, जैनधर्म ते जगजयकार. ९३

जैनधर्मधारक छे संघ, साधक आंतर आतमरंग;
सर्वजीवोनी शुद्धिहेत, जैनधर्मनो छे संकेत. ९४

अष्टयोगसाधनव्यापार, जैनधर्म जाणो ते सार;
श्रावक साधुधर्म उदार, गुणस्थानक आरोहणधार. ९५

असंख्यदृष्टियो ज समाय, सापेक्षे मुज धर्ममां न्याय;
मतपंथदर्शनधर्मना भेद, समाय छे मुजधर्ममां वेद. ९६

चतुर्वर्ण मुज संघ उदार, असंख्यदृष्टिधर्माधार;
असंख्यदृष्टिमां सापेक्ष, जैनो कदाग्रही नहि लेश. ९७

मिथ्याबुद्धि मोहनो त्याग, आत्मानंद प्रकट वैराग्य;
मैत्री मुदिता करुणाभाव, माध्यस्थे मननो सद्भाव. ९८

ज्ञानभक्तिने कर्मनो योग, भोग छतां अंतरमां योग;
कर्मोदय सुख दुःख वेदाय, पण अंतर्मां नहि लेपाय. ९९

कर्मविपाके थाय न मोह, सर्वजीवपर रहे न द्रोह;
सर्वजीवो निज आत्मसमान, मानी वर्ते संघ सुजाण. १००

ज्ञान दयाथी विश्वोद्धार, करवामां बहुला उपकार;
मनुष्यजातमां भेद न लेश, टाळे सर्वजीवोना क्लेश. १०१

समजावे जगने मुज सत्य, परोपकारी करतो कृत्य;
मनुष्यजाति करवा उद्धार, शम दम संयम तप गुणधार. १०२

एवा संघनी प्रगति थाय, निजभूलो टाळी हर्षाय,
करे गुलामीना नहि कर्म, जैनसंघनुं ए छे मर्म. १०३

राजप्रजादिकपर उपकार, करवा स्वार्पण करतो सार;
असत् कदाग्रह त्यागे जेह, निजभोगे थावे वैदेह. १०४

द्रव्यक्षेत्रकालानुसार, उत्सर्ग अपवाद विचार;
संघना कृत्यो करतो संघ, पामी श्रद्धा टेक उमंग. १०५

दर्शन ज्ञानचरण तप धार, संघ चतुर्विध जगजयकार;
स्वाधिकारे सहु कर्तव्य, यथाशक्ति व्यक्ति मन्तव्य. १०६

कर्तव्यो ए संघना कह्या, ज्ञानीओए दिलमा वह्या,
समजी वर्तो नरने नार, पामो शांति पुष्टि अपार. १०७

प्रभुमहावीर साचो बोध, आदरता छे मोहनो रोध;
बुद्धिसागर मंगलमाल, सकलसंघमां जयजयकार. १०८

प्रजासमाजकर्तव्य ग्रन्थ.

चोपाइ

परमेश्वरमहावीरजिनेश, श्रेणिकने देवे उपदेश,
प्रजासमाजनु सत्यस्वरूप, प्रजा न पामे जाणी धूप १

भूपति गुरुजन वृद्धनुं मान, मातपितानु बहु सन्मान,
अरस्परसपर बहु उपकार, सेवा भक्ति कर्म विचार. २

अरस्परसना रक्षणहेत, तनधनसत्ताना संकेत;
धर्मार्थे वपरातु सर्व, गारव पामे थाय न गर्व. ३

राज्यतणां सहु अंगनुं ज्ञान, जाणे परमार्थे दे प्राण;
न्याये धननो संचय करे, राष्ट्रनी नीतिथी संचरे. ४

अन्यप्रजानां दुःखविनाश, करवामां पामे उल्लास;
जुल्म अनीति सहे न लेश, करे न मांहोमांहे क्लेश. ५

मांहोमांहे करे न फूट, चोरी झारी करे न लूंट;
राजानी आज्ञा स्वीकार, करता फर्जे नरने नार. ६

करे न राजानुं अपमान, न्यायीदंड सहीले जाण;
पक्षपातथी रहेता दूर, प्रगटावे आतमनुं नूर. ७

प्रजासंघनुं धारे एक, त्यागे नहि नीतिने टेक;
राज्योन्नति कर्मो करनार, धरी व्यवस्था जीवे सार. ८

दुहा.

प्रगटावी सहु शक्तियो, वापरे धर्मने हेत;
शक्तिविनानुं जीववुं, धणी विनानुं खेत; ९

दया सत्यने दमथकी, दानथी चडती थाय;
न्याय संपने ज्ञानथी, प्रजासंघ सुख पाय. १०

अन्यप्रजाओने गणे, निज आतमसम जेह;
गुरु श्रद्धाप्रीतिथकी, प्रजा बने गुणगेह. ११

दुर्गुण दोषो टाळती, करे धर्मनां काज;
दुष्टव्यसनथी वेगळी, लहे प्रजा साम्राज्य. १२

करे न हिंसा मोहथी, धरे न पापाचार;
सदाचारथी उन्नति, पामे नरने नार. १३

द्रव्य क्षेत्रने कालथी—, भावथी योग्य जे कृत्य;
स्वाधिकारे जे करे, पामे प्रगति सत्य. १४

आजीविकासाधनो, स्वाधिकारे जेह;
धारे धर्मार्थे सकळ, प्रजा ज जीने तेह. १५
ज्ञानने सेवा भक्तिथी, प्रजोन्नति वर्ताय;
नास्तिकमूढप्रजा कदि, सात्विक शक्ति न पाय १६

चोपाई

जैनधर्म आराधन करे, यथाशक्तिथी प्रगति वरे;
आतमशुद्धि माटे धर्म–,कर्मनुं धारे ढिलमा मर्म. १७
सर्वकलाशिक्षणनु ज्ञान, पामे धर्मिप्रजा गुणवान,
मुज आज्ञाए धारे धर्म, टाळे मोहनी आदि कर्म. १८
दुष्टोथी नहि पामे हार, बळकळधर्म्म धरी आचार;
वर्ते सर्व प्रकारे दक्ष, आतमशुद्धि धारे लक्ष. १९
वर्ते आतमना उपयोग, भोगविषे अतर्मा योग;
आसक्ति वण प्रभुपद पाय, प्रजाजीवन निर्मळ वर्ताय. २०
त्यागी संतनी प्रेमे सेव, सत्ताए सहु आतम देव;
मानी वर्ती चढती पाय, पडतीथी दूरे थै जाय. २१
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यने शूद्र, निजगुण कर्मे थाय न रुद्र;
निजगुण कर्मो करता रहे, लोको प्रजात्वशक्ति लहे. २२
सर्वविश्व मानवनो साथ, आतमशुद्धि भक्ति सनाथ,
पशुपखीमा आतमबुद्धि, धारी प्रजा ज पामे शुद्धि. २३
आतमशुद्धिमाटे राज्य, आतमशुद्धिमाटे काज;
एवु लक्ष्य न ज्या भूलाय, प्रजोन्नति सहु माते थाय. २४
सद्गुणमाटे भूपने राज्य, सद्गुणमाटे सर्वे काज,
प्रजा समजती एवु जेह,–तेनो बळवत राष्ट्रसुदेह. २५

हिंसा जूठने चोरी त्याग, लागे नहि व्यभिचारनो डाग;
धर्मार्थे अर्पे धन प्राण, बने प्रजा एवी गुणखाण. २६

दुष्टप्रजाथी नहि वंचाय, धर्म्ययुद्धथी विजयी थाय;
जीवंती शक्तियो सर्व, प्राप्त करे नहीं धारे गर्व. २७

चारवर्ण गुणकर्मो ज्यांय, व्यक्तभावथी वर्ते त्यांय;
प्रजासंघनो थाय न नाश, पामे जो मारो विश्वास. २८

प्रजासंघ गुण कर्मे जोय, गुणकर्मो वण बल नहि होय;
जैनप्रजामां चारे वर्ण, वर्ते नहीं तो पामे मर्ण. २९

अन्यप्रजाओ साथे प्रेम, राखे धारे योगने क्षेम;
मनवचकायथकी बलवान्, प्रजासंघ जीवे जग जाण. ३०

राज्यने राजाने धिक्कार, देतां चढती नहीं लगार;
राजादिकनो करतां नाश, प्रजासंघनी पडती खास. ३१

राज्यभूमिनो द्रोह जो थाय, राजप्रजा पडतीने पाय;
सत्यन्यायथी राज्य गणाय, पक्षपातथी पडती थाय. ३२

दयादान दमपरोपकार, क्षमाविवेकने शौर्य उदार;
वृत्ति तप संयम शुभप्रेम, वर्ते त्यां छे योगने क्षेम. ३३

प्रजा प्रवृत्तिशीलप्रधान, पण निवृत्ति लक्ष्यमां जाण;
चातुर्वर्ण प्रजानो संघ, पामे आनंदज्ञानतरंग. ३४

गुणकर्मोथी वर्ण गणाय, चारेवर्णी प्रजा सुहाय;
स्वाधिकारे गुणने कर्म, धारी पाये माहारो धर्म. ३५

निर्लेपी विवेकी प्रजाय, कर्म करे ने प्रभुपद पाय;
आतमशुद्धि करती रहे, पूर्णशुद्धिमुक्तिपद वहे. ३६

आतमना उपयोगे सर्व–, कर्म करंतां वर्ते धर्म;
आतम उपयोगे नहि बंध, प्रजा न थावे क्यारे अंध. ३७

कर्म करे पण होय अकर्म, अखंड उपयोगे ते धर्म;
अहममत्वनी वृत्ति टळे, प्रजासत्र सुजज्योते मळे. ३८

दर्शनज्ञानचरणनो योग, भोग छता नहीं बने भोग;
विषयोमाही नहि मुझाय, प्रजासत्र, प्रभुरूप सुहाय. ३९

चारप्रकारे सत्र अखंड, वर्ते मोहनु टाळे बंड;
प्रभु आज्ञाए शुद्धि पाय, आपोआप प्रभु थै जाय ४०

स्वाधिकारे हिंसा त्याग, स्वाधिकारे वर वैराग्य,
स्वाधिकारे धारे रहेम, स्वाधिकारे योगने नेम ४१

सर्वजीवोपर वर्ते रहेम, प्रजा सुकर्मी पामे क्षेम,
आतमसम जीवोपर दृष्टि, प्रजा एहवी स्वर्गनी सृष्टि ४२

व्यक्ति समष्टिनु स्वातंत्र्य, तेना साचा सर्वे मंत्र,
आचारो प्रगटे ज्या वेश, प्रजा एहवी लहे न क्लेश ४३

वर्णाश्रमभेदे नहि क्लेश, धर्मभेदथी युद्ध न लेश,
धर्मविभेदे टळे न संप, प्रजा लहे ते चढती जंप ४४

एक बीजाने प्रेमे चहे, शत्रुना अपराधो सहे,
एकात्मासम थैने रहे, प्रजा एहवी सुखने लहे ४५

देशभेदथी धरे न भेद, चामडीरंगे धरे न खेद,
धर्मनी श्रद्धा धारे वेश, टाळे कुसप कजिया क्लेश ४६

आत्मस्वरूपे देखे सर्व, जीवोने नहि धारे गर्व,
भूख्याने खवरावी खाय, तरस्याओने पाणी पाय. ४७

निराश्रितनी ले संभाळ, क्रोध करे नहि दे नहि गाळ,
रोगीओने औषधदान, सर्वोनु धारे सन्मान ४८

सत्तावननुं नहि अभिमान, आतमज्ञानी निरभिमान,
प्रेमाळु नरनारीवर्ग, मनमा प्रगटावे छे स्वर्ग. ४९

सापेक्षाए सर्वविचार, आचारो धरती हुशियार;
सर्वव्यवस्थाथी वर्ताय, प्रजा एहवी चडती पाय. ५०

दुःखीओने आपे स्हाय, अन्याये लक्ष्मी नहि च्हाय;
मैत्रीप्रमोदने करुणाभाव, मध्यस्थे धारे सद्भाव. ५१

विषयोमां मुंझाती नहीं, प्रजा पुष्टिने पामे सही;
आतमवादविषे मश्गुल, जडप्रवादथी रहेती दूर. ५२

सापेक्षाए सर्वे धर्म, जाणे सापेक्षाए कर्म;
सापेक्षाए दर्शनपन्थ, जाणी वहेती आतमपन्थ. ५३

अल्पदोषने धर्म महान, करे कार्य एवुं हित जाण;
धूम्रावृत अग्निनी जेम, सदोष सर्व प्रवृत्ति तेम. ५४

करे प्रवृत्ति फर्जथी जन, शुद्धातममां राखे मन;
प्रजा एहवी ज्ञानी ज्यांय, शांतिसुखनिवृत्ति त्यांय. ५५

जीवे आतमशुद्धिहेत, सापेक्षाए सहु संकेत;
अनेकांत विचाराचार, माने निश्चयने व्यवहार. ५६

माने असंख्ययोगे मुक्ति, असंख्यनयसापेक्षे युक्ति;
जाणे ज्ञानी प्रजा गणाय, घट घट परमातम परखाय. ५७

आतम ते परमातमसिद्ध, मोह टळ्याथी व्यक्तप्रसिद्ध;
बाह्यराज्य साधन ते माट, साधे भूप प्रजा शिरसाट. ५८

बाह्यराज्य, साधन छे जाण, ब्रह्मराज्य साध्य ज छे मान;
आत्मराज्यमां जीव्युं जाय, बाह्यराज्यमां शांति थाय. ६०

सापेक्षे ज्यां एवुं ज्ञान, पक्षापक्षी न ताणाताण;
अंतर्मां वर्ते समभाव, कार्य करे निर्लेपस्वभाव. ६१

प्रजा भली एवी ज्यां होय, राजा पण त्यां सारो जोय;
प्रजासंघनुं प्रगटे जोर, मोहराजनो थाय न शोर. ६२

प्रजा भली मुज बोधे थाय, मुज बोधे वर्ते दुःख जाय;
चाले मुज आज्ञा अनुसार, प्रजाभूप शुद्धि निर्धार. ६३

भूप प्रजामा वर्ते ऐक्य, प्रामाणिक वर्तननी टेक;
अरसपरस उपकारी थाय, आतम ऐक्ये विश्व सुहाय. ६४

योग्य सलाहे वर्ते वेश, देश जात धर्म नहि क्लेश;
सद्गुणा मुजने देखे भव्य, तेना सफला छे कर्तव्य ६५

प्रजावर्ग एवो ज्या होय, परमातम त्या जागतो जोय;
झळके रुडी मारी ज्योत, प्रजाजीवन प्रगटे उद्योत. ६६

दारुआदि व्यसन निषेध, मतभेदोथी थाय न खेद,
हिंसायज्ञतणो न प्रचार, तेह प्रजामा शाति अपार ६७

मारु शरण करी जे रहे, मुजजापे जीवन जे वहे;
अटल धरे मारो विश्वास, तेह प्रजानी चडती खास. ६८

मारी शक्ति अपरंपार, कोइ न पामे मारो पार,
मुजरूपे थै मुजने भजे, सत्यप्रजा मुजपदने सजे. ६९

दुर्गुण दोष त्या पडती थाय, निजनी भूलो नहि समजाय;
सद्गुण त्या प्रगति छे खास, पामे पूरण मुज विश्वास. ७०

नामरूपमा मोह न थाय, स्वाधिकारे कार्य कराय;
आनंदे दिलसर उभराय, भक्तप्रजा मुजरूपने पाय. ७१

व्यष्टि समष्टि आतमवीर, जाणी थावे योगी धीर,
अवगुण टाळी गुणने ग्रहे, भव्यप्रजा मुज पदने लहे. ७२

निंदा लवरी विकथा तजे, जेना तेना सद्गुण भजे;
दोष कर्यानी मागे माफ, मनने राखे सारु साफ. ७३

राज्यतणी सहु नीति जाण, करे न राजानु अपमान;
दुष्ट अधर्मी भूपने दूर, काढी पामे शातिपूर. ७४

लांच न लेवे देवे कोय, राज्य कायदा पाळे सोय;
न्यायथकी जीविकावृत्ति, शुभ उपयोगे वाळे शक्ति. ७५

भव्यप्रजा एवी ज्यां होय, आनंद शांति पामे सोय;
प्रजा स्वच्छंदी पापी थाय, दुःख अशांति त्यां उभराय. ७६

धर्मकर्मथी अळगी जाय, नास्तिक पाप करी हर्षाय;
साधु संतना स्हामा थाय, देशप्रजा तममां अथडाय. ७७

देवगुरुने धर्मनो प्यार, पुण्य धर्म रुडा आचार;
प्रजा भूपमां वर्ते त्यांय, दैवीसंकट दुःख न त्यांय. ७८

केफी त्यागे सर्व पदार्थ, समजे शास्त्रोना भावार्थ;
झघडा टंटा धर्मविवाद, टाळे अंतर्ना विषवाद. ७९

रजस्तमोगुणवृत्ति कर्म, तेथी न्यारो आतमधर्म;
मोहनी आदि कर्म विनाश, करवा अंतर्मां अभ्यास. ८०

ज्ञानी भव्य प्रजा ज्यां एम, वर्ते त्यां छे योगने क्षेम;
हुंतु अंतर्थी नहि होय, कर्म करे व्यवहारे जोय. ८१

आसक्तिवण कार्यो करे, शुद्धातम निजपदने वरे;
सर्वातम निजसम देखाय, प्रजोन्नति स्वर्गीय सुहाय. ८२

आतम ते परमातम थाय, आत्ममहावीर व्यक्त जणाय;
वर्ते आध्यात्मिक साम्राज्य, स्वातंत्र्ये वर्ते ज समाज. ८३

दुष्ट कायदा रहे न त्यांय, प्रजासंघ, नीतिमय ज्यांय;
प्रजा सरीखा कायदा दंड, ज्यां त्यां वर्ते पिंड ब्रह्मांड. ८४

कर्म प्रमाणे सुख दुःख थाय, शुभाशुभ ए कर्मनो न्याय;
कर्मथकी चाले संसार, प्रजा भूप सर्वे व्यवहार. ८५

उपयोगे नहि कर्मनो बंध, थाय न क्यारे क्यांये अंध;
आतमज्ञानी अग्नि समान, कार्य करे निर्लेपी जाण. ८६

सर्ववर्ण ने त्यागी ज्यांय, आतमज्ञानी प्रगटे त्यांय;
भूप प्रजामा आनंद ल्हेर, थाय न काळाकर्मनो केर. ८७

नामरूपनो मोह न ज्याय, प्रभुसमा सहु लोको त्याय,
आतमज्ञाननुं शिक्षण पाय, सात्विकभव्यप्रजा प्रगटाय. ८८

आतम ज्ञानविना अंधेर, प्रजाभूपराज्योमा झेर;
आतमज्ञानी लोको ज्याय, सुखीजीवन वर्ते त्याय. ८९

हिंसा चोरी युद्ध न क्याय, प्रजासर्वमा शांति त्याय;
दुष्टव्यसननो नहीं प्रचार, प्रजा न कोथी पामे हार. ९०

राजाज्ञाए प्रजाप्रवृत्ति, प्रजाभूपमा धर्मनी नीति;
एकात्मासम वर्ते दोय, भक्ति ज्ञान प्रगट त्या जोय. ९१

कषायवृत्ति शीघ्र शमाय, दोषो टाळवा सत्त्त उपाय,
एकागी एवी ज्या प्रजा य, स्वर्गीयप्रगति प्रगटाय. ९२

भूप प्रजामा ऐक्यनो भाव, दुष्टोनो चाले नहीं दाव;
प्रबलशत्रुओ हारी जाय, रवियी तम वेगे विणशाय. ९३

धर्मीओपर आवे धाड, तोपण नासे ते तत्काल;
दया सत्यने आतमभाव, प्रगटे सारा बने बनाव. ९४

प्रभुमा मन राखी नरनार, चढती पामता निर्धार,
कर्मबंध नहीं पामे भव्य, अधिकारे करता कर्तव्य ९५

शुद्धातम उपयोगी होय, नभवत् निर्लेपी ते जोय,
काळने जीति थाय अकाल, जैनो पामे मंगलमाल, ९६

गृहस्थ त्यागी ब्रह्मस्वरूप–, जाणी थावे ब्रह्मस्वरूप,
प्रारब्धे व्यवहार ज थाय, जीवन्मुक्तदशाने पाय ९७

एक बीजाने ठगे न लोक, पाडे नहीं पापोनी पोक;
एक बीजाना साराहेत, जीवनना वर्ते संकेत. ९८

सुखदुःखे धारे समभाव, ज्ञानानन्दनो लेता ल्हाव;
विश्वमनुष्यो एवा थाय, कायदाबंधनमुक्त सुहाय. ९९

आत्मिक स्वतंत्रता प्रगटाय, भव्य प्रजा मुज पदने पाय;
मारामां तेमां नहीं भेद, वर्ते ज्ञानानन्द अभेद. १००

स्वाधिकारे प्राप्त जे कर्म, करवामां नहि होय अधर्म;
उत्सर्गे अपवादे जाण, स्वाधिकारे कर्म प्रमाण. १०१

जाणे एवुं प्रजा समाज, वर्ते त्यां आत्मिकसाम्राज्य;
दोष अल्पने धर्म महान्, पूर्णशुद्धिथी छे निर्वाण. १०२

कर्मातीतपणाने पाय, आयुःप्रांते सिद्ध सुहाय;
केइक भव्यो स्वर्गे जाय, केइक मानवभवने पाय. १०३

पुण्ये शांति तुष्टि थाय, द्रव्य भावथी पुष्टि पाय;
पापना पन्थो टळता जाय, मुज भक्तो मुज सरखा थाय. १०४

क्षेत्रने काळादिक अनुसार, प्रजासंघना सहु व्यवहार;
जाणी वर्ते नरनेनार, पामे परमानंद निर्धार. १०५

जैनधर्म एवो मुज जाण, प्रजासंघकर्तव्य प्रमाण;
सापेक्षाए धर्मने जाण, निज अधिकारे वर्त !! सुजाण. १०६

श्रेणिक !!! तुजने प्रजासमाज—, कर्तव्ये समजाव्युं राज्य;
त्यागीनुं आतममां राज्य, भूपोना पण ते महाराज. १०७

तुं त्हारा अधिकारे चाल !!! शुद्धातमनुं धारो व्हाल;
भव्यप्रजाकर्तव्य जणाव, आर्यपणाना लेवा ल्हाव. १०८

श्रेणिकने दीधो उपदेश, प्रजा भूपने हर्ष विशेष;
प्रभुने प्रेमे लागे पाय, क्षण क्षण प्रभु समरी सुख पाय. १०९

प्रभु महावीर साचो बोध, आचरता झट मोहनो रोध;
परमानंद प्रगट थै जाय, आनंदमंगल घट उभराय. ११०

मेसाणामा रचियो ग्रन्थ, भव्यो !! वळजो मुक्तिपंथ;
बुद्धिसागरमंगलमाल, पामो परमानंद विशाल. १११

प्रभु महावीर.

मायामा मनडुं मोह्युं रे जागीने जो तु ए राग.

प्रभु महावीर जग आधारारे, प्यारामा प्यारा,
मुज जीवनडो जयकारारे, जगतारण हारा ॥

प्रभु त्हारे शरणे आव्यो, मुज अतरमा तु भाव्यो,
तुजरूपे हु रंगायोरे प्यारामा० १

तुज आतमप्रीति जागी, तुजमाहि लगनी लागी,
शुद्धानमरंगनो रागीरे प्यारामा० २

अज्ञाई गयो तुज देखी, मायानी प्रीत उवेखी,
तुज परमप्रभुता पेखीरे. प्यारामा० ३

तुज स्वरूपमय थै ध्यावु, पूरीभक्तिए गावु,
तुजवण बीजु नहि च्हावुरे. प्यारामा० ४

चिदानदरस रसियो, अतर्मा व्यक्त उल्लसियो,
बुद्धिसागर दिल वसियोरे. प्यारामा० ५

प्रभुमहावीरनी दीवाळी स्तवन.

चेतनजी चेतो कोइना दुनियामां त्हारुं. ए राग.

परमेश्वरमहावीर त्हारी छे सत्य दिवाळी;
देखी प्रगटी आतममांहि लालीरे. परमेश्वर.

ज्ञानने दर्शनचारित्रऋद्धि, अनंत अनंत उजवाळी;
परमातम परब्रह्म सनूरा, शक्ति अनंत अजवाळीरे. परमेश्वर०

जन्म मरण आधि व्याधि उपाधि, तेथी रहित जयकारी;
शुद्धोपयोगे जोयुं अंतरमां, आनंददीवाळी भाळीरे. परमेश्वर०

ॐ ह्रीँ अर्हँ महावीर जपतां, वीर बन्यो सुखकारी;
बुद्धिसागर तत्त्वमसि प्रभु, सोऽहं सदा उपकारीरे. परमेश्वर० ॥

